मसारिफ़े जंग का बंदोबस्त था, इसलिये अब के मौसम में क़ुरैश का जो कारवाने तिजारत शाम को रवाना हुआ तो मक्का की तमाम आबादी ने जिसके पास जो रक़म थी कुल की कुल दे दी, न सिर्फ़ मर्द बल्कि औरतें जो कारोबारे तिजारत में बहुत कम हिस्सा लेती थीं उनका भी एक एक फ़र्द उसमें शरीक था, क़ाफ़िला अभी शाम से रवाना नहीं हुआ था कि हज़रमी के क़त्ल का इत्तिफ़ाक़िया वाक़िआ पेश आ गया, जिसने क़ुरैश की आतिशे ग़ज़ब को और भी भड़का दिया, इसी अस्ना में यह ख़बर मक्का मुअज़्ज़मा में फैल गई कि मुसलमान क़ाफ़िला लूटने को आ रहे हैं, क़ुरैश के ग़ैज़ व ग़ज़ब का बादल बड़े ज़ोर व शोर से उठा और तमाम अरब पर छा गया।[1]

आंहज़रत सल्ल० को इन हालात की इत्तिला हुई तो आप सल्ल० ने सहाबा रज़िअल्लाहु अन्हुम को जमा किया और वाक़िआ का इज़हारा फ़रमाया।[2] हज़रत अबू बक्र रज़ि० वग़ैरा ने जांनिसाराना तक़रीरें कीं, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल० अंसार की तरफ़ देखते थे अंसार ने बैअ़त के वक़्त

(1) सीरतुन्नबी सल्ल०, अल्लामा शिब्ली जि01-315, कुर्ज़ फ़ेहरी का वाक़िआ तबक़ाते इब्ने सअ़द 2-9 में और हज़रमी का वाक़िआ सुनन बैहक़ी 9-11 में मौजूद है।

(2) यह वाज़ेह रहे कि यह वाक़िआ मदीना मुनव्वरा से निकलने के बाद का है, मदीना मुनव्वरा से आप सल्ल० क़ाफ़िला अबू सुफ़यान के इरादा से चले थे, जबकि अहादीसे सहीहा में सराहत है कि मदीना मुनव्वरा से ख़ुरूज के बाद अचानक यह बात सामने आई कि क़ुरैश का लशकरे जर्रार क़ाफ़िला के दिफ़ाअ़ के लिये क़रीब पहुंच चुका है, उस वक़्त आप सल्ल० ने सहाबए किराम रज़ि० से मशवरा फ़रमाया.....यह बात भी ज़ेहन में रहनी चाहिये कि क़ाफ़िला अबू सुफ़यान के इरादा से आपके निकलने का मक़सद उस ख़तरा को दूर करना था जो मदीना पर हमला की शक्ल में मंडला रहा था, तारीख़ में सराहत है कि क़ुरैश ने उस क़ाफ़िला को अस्लन सामाने जंग तैयार करने के लिये रवाना किया था।

सिर्फ़ यह इक़रार किया था कि वह उस वक़्त तलवार उठाएंगे जब दुशमन मदीना पर चढ़ आएं, आप सल्ल0 ने दोबारा मशवरा फ़रमाया, तीसरी बार अंसार समझे कि आंहज़रत सल्ल0 हमारे जवाब के मुंतज़िर हैं, सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि0 ने अ़र्ज़ किया शायद हुजूर (सल्ल0) ने यह समझा है कि अंसार अपने शहर से निकल कर हुजूर सल्ल0 की इआनत करना अपना फ़र्ज़ नहीं समझते हैं, अंसार की तरफ़ से मैं यह अ़र्ज़ करता हूं कि हम तो हर हालत में हुजूर सल्ल0 के साथ हैं, किसी से मुआहदा फ़रमाइये किसी से मुआहदा को नामंजूर कीजिये, हमारे माल व ज़र से जिस क़दर मंशाए मुबारक हो लीजिये, हमको जो मर्ज़िये मुबारक हो अता कीजिये, माल का जो हिस्सा हुजूर (सल्ल0) हम से लेंगे हमें वह ज़्यादा पसंद होगा उस माल से जो हुजूर (सल्ल0) हमारे पास छोड़ देंगे, हमको जो हुजूर (सल्ल0) देंगे हम उसकी तअ़मील करेंगे, अगर हुजूर (सल्ल0) ग़िमाद के चश्मा तक चलेंगे तो हम साथ होंगे अगर हुजूर (सल्ल0) हमको समंदर में घुस जाने का हुक्म देंगे तो हुजूर सल्ल0 के साथ वहां भी चलेंगे।[1] हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 ने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल0) हम वह नहीं कि क़ौमे मूसा अलै0 की तरह فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هٰهُنَا قَاعِدُونَ कह दें, हम तो हुजूर (सल्ल0) के दाएं बाएं, आगे पीछे क़िताल के लिये हाज़िर हैं, उनकी इस तक़रीर से रसूलुल्लाह सल्ल0 का चेहरा चमक उठा।[2]

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-625, फ़तुल बारी 7-287,288, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वए बद्र (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब कौलुहू तआला "إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ، الخ"

बद्र की तरफ़ कूच और लशकरे इस्लाम व लशकरे कुफ्फ़ार में ज़बरदस्त तफ़ावुत

12/ रमज़ान 2 हि0 को आप सल्ल0 तक़रीबन तीन सौ जानिसारों के साथ शहर से निकले, एक मील चलकर फ़ौज का जाइज़ा लिया, जो कम उम्र थे वापस कर दिये गए कि ऐसे पुरख़तर मौक़ा पर बच्चों का काम नहीं, उमैर बिन वक़्क़ास रज़ि0 एक कम्सिन बच्चा थे जब उनसे वापसी को कहा गया तो वह रो पड़े, आख़िर आंहज़रत सल्ल0 ने इजाज़त दे दी, उमैर के भाई सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 ने कम्सिन सिपाही के गले में तलवार हमाइल की, अब फ़ौज की कुल तअ़दाद 313/ थी, जिसमें साठ मुहाजिर और बाक़ी अंसार थे।[1] लशकर में सिर्फ़ दो घोड़े थे, एक हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 की सवारी में था और एक मिक़्दाद रज़ि0 बिन अलअस्वद की, ऊंट कुल सत्तर थे, एक एक पर दो दो, तीन तीन आदमी बारी बारी से बैठते थे, ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ल0 हज़रत अली रज़ि0 और मरसद ग़नवी एक ऊंट पर बारी बारी बैठते थे[2] मक्का मुअज़्ज़मा से कुरैश बड़े सर व सामान से निकले थे, हज़ार आदमी की जमइयत थी सौ सौ सवारों का रिसाला था, रुअसाए कुरैश सब शरीक थे, अबू लहब मजबूरी की वजह से न आ सका था, इसलिये अपनी तरफ़ से उस ने क़ाइम मक़ाम भेज दिया था, रसद का

(1) तफ़सील तबक़ाते इब्ने सअ़द में है, हज़रत उमैर रज़ि0 का वाक़िआ असदुल ग़ाबा में मज़कूर है। (2) सीरत इब्ने हिशाम 1-613, ज़ादुल मआ़द 2-171, मुस्नद अहमद और मुस्तदरक हाकिम की सहीह रिवायात में मरसद ग़नवी के बजाए अबू लुबाबा का ज़िक्र है।

यह इंतिज़ाम था कि उमराए कुरैश यअ़नी अब्बास, उत्बा बिन रबीआ, हर्स बिन आमिर, नसर बिन अलहारिस, अबू जह्ल, उमय्या, वग़ैरा बारी बारी हर रोज़ दस दस ऊंट ज़िब्ह करते और लोगों को खिलाते थे, उत्बा बिन रबीआ जो कुरैश का सबसे मुअ़ज़्ज़ज़ रईस था फ़ौज का सिपह सालार था।(1)

कुरैश को बद्र के क़रीब पहुंच कर जब मअ़लूम हुआ कि अबू सुफ़यान का क़ाफ़िला ख़तरा की ज़द से निकल गया है तो क़बीला ज़ोहरा और अ़दी के सरदारान ने कहा "अब लड़ना ज़रूरी नहीं" लेकिन अबू जह्ल ने न माना, ज़ोहरा और अ़दी के लोग वापस चले गए, बाक़ी फ़ौज आगे बढ़ी।(2)

कुरैश चूंकि पहले पहुंच गए थे उन्होंने मुनासिब मौक़ो पर क़ब्ज़ा कर लिया था, बख़िलाफ़ इसके मुसलमानों की तरफ़ चश्मा या कुंवां तक न था, ज़मीन ऐसी रेतीली थी कि ऊंटों के पांव रेते में धंस धंस जाते थे, हुबाब बिन मुंज़िर ने आंहज़रत सल्ल0 से अ़र्ज़ की कि जो मक़ाम इंतिख़ाब किया गया है वह्य की रू से है या फ़ौजी तदबीर है? इर्शाद हुआ कि वह्य नहीं है, हुबाब रज़ि0 ने कहा तो बेहतर होगा कि आगे बढ़ कर चश्मा पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए और आसपास के कुंवें बेकार कर दिये जाएं, आप सल्ल0 ने यह

(1) सीरत इब्ने हिशाम, क़िस्सा ग़ज़वए बद्र, अलबिदाया वन्निहाया 3-360, मुस्नद अहमद 2-193 में लशकरे कुफ़्फ़ार की तअ़दाद का ज़िक्र है।

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-426, सीरत इब्ने हिशाम 1-619

राए पसंद फ़रमाई और इसी पर अमल किया गया, ताईदे एज़्दी और हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से मेंह बरस गया, जिससे गर्द जम बई और जा बजा पानी को रोक कर छोटे छोटे हौज़ बना लिये गए, कि वुज़ू और गुस्ल के काम आएं, इस कुदरती एहसान का खुदा ने कुर्आन मजीद में भी ज़िक्र किया है "وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَكُمْ بِهِ" "और जबकि खुदा ने आसमान से पानी बरसाया कि तुम को पाक करे" पानी पर अगरचे क़ब्ज़ा कर लिया गया, लेकिन साकिये कौसर का फ़ैज़ आम था, इसलिये दुशमनों को भी पानी लेने की आम इजाज़त थी।[1]

यह रात का वक़्त था तमाम सहाबा रज़ि० ने कमर खोल खोल कर रात भर आराम फ़रमाया, लेकिन सिर्फ़ एक ज़ात थी (ज़ाते नबवी सल्ल०) जो सुब्ह तक बेदार और मसरूफ़े दुआ रही, सुब्ह हुई तो लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ दी, बादे नमाज़ जिहाद पर वअ़ज़ फ़रमाया।[2]

जंग की तैयारी

कुरैश जंगे के लिये बेताब थे, ताहम कुछ नेक दिल भी थे जिनके दिल ख़ूरेज़ी से लरज़ते थे, उनमें हकीम बिन हिज़ाम (जो आगे चल कर इस्लाम लाए) ने सरदारे फ़ौज उत्बा से जाकर कहा "आप चाहें तो आज का दिन आपकी नेकनामी की अबदी यादगार रह जाए, उत्बा ने कहा क्योंकर? हकीम

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-620, 621, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-35, इमाम हाकिम ने मुस्तदरक 3-326 में हज़रत हुबाब रज़ि० की राए का तज़किरा फ़रमाया है, लेकिन इमाम ज़हबी ने इस हदीस को मुन्कर करार दिया है। (2) ज़ादुल मआ़द 3-179, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-39, अस्सुननुल कुब्रा लिन्नसाई, किताबुस्सलात

ने कहा कुरैश का जो कुछ मुतालबा है वह सिर्फ़ हज़रमी का खून है वह आपका हलीफ़ था, आप उसका खून बहा अदा कर दीजिये'' उत्बा नेक नफ़्स आदमी था, उसने निहायत खुशी से मंजूर कर लिया, लेकिन चूंकि अबू जह्ल का इत्तिफ़ाक़े राए ज़रूरी था, हकीम उत्बा का पैग़ाम लेकर गए, अबू जह्ल तरकश से तीर निकाल कर फैला रहा था, उत्बा का पैग़ाम सुनकर बोला ''हां उत्बा की हिम्मत ने जवाब दे दिया'' उत्बा के फ़रज़ंद अबू हुज़ैफ़ा रज़ि0 इस्लाम ला चुके थे और इस मअ्रके में आंहज़रत सल्ल0 के साथ आए थे इस बिना पर अबू जह्ल ने यह बदगुमानी की कि उत्बा इसलिये लड़ाई से जी चुराते हैं कि उसके बेटे पर आंच न आए।

अबू जह्ल ने हज़रमी के भाई आमिर को बुलाकर कहा देखते हो, तुम्हारा खून बहा तुम्हारी आंख के सामने आकर निकला जाता है, आमिर ने अरब के दस्तूर के मुताबिक़ कपड़े फाड़ डाले और गर्द उड़ा कर ''واعَمرَاہ وَاعَمرَاہ'' का नअ्रा मारना शुरू किया, इस वाक़िआ ने तमाम फ़ौज में आग लगा दी।

उत्बा ने अबू जह्ल का तअ्ना सुना तो ग़ैरत से सख़्त बरहम हुआ और कहा कि मैदाने जंग बता देगा कि नामर्दी का दाग़ कौन उठाता है? यह कहकर मिग़फ़र मांगा, लेकिन उसका सर इस क़दर बड़ा था कि कोई मग़फ़र उसके सर पर ठीक न उतरा, मजबूरन सर से कपड़ा लपेटा और लड़ाई

के हथियार सजे।[1]

चूंकि आंहज़रत सल्ल0 अपने हाथ को खून से आलूदा करना पसंद नहीं फ़रमाते थे, सहाबा रज़ि0 ने मैदान के किनारे एक छप्पर का साइबना तैयार किया कि आप सल्ल0 उसमें तशरीफ़ रखें, सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि0 दरवाज़ा पर तेग़ बकफ़ खड़े हुए कि कोई इधर न बढ़ने पाए।[2]

अगर्चे बारगाहे इलाही से फ़त्ह व नुस्रत का वादा हो चुका था, अनासिरे आलम आमादए मदद थे, मलाइका की फ़ौजें हमरिकाब थीं, ताहम आलमे अस्बाब के लिहाज़ से आप सल्ल0 ने उसूले जंग के मुताबिक़ फ़ौजें मुरत्तब कीं, मुहाजिरीन, औस और ख़ज़रज के तीन दस्ते क़ाइम किये, मुहाजिरीन का अलम मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि0 को इनायत फ़रमाया, ख़ज़रज के अलम बरदार हुबाब बिन मंज़िर रज़ि0 और औस के सअ़द बिन मआज़ रज़ि0 मुक़र्रर हुए।

सुब्ह होते ही आप सल्ल0 ने सफ़ आराई शुरू की, दस्ते मुबारक में एक तीर था, उसके इशारे से सफ़ें क़ाइम करते थे कि कोई शख़्स तिल भर आगे या पीछे न रहने पाए, लड़ाई में शोर व गुल आम बात है, लेकिन मना कर दिया गया कि किसी के मुंह से आवाज़ तक न निकलने पाए।[3]

इस मौक़ा पर जबकि दुशमन की अज़ीमुश्शान तअ़दाद मुक़ाबिल थी, और मुसलमानों की तरफ़ एक आदमी भी बढ़ जाता तो कुछ न कुछ मुसर्रत होती, आंहज़रत सल्ल0

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-622, 623, ज़ादुल मआ़द 3-779 (2) ज़ादुल मआ़द 3-620
(3) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-320

हमातन वफ़ा थे, अबू हुज़ैफ़ा बिन अल यमान और अबू हुसैल दो सहाबी मक्का से आ रहे थे, राह में कुफ़्फ़ार ने रोका कि मुहम्मद (सल्ल0) की मदद को जा रहे हो? उन्होंने इंकार किया और अदमे शिर्कत का वादा किया, आंहज़रत सल्ल0 के पास आए तो सूरते हाल अ़र्ज़ की, फ़रमाया हम हर हाल में वादा वफ़ा करेंगे, हमको सिर्फ़ खुदा की मदद दरकार है।[1]

अब दो सफ़ें आमने सामने मुक़ाबिल थीं, हक़ व बातिल, नूर व जुल्मत, कुफ़्र व इस्लाम।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ،

"जो लोग बाहम लड़े, उनमें तुम्हारे लिये इबरत की निशानियां हैं, एक खुदा की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुन्किरे खुदा था।"

यह अजीब मंज़र था, इतनी बड़ी वसीअ़ दुन्या में तौहीद की क़िस्मत सिर्फ़ चंद जानों पर मुंहसिर थी, सहीह मुस्लिम में है "कि आंहज़रत सल्ल0 पर निहायत खुज़ूअ़ की हालत तारी थी, दोनों हाथ फैला कर फ़रमाते थे "खुदाया! तूने मुझसे वादा किया है, आज पूरा कर" महवीयत और खुदी के आलम में चादर कंधे पर से गिर गिर पड़ती थी और आपको ख़बर तक न होती थी, कभी सज्दे में गिरते थे और फ़रमाते थे "कि खुदाया अगर यह चंद नुफ़ूस आज मिट गए तो फिर रूए ज़मीन पर कोई तेरी इबादत करने वाला न होगा।"

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाबुल वफ़ा बिल अहद

इस बेक़रारी पर बंदगाने ख़ास को रिक़्क़त आ गई, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने अ़र्ज़ की "हुजूर खुदा अपना वादा वफ़ा करेगा।"[1] आख़िर रूहानी तस्कीन के साथ "سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ" (क़मर) "फ़ौज को शिकस्त दी जाएगी और वह पुश्त फेर देंगे" पढ़ते हुए लबे मुबारक मुज़्दए फ़त्ह की पेशीन गोई से आशना हुए।[2]

कुरैश की फ़ौजें अब बिल्कुल क़रीब आ गईं, ताहम आप सल्ल0 ने सहाबए किराम को पेशक़दमी से रोका और फ़रमाया कि जब दुशमन पास आ जाएं तो तीर से रोको।

आप सल्ल0 ने सब्र व इस्तिक़ामत की फ़ज़ीलत, इसकी बिना पर अल्लाह की मदद, फ़त्ह व ज़फ़र और आख़िरत के सवाब का ज़िक्र फ़रमाया, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि जो अल्लाह के रास्ते में शहीद होगा उसके लिये अल्लाह ने जन्नत वाजिब कर दी, यह सुनकर उमैर बिन अल हुमाम रज़ि0 खड़े हो गए और कहने लगे कि या रसूलुल्लाह सल्ल0! ऐसी जन्नत जिसकी चौड़ाई ज़मीन व आसमान के बराबर हो? फ़रमाया कि "हां" कहा कि ऐसी बात है या रसूलुल्लाह सल्ल0? फ़रमाया ऐसी बात क्यों कहते हो? अ़र्ज़ किया कि नहीं या रसूलुल्लाह सल्ल0! यह मैं सिर्फ़ इस शौक़ में कह रहा हूं कि शायद मुझे भी वह नसीब हो, फ़रमाया "तुम्हें वह नसीब होगी" उन्होंने अपनी ढाल में से खजूर निकाल कर खाना शुरू किये फिर कहने लगे अगर मैं इन

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाबुल इम्दाद बिल मलाइका फी ग़ज़वए बद्र

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब कौलुहू तआला "اذ تستغيثون ربكم"

खजूरों के ख़त्म होने का इंतिज़ार करूं तो यह बड़ी लम्बी ज़िंदगी हुई यह कहकर खजूर फेंके और आगे बढ़कर शहादत से सुर्ख़ रू हुए।[1]

यह मअ़रका ईसार व जाँ बाज़ी का सबसे बड़ा हैरत अंगेज़ मंज़र था, दोनों फ़ौजें सामने आईं तो लोगों को नज़र आया कि खुद उनके जिगर के टुक्ड़े तलवार के सामने हैं, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के बेटे (जो अब तक काफ़िर थे) मैदाने जंग में बढ़े तो हज़रत अबू बक्र रज़ि0 तलवार खींच कर निकले,[2] उत्बा मैदान में आया तो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि0 (उत्बा के फ़रज़ंद थे) उसके मुक़ाबला को निकले, हज़रत उमर रज़ि0 की तलवार मामूं के खून से रंगीन थी।[3]

आग़ाज़े जंग

लड़ाई का आग़ाज़ यूं हुआ कि सबसे पहले आमिर हज़रमी जिसको भाई के खून का दावा था आगे बढ़ा, मुह्ज्जअ़ हज़रत उमर रज़ि0 का गुलाम उसके मुक़ाबला को निकला और मारा गया[3] उत्बा जो सरदारे लशकर था, अबू जह्ल के तअ़ना से सख़्त बरहम था, सबसे पहले वही भाई और बेटे को लेकर मैदान में आया और मुबारज़त तलबी की। अरब में दस्तूर था कि नामवर लोग कोई इम्तियाज़ी निशान लगा कर मैदाने जंग में जाते थे, उत्बा के सीने पर शुतुर मुर्ग़

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारा, बाब सुबूतुल जन्ना लिश्शहीद

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-238

(3) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-322

के पर थे, हज़रत औफ़ रज़ि0, हज़रत मआज़ रज़ि0 और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि0 मुक़ाबला को निकले, उत्बा ने नाम व नसब पूछा और जब यह मअ़लूम हुआ कि अंसार हैं तो उत्बा ने कहा हमको तुम से ग़र्ज़ नहीं, फिर आंहज़रत (सल्ल0) की तरफ़ ख़िताब करके कहा कि मुहम्मद सल्ल0! यह लोग हमारे जोड़ के नहीं, आंहज़रत सल्ल0 के इर्शाद के मुताबिक़ अंसार हट आए और हज़रत हम्ज़ा रज़ि0, हज़रत अली रज़ि0, और हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 मैदान में आए, चूंकि उन लोगों के चेहरों पर नक़ाब थी, उत्बा ने पूछा तुम कौन हो? सबने नाम व नसब बताए, उत्बा ने कहा "हां अब हमारा जोड़ है।"

उत्बा हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 से, और वलीद हज़रत अली रज़ि0 से मुक़ाबिल हुआ, और दोनों मारे गए, लेकिन उत्बा के भाई शैबा ने हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 को ज़ख़्मी कर दिया, हज़रत अली रज़ि0 ने बढ़कर शैबा को क़त्ल कर दिया और अबू उबैदा रज़ि0 को कंधे पर उठाकर रसूल सल्ल0 की ख़िदमत में लाए, हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 ने आंहज़रत सल्ल0 से पूछा कि क्या मैं दौलते शहादत से महरूम रहा? आप सल्ल0 ने फ़रमाया "नहीं तुमने शहादत पाई" अबू उबैदा रज़ि0 ने कहा आज अबू तालिब ज़िंदा होते तो तस्लीम करते कि उनके इस शेअ़र का मुस्तहिक़ मैं हूं।(1)

(1) सुनन अबी दाऊद, किताबुल जिहाद, बाबुल मुबारज़ा मिन हदीसे अली, मुस्नद अहमद 1-117, तफ़सील से ज़रक़ानी ने अलमवाहिब में यह वाक़िआ बयान किया है, सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए बद्र में यह मज़कूर है कि هٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمَانِ इसी सिलसिला में नाज़िल हुई।

وَنُسْلِمُهُ حَتّٰى نُصْرَعَ حوالَه وَنَذْهَلُ عن أبْنَائِنَا وَالْحَلَائِلِ

"हम मुहम्मद (सल्ल0) को उस वक़्त दुशमनों के हवाला करेंगे जब उनके गिर्द लड़कर मर जाएं, और हम मुहम्मद (सल्ल0) के लिये अपने बेटों और बेटियों को भूल जाते हैं।"

सईद बिन अलआ़स का बेटा (उबैदा) सर से पांव तक लोहे में डूबा हुआ सफ़ से निकला और पुकार कर कहा कि "मैं अबू किरश हूं" हज़रत जुबैर रज़ि0 उसके मुक़ाबला को निकले और चूंकि सिर्फ़ उसकी आंखें नज़र आती थीं, ताक कर आंख में बर्छी मारी वह ज़मीन पर गिरा और मर गया, बर्छी इस तरह पैवस्त हो गई थी कि हज़रत जुबैर रज़ि0 ने उसकी लाश पर पांव अड़ा कर खींचा तो बड़ी मुश्किल से निकली, लेकिन दोनों सिरे ख़म हो गए, यह बर्छी यादगार रही, यअ़नी हज़रत जुबैर रज़ि0 से आंहज़रत सल्ल0 ने मांग ली, फिर चारों खुलफ़ा के पास मुंतक़िल होती रही।[1] फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि0 के पास आई, हज़रत जुबैर रज़ि0 ने इस मअ़रका में कई कारी ज़ख़्म उठाए, शाना में जो ज़ख़्म था इतना गहरा था कि अच्छे हो जाने पर उसमें उंगली चली जाती थी, चुनांचे उनके बेटे उर्वा बचपन में इन ज़ख़्मों से खेला करते थे, जिस तलवार से लड़े थे वह लड़ते लड़ते गिर गई थी, चुनांचे अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि0 शहीद हुए तो अब्दुल मलिक ने उर्वा से कहा तुम जुबैर (रज़ि0) की तलवार पहचान लोगे? उन्होंने कहा हां!

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब शुहूदुल मलाइका बदरन

अब्दुल मलिक ने पूछा क्योंकर? बोले बद्र के मअ़रका में उसमें दंदाने पड़ गए थे, अब्दुल मलिक ने तस्दीक़ की और यह मिस्रअ् पढ़ा-

"بِهِنَّ فُلُوْلٌ مِنْ قِرَاعِ الْكَتَائِبِ"[1]

अब्दुल मलिक ने तलवार उर्वा को दे दी, उन्होंने उसकी क़ीमत लगवाई तो तीन हज़ार ठहरी, उसके क़ब्ज़ा पर चांदी का काम था।[2] अब आम हमला शुरू हो गया, मुश्रिकीन अपने बल बूते पर लड़ रहे थे, लेकिन इधर सरवरे आलम सल्ल0 सर बसज्दा, सिर्फ़ खुंदा की क़ूव्वत का सहारा ढूंढ रहा था।[3]

नामवर सरदाराने कुफ्फ़ार का क़त्ल

अबू जह्ल की शरारत और दुशमनीये इस्लाम का आम चर्चा था इस बिना पर अंसार में मुअ़व्विज़ और मुआ़ज़ दो भाईयों ने अहद किया था कि यह शक़ी जहां नज़र आ जाएगा या उसको मिटा देंगे या खुद मिट जाएंगे, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 का बयान है कि मैं सफ़ में था कि दफ़अ़तन मुझको दाएं बाएं दो नौजवान नज़र आए, एक ने मुझसे कान में पूछा कि अबू जह्ल कहां है? मैंने कहा बिरादर ज़ादा! अबू जह्ल को पूछकर क्या करेगा? बोला कि

(1) नाबिग़ा ज़ुबयानी के शेअ़र का एक मिस्रअ् है जिसका पहला मिस्रअ् "ولا عيب فيهم غير أن سيوفهم" है।

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी बाब क़त्लु अबी जह्ल

(3) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-324

मैंने खुदा से अहद किया है कि अबू जह्ल को जहां देख लूंगा, या उसे क़त्ल करूंगा या खुद लड़कर मारा जाऊंगा, मैं यह जवाब नहीं देने पाया था कि दूसरे नौजवान ने भी मुझसे कानों में यही बातें कीं, मैंने दोनों को इशारे से बताया कि अबू जह्ल वह है, मेरा यह बताना था कि दोनों बाज़ की तरह झपटे, और अबू जह्ल ख़ाक पर था, यह दोनों जवान अफ़राअ के बेटे थे (मअ़व्विज़ और मुआ़ज़)[1] अबू जह्ल के बेटे अकरमा ने अ़क़ब से आकर मआ़ज़ के बाएं शाना पर तलवार मारी, जिससे बाजू कट गया लेकिन तस्मा बाक़ी रहा, मुआज़ ने अकरमा का तआ़कुब किया, वह बचकर निकल गया, मुआ़ज़ उसी हालत में लड़ रहे थे, लेकिन हाथ लटकने से ज़हमत होती थी, हाथ को पांव के नीचे दबाकर खींचा कि तस्मा भी अलग हो गया और अब वह आज़ाद थे।[2] आंहज़रत सल्ल0 ने लड़ाई से पहले इर्शाद फ़रमाया "कुफ़्फ़ार के साथ जो लोग आए हैं उनमें से ऐसे लोग भी हैं जो खुशी से नहीं बल्कि कुरैश के जब्र से आए हैं" उन लोगों के नाम भी आपने बता दिये थे, उनमें अबुल बुख़्तरी भी था, मुहजज़्ज़र अंसारी की नज़र जब उस पर पड़ी तो मुहजज़्ज़र रज़ि0 ने कहा चूंकि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने तेरे क़त्ल से मना फ़रमाया है इसलिये तुझको छोड़ देता हूं, अबुल बुख़्तरी के साथ उसका एक रफ़ीक़ भी था, अबुल बुख़्तरी ने

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल खुम्स, बाब मन लम यख़्मुसिल असलाब, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब इस्तिहक़ाकुल क़ातिल सलबुल क़तील,
(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-635, मुस्नद अहमद में तफ़सील से इसका तज़किरा है 1-444

कहा इसको भी, मुज़ज़्ज़र ने कहा नहीं, अबुल बुख़्तरी ने कहा तो मैं ख़ातूनाने अरब का यह तअ़ना नहीं सुन सकता कि अबुल बुख़्तरी ने अपनी जान बचाने के लिये रफ़ीक़ का साथ छोड़ दिया, यह कहकर अबुल बुख़्तरी यह रिज्ज़ पढ़ता हुआ मुजज़्ज़र पर हमला आवर हुआ और मारा गया।

لَنْ يَتْرُكَ ابْنُ حُرَّةٍ زَمِيْلَهٗ حَتّٰى يَمُوْتَ أَوْيَرَى سَبِيْلَهٗ

"शरीफ़ज़ादा अपने रफ़ीक़ को नहीं छोड़ सकता जब तक मर न जाए या मौत का रास्ता न देख ले।"[1]

उत्बा और अबू जह्ल के मारे जाने से कुरैश का पाए सिबात उखड़ गया और फ़ौज में बेदिली छा गई।

आंहज़रत सल्ल0 का शदीद दुशमन उमय्या बिन ख़लफ़ भी जंगे बद्र में शरीक था, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 ने उससे किसी ज़माने में मुआहदा किया था कि वह मदीना में आएगा तो यह उसकी जान के ज़ामिन होंगे, बद्र में इस दुशमने खुदा से इंतिक़ाम लेने का खूब मौक़ा था, लेकिन चूंकि अहद की पाबंदी इस्लाम का शिआ़र है, हज़रत अब्दुर्रहमान ने चाहा कि वह बच कर निकल जाए उसको लेकर पहाड़ पर चले गए, इत्तिफ़ाक़ यह कि हज़रत बिलाल रज़ि0 ने देख लिया, अंसार को ख़बर कर दी, दफ़अ़तन लोग टूट पड़े, उन्होंने उमय्या के बेटे को आगे कर दिया, लोगों ने उसको क़त्ल कर दिया, लेकिन उस पर भी क़नाअ़त न की

(1) असदुल ग़ाबा 4-288, अलबिदाया वन्निहाया 3-285

और उमय्या की तरफ़ बढ़े, उन्होंने उमय्या से कहा तुम ज़मीन पर लेट जाओ, वह लेट गया तो यह उस पर छा गए कि लोग उसको मारने न पाएं, लेकिन लोगों ने उनकी टांगों के अंदर से हाथ डाल कर उसको क़त्ल कर दिया, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि0 की भी एक टांग ज़ख़्मी हुई और ज़ख़्मों का निशान मुद्दतों तक क़ाइम रहा।[1] अबू जह्ल और उत्बा वग़ैरा के क़त्ल के बाद क़ुरैश ने सपर डाल दी और मुसलमानों ने उनको गिरफ़्तार करना शुरू कर दिया। हज़रत अब्बास, अक़ील (हज़रत अली रज़ि0 के भाई), नौफ़ल, अस्वद बिन आमिर, अब्द बिन ज़म्आ और बहुत से बड़े बड़े मुअज़्ज़ज़ लोग गिरफ़्तार हुए।

आंहज़रत सल्ल0 ने हुक्म दिया कि कोई शख़्स जाकर ख़बर लाए अबू जह्ल का क्या अंजाम हुआ? अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 ने जाकर लाशों में देखा तो ज़ख़्मी पड़ा हुआ दम तोड़ रहा था, बोले तू अबू जह्ल है? उसने कहा एक शख़्स को उसकी क़ौम ने क़त्ल कर दिया तो यह फ़ख़्र की क्या बात है, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 उसका सर काट लाए और आंहज़रत सल्ल0 के क़दमों पर डाल दिया।[2]

फ़त्हे मुबीन

ख़ातमए जंग पर मअ़लूम हुआ कि मुसलमानों में से सिर्फ़ 14/ शख़्सों ने शहादत पाई, जिसमें 6/ मुहाजिर और बाक़ी अंसार थे।[3] लेकिन दूसरी तरफ़ क़ुरैश की अस्ली

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल वकाला, बाब इज़ा वक्कलल मुस्लिमु हरबीयन (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्लु अबी जह्ल (3) सीरत इब्ने कसीर 2-463

ताक़त टूट गई, रुअसाए कुरैश जो शुजाअत में नामवर और क़बाइल के सिपहसालार थे एक एक करके मारे गए, उनमें उत्बा, शैबा, अबू जह्ल, अबुल बुख़्तरी, ज़म्आ बिन अलअस्वद, आ़स बिन हिशाम, उमय्या बिन ख़लफ़, मुनब्बह बिन अलहज्जाज कुरैश के सरताज थे, तक़रीबन 70/ आदमी क़त्ल और उसी क़दर गिरफ़्तार हुए।[1] असीराने जंग में से उक़्बा और नुज़र बिन हारिस रिहा कर दिये गए, बाक़ी गिरफ़्तार होकर मदीना आए, उनमें हज़रत अब्बास, अक़ील (हज़रत अली रज़ि0 के भाई), अबुल आ़स (आंहज़रत सल्ल0 के दामाद) भी थे।[2]

लड़ाइयों में आंहज़रत सल्ल0 का मआ़मूल था कि जहां कोई लाश नज़र आती थी आप सल्ल0 उसको वहीं दफ़्न कर देते थे, लेकिन इस मौक़ा पर कुशतों की तआ़दाद ज़्यादा थी इसलिये एक एक का अलग अलग दफ़्न कराना मुश्किल था, एक वसीअ़ कुंवां था, तमाम लाशें आपने उसमें डलवा दीं,[3] लेकिन उमय्या की लाश फूल कर इस क़ाबिल नहीं रही थी, इसलिये वहीं ख़ाक में दबा दी गई।[4]

असीराने जंग के साथ सुलूक

असीराने जंग दो दो चार चार सहाबए किराम को तक़सीम कर दिये गए और इर्शाद हुआ कि आ़राम के साथ रखे जाएं, सहाबा रज़ि0 ने उनके साथ यह बरताव किया कि

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए बद्र
(2) तारीख़े तबरी 3-38, अलबिदाया वन्निहाया 3-297
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्लु अबी जह्ल
(4) तारीख़े तबरी 2-37

उनको खाना खिलाते और खुद खजूर खाकर रह जाते थे, उन क़ैदियों में अबू उज़ैज़ भी थे, जो हज़रत मस्अब बिन उमैर रज़ि0 के भाई थे, उनका बयान है कि मुझको जिन अंसारियों ने अपने घर में क़ैद कर रखा था, जब सुब्ह या शाम का खाना लाते तो रोटी मेरे सामने रख देते और खुद खजूरें उठा लेते, मुझको शर्म आती और मैं रोटी उनके हाथ में दे देता लेकिन वह हाथ भी न लगाते और मुझी को वापस कर देते, यह इस बिना पर था कि आंहज़रत सल्ल0 ने ताकीद की थी कि क़ैदियों के साथ अच्छा सुलूक किया जाए।[1]

क़ैदियों में एक शख़्स सुहैल बिन अम्र था जो निहायत फ़सीहुल लिसान था और आम मज्मओं में आंहज़रत सल्ल0 के ख़िलाफ़ तक़रीरें किया करता था, हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा, या रसूलुल्लाह! इसके दो निचले दांत उखड़वा दीजिये कि फिर अच्छा न बोल सके, आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि मैं अगर इसके उज़्व बिगाड़ दूंगा (मुस्ला) तो गो नबी हूं लेकिन खुदा इसकी जज़ा में मेरे अअ़ज़ा भी बिगाड़ेगा।[2] असीराने जंग के पास कपड़े न थे, आंहज़रत सल्ल0 ने सब को कपड़े दिलवाए, लेकिन हज़रत अब्बास का क़द इस क़दर ऊंचा था कि किसी का कुर्ता उनके बदन पर ठीक न उतरता था, अब्दुल्लाह बिन उबैय (रईसुल मुनाफ़िक़ीन) ने जो हज़रत अब्बास का हम क़द था अपना कुर्ता मंगवा कर

(1) तारीख़े तबरी 2-39, तबक़ात इब्ने सअ़द 2-14

(2) सीरतुन्नबी 1-330 बहवाला तारीख़े तबरी

दिया, सहीह बुख़ारी में है कि आंहज़रत सल्ल0 ने अब्दुल्लाह के कफ़न के लिये जो अपना कुर्ता इनायत फ़रमाया था वह इसी एहसान का मुआवज़ा था।(1)

असीराने जंग से चार चार हज़ार दिरहम फ़िदया लिया गया, लेकिन जो लोग नादारी की वजह से फ़िदया अदा नहीं कर सकते थे वह छोड़ दिये गए, उनमें से जो लिखना जानते थे उनको हुक्म हुआ कि दस दस बच्चों को लिखना सिखा दें तो छोड़ दिये जाएंगे।(2) हज़रत ज़ैद बिन साबित ने इसी तरह लिखना सीखा था।(3)

अंसार ने आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में अ़र्ज़ की कि हज़रत अब्बास हमारे भांजे हैं हम उनका फ़िदया छोड़ देते हैं लेकिन आंहज़रत सल्ल0 ने मुसावात की बिना पर गवारा नहीं फ़रमाया और उनको भी फ़िदया अदा करना पड़ा।(4) फ़िदया की आम मिक़्दार चार हज़ार दिरहम थी, लेकिन उमरा से ज़्यादा लिया गया, हज़रत अब्बास दौलतमंद थे इसलिये उनसे भी ज़्यादा रक़म वसूल की गई, उन्होंने आंहज़रत सल्ल0 से शिकायत की, लेकिन उनको क्या मअ़लूम कि इस्लाम ने जो मुसावात क़ाइम की उसमें क़रीब व बईद, अज़ीज़ व बेगाना, आम व ख़ास के तमाम तफ़रके मिट चुके थे, लेकिन एक तरफ़ तो अदाए फ़र्ज़ की यह

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब अल किस्वा लिल उसारा

(2) मुस्नद अहमद बिन हंबल 1-247

(3) सीरतुन्नबी, बहवाला तबक़ाते इब्ने सअ़द

(4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब शुहूदुल मलाइका बदरन

मुसावात थी, दूसरी तरफ़ मुहब्बत का तक़ाज़ा यह था कि हज़रत अब्बास की कराह सुनकर रात को अराम न फ़रमा सके, लोगों ने उनकी गिरह खोली तो आपने आराम फ़रमाया।[1]

हज़रत अबुल आस रज़ि० का इस्लाम लाना

आंहज़रत सल्ल० के दामाद अबुल आ़स रज़ि० भी असीराने जंग में आए थे, उनके पास फ़िदया की रक़म न थी, आंहज़रत सल्ल० की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ि० को (जो उनकी ज़ौजा थीं और मक्का में थीं) कहला भेजा कि फ़िदया की रक़म भेज दें, हज़रत ज़ैनब रज़ि० का जब निकाह हुआ था तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने जहेज़ में उनको एक क़ीमती हार दिया था, हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने वही हार गले से उतार कर भेज दिया, आंहज़रत सल्ल० ने देखा तो 25/ बरस पहले का मुहब्बत आमेज़ वाक़िआ याद आ गया, आप सल्ल० बेइख़्तियार रो पड़े, और सहाबा से फ़रमाया कि तुम्हारी मर्ज़ी हो तो बेटी को मां की यादगार वापस कर दो, सबने तस्लीम की, गर्दनें झुका दीं और हार वापस कर दिया।

अबुल आस रज़ि० रिहा होकर मक्का आए और हज़रत ज़ैनब रज़ि० को मदीना भेज दिया, अबुल आ़स बहुत बड़े ताजिर थे, चंद साल के बाद बड़े सर व सामान से शाम की तिजारत लेकर निकले, वापसी में मुसलमान दस्तों ने उनको

(1) अलबिदाया वन्निहाया 2-300

मअ़ तमाम माल व अस्बाब गिरफ़्तार कर लिया, अस्बाब एक एक सिपाही पर तक़सीम हो गया, यह छिपकर हज़रत ज़ैनब रज़ि0 के पास पहुंचे, उन्होंने पनाह दी, आंहज़रत सल्ल0 ने लोगों से फ़रमाया कि अगर मुनासिब समझो तो अबुल आ़स का अस्बाब वापस कर दो, फिर तस्लीम की गर्दनें झुक गईं और एक एक धागा तक सिपाहियों ने ला लाकर वापस कर दिया, अब यह वार ऐसा न था जो ख़ाली जाता, अबुल आ़स मक्का आए और तमाम शुरका को हिसाब समझा कर दौलते इस्लाम से फ़ाइज़ हुए, और यह कह दिया कि मैं इसलिये आकर हिसाब समझा कर वापस जा रहा हूं ताकि यह न कहो कि अबुल आ़स हमारा रूपया खा गया और तक़ाज़े के डर से मुसलमान हो गया।[1]

हज़रत उमैर बिन वह्ब रज़ि0 का क़बूले इस्लाम

उमैर बिन वहब कुरैश में इस्लाम का एक सख़्त दुशमन था वह और सफ़वान बिन उमय्या हुजरे में बैठे हुए मक़तूलीने बद्र का मातम कर रहे थे, सफ़वान ने कहा "खुदा की क़सम अब जीने का मज़ा नहीं" उमैर ने कहा सच कहते हो अगर मुझ पर क़र्ज़ न होता और बच्चों का ख़्याल न होता तो मैं सवार होकर जाता और मुहम्मद (सल्ल0) को क़त्ल कर आता, मेरा बेटा वहां क़ैद है।

सफ़वान ने कहा तुम क़र्ज़ की और बच्चों की फ़िक्र न करो इन कामों का मैं ज़िम्मादार हूं, उमैर ने घर आकर

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-657, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-154 ता 157, तारीख़े तबरी 3-43, 44

तलवार ज़ह्र में बुझाई और मदीना पहुंचा, हज़रत उमर रज़ि0 ने उसके तेवर देख लिये, गला दबाए हुए उसको आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में लाए, आप सल्ल0 ने फ़रमाया उमर! छोड़ो, उमैर! क़रीब आ जाओ, पूछा किस इरादे से आए हो? जवाब दिया बेटे को छुड़ाने आया हूं, फ़रमाया फिर तलवार क्यों हमाइल है? उमैर ने कहा आख़िर तलवारें बद्र में किस काम आईं, फ़रमाया क्यों नहीं, तुमने और सफ़वान ने हुजरे में बैठ कर मेरे क़त्ल की साज़िश नहीं की? उमैर यह बात सुनकर सन्नाटे में आ गया, बेइख़्तियार बोला, मुहम्मद (सल्ल0) बेशक तुम पैग़म्बर हो, बख़ुदा मेरे और सफ़वान के सिवा इस मुआमला की किसी को ख़बर न थी। कुरैश जो आंहज़रत सल्ल0 के क़त्ल की ख़बर सुनने के मुंतज़िर थे उन्होंने उमैर के मुसलमान होने की ख़बर सुनी।

नबी सल्ल0 ने सहाबा से फ़रमाया अपने भाई को दीन सिखाओ, कुर्आन याद कराओ और इसके फ़रज़ंद को आज़ाद कर दो, उमैर ने अ़र्ज़ किया ऐ रसूले ख़ुदा सल्ल0! मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं मक्का ही वापस जाऊं और लोगों को इस्लाम की दावत दूं, मेरे दिल में आता है कि अब मैं बुत परस्तों को उसी तरह सताया करूं जिस तरह मुसलमानों को सताता रहा हूं, उमैर के मदीना जाने के बाद सफ़वान का यह हाल था कि सरदाराने कुरैश से कहा करता था। देखो चंद रोज़ में क्या गुल खिलने वाला है कि बद्र का सदमा भूल जाओगे, सफ़वान को ख़बर लगी कि उमैर

मुसलमान हो गया तो उसे सख़्त सदमा हुआ और उसने क़सम खाई कि जब तक ज़िंदा हूं उमैर से बात न करूंगा, न उसे कोई फ़ाएदा पहुंचने दूंगा, उमैर मक्का में आया वह इस्लाम की मुनादी किया करता था और अक्सर लोग उसके हाथ पर मुसलमान हो गए थे।[1]

हज़रत फ़ातिमा रज़िअल्लाहु अन्हा का अक़्द

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० जो हुज़ूर की सबसे कम्सिन साहबज़ादी थीं, अब उनकी उम्र 18 बरस की हो चुकी थी और शादी के पैग़ाम आने लगे थे, हज़रत अली रज़ि० ने जब दरख़्वास्त की तो आप सल्ल० ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की मर्ज़ी दरयाफ़्त की, वह चुप रहीं, यह एक तरह का इज़हार था, आप सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० से पूछा कि तुम्हारे पास महर में देने के लिये क्या है? बोले कुछ नहीं, आप सल्ल० ने फ़रमाया "वह हतीया की ज़िरह क्या हुई" (बद्र में हाथ आई थी) अ़र्ज़ की वह तो मौजूद है, आप सल्ल० ने फ़रमाया "बस वह काफ़ी है।"

नाज़िरीन को ख़्याल होगा कि बड़ी क़ीमती चीज़ होगी, लेकिन अगर वह उसकी मिक़्दार जानना चाहते हैं तो जवाब यह है कि सिर्फ़ सवा सौ रूपये की ज़िरह के सिवा और जो कुछ हज़रत अली रज़ि० का सरमाया था वह एक भेड़ की खाल और एक बोसीदा यमनी चादर थी, हज़रत अली रज़ि० ने यह सब सरमाया हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि० के नज़्र

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-147 ता 149, सीरत इब्ने हिशाम 1-661

किया, हज़रत अली रज़ि0 अब तक आंहज़रत सल्ल0 के ही पास रहते थे, शादी के बाद ज़रूरत हुई कि अलग घर लें, हारिसा बिन नोअूमान अंसारी के मुतअ़द्दद मकानात थे, जिनमें से वह कई आंहज़रत सल्ल0 की नज़्र कर चुके थे, हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 ने आंहज़रत सल्ल0 से कहा कि उन्ही से और मकान दिलवा दीजिये, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कहां तक, अब उनसे कहते कहते शर्म आती है। हारिसा रज़ि0 ने सुना तो दौड़े हुए आए कि हुज़ूर (सल्ल0) मैं और मेरे पास जो कुछ है सब आपका है, ख़ुदा की क़सम जो मकान आप ले लेते हैं मुझको इससे ज़्यादा ख़ुशी होती है कि वह मेरे पास रह जाए, ग़र्ज़ उन्होंने अपना एक मकान ख़ाली कर दिया, हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 उसमें उठ गईं।

शहंशाहे कौनैन ने सय्यदए आलम को जो जहेज़ दिया वह बान की चारपाई, चमड़े का गद्दा जिसके अंदर रूई के बजाए खजूर के पत्ते थे, एक छागल, एक मशक, दो चक्कियां, दो मिट्टी के घड़े।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 जब नए घर में जा लीं तो आंहज़रत सल्ल0 उनके पास तशरीफ़ ले गए, दरवाज़े पर खड़े होकर इज़्न मांगा, फिर अंदर आए एक बर्तन में पानी मंगवाया दोनों हाथ उसमें डाले और हज़रत अली रज़ि0 के सीने और बाज़ुओं पर छिड़का, फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 को बुलाया वह शर्म से लड़खड़ाती हुई आईं, उन पर भी पानी छिड़का और फ़रमाया कि मैंने अपने ख़ानदान में सबसे

अफ़ज़लतर शख़्स से तुम्हारा निकाह किया है।[1]

जाहिली हमीयत और जज़्बए इंतिक़ामे बद्र

अरब में सिर्फ़ एक शख़्स का क़त्ल लड़ाई का एक सिलसिला छेड़ देता था जो सैकड़ों बरस तक ख़त्म नहीं हो सकता था, तरफ़ैन में से जिसको शिकस्त होती थी वह इंतिक़ाम को ऐसा फ़र्ज़े मुअक्कद जानता था जिसके अदा किये बग़ैर उसकी हस्ती नहीं क़ाइम रह सकती थी, बद्र में कुरैश के सत्तर आदमी मारे गए जिनमें अक्सर वह थे जो कुरैश के ताज व अफ़सर थे, इस बिना पर तमाम मक्का जोशे इंतिक़ाम से लबरेज़ था।[2]

कुरैश का कारवाने तिजारत जो जंगे बद्र के जमाने में नफ़्ए कसीर के साथ शाम को वापस आ रहा था उसका रासुल माल हिस्सादारों को तक़सीम कर दिया गया था लेकिन ज़रे मुनाफ़ा अमानत के तौर पर महफ़ूज़ था।

कुरैश को कुश्तगाने बद्र के मातम से फ़ुर्सत मिली तो इस फ़र्ज़ की अदाइगी का ख़्याल आया, चंद सरदाराने कुरैश जिनमें अबू जह्ल का बेटा अकरमा भी था, उन लोगों को जिनके अज़ीज़ व अक़ारिब जंगे बद्र में क़त्ल हो चुके थे साथ लेकर अबू सुफ़यान के पास गए और कहा मुहम्मद (सल्ल0) ने हमारी क़ौम का ख़ातमा कर दिया, अब इंतिक़ाम

(1) सुनन अबी दाऊद किताबुन निकाह, बाब अर्रजल यदखल बअम्रअता, तफ़सीलात दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहक़ी 3-160, अलइसाबा और तबक़ात इब्ने सअ़द में मौजूद हैं, सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-366

(2) सीरतुन्नबी 1-369

का वक़्त है हम चाहते हैं कि माले तिजारत का जो नफ़ा अब तक जमा है व इस काम में सर्फ़ किया जाए, यह ऐसी दरख़्वास्त थी जो पेश होने से पहले क़बूल कर ली गई थी, लेकिन अब कुरैश को मुसलमानों की कूव्वत व ज़ोर का अंदाज़ा हो चुका था, वह जानते थे कि जंगे बद्र में जिस सामान से वह गए थे उससे अब कुछ ज़्यादा दरकार है, अरब में जोश फैलाने और दिलों को गर्माने का सबसे बड़ा आला शेअ्र था, कुरैश में दो शाइर शाइरी में मशहूर थे, अम्र जुम्ही और मसाफ़ेअ्। अम्र जुम्ही ग़ज़वए बद्र में गिरफ़्तार हो गया था लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इक़्तिज़ाए रहम से उसको रिहा कर दिया था, कुरैश की दरख़्वास्त पर वह और मसाफ़ेअ् मक्का से निकले और क़बाइले कुरैश में अपनी आतिश बयानी से आग लगा आए, लड़ाइयों में साबित क़दमी और जोशे जंग का बड़ा ज़रीआ़ ख़ातूनाने हरम थीं, जिस लड़ाई में ख़ातूनें साथ होती थीं, अरब जानों पर खेल जाते थे कि शिकस्त होगी तो औरतें बेहुर्मत होंगी, बहुत सी औरतें ऐसी थीं जिनकी औलाद जंगे बद्र में क़त्ल हो चुकी थी इसलिये वह खुद जोशे इंतिक़ाम से लबरेज़ थीं और उन्होंने मन्नतें मानी थीं कि औलाद के क़ातिलों का खून पी कर दम लेंगी, ग़र्ज़ फ़ौजें तैयार हुई तो बड़े बड़े मुअ़ज़्ज़ज़ घरानों की औरतें भी फ़ौज में शामिल हुई।[1]

हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 ने हिंदा के बाप उत्बा को बद्र में

(1) तारीख़े तबरी 3-58,59, सीरत इब्ने हिशाम 2-60,61

क़त्ल किया था, जुबैर बिन मुतइम का चचा भी हम्ज़ा रज़ि0 के हाथ से मारा गया था, इस बिना पर हिंदा ने वह्शी को जो जुबैर का गुलाम और हरबा अंदाज़ी में कमाल रखता था, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 के क़त्ल पर आमादा किया और यह इक़रार हुआ कि इस कारगुज़ारी के सिला में वह आज़ाद कर दिया जाए।(1)

हज़रत अब्बास रज़ि0 रसूलुल्लाह सल्ल0 के चचा गो इस्लाम ला चुके थे, लेकिन अब तक मक्का ही में मुक़ीम थे उन्होंने तमाम हालात लिखकर एक तेज़ रू क़ासिद के हाथ रसूलुल्लाह सल्ल0 के पास भेजे और क़ासिद को ताकीद की कि तीन दिन रात में मदीना पहुंच जाए, आंहज़रत सल्ल0 को यह ख़बरें पहुंचीं तो आपने पांचवीं शव्वाल 3 हि0 को दो ख़बर रसां जिनके नाम अनस और मोनिस थे ख़बर लाने के लिये भेजे, उन्होंने आकर इत्तिला दी कि क़ुरैश का लशकर मदीना के क़रीब आ गया, और मदीना की चरागाह (उरैज़) को उनके घोड़ों ने साफ़ कर दिया।(2)

आप सल्ल0 ने हब्बाब बिन मुंज़िर को भेजा कि फ़ौज की तअ़दाद की ख़बर लाएं, उन्होंने आकर सही तख़्मीन से इत्तिला दी, चूंकि शहर पर हमला का अंदेशा था, हर तरफ़ पहरे बिठाये गए, हज़रत सअ़द बिन उबादा और सअ़द बिन मआज़ हथियार लगा कर तमाम रात मस्जिदे नबवी के दरवाज़ा पर पहरा देते रहे।(3)

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्लु हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब

(2) व (3) सीरते हलबीया 2-490

सुब्ह को आप सल्ल0 ने सहाबा से मशवरा किया, मुहाजिरीन ने उमूमन और अंसार में से अकाबिर ने राए दी कि औरतें बाहर क़िलों में भेज दी जाएं और शहर में पनाह गीर होकर मुक़ाबला किया जाए, अब्दुल्लाह बिन उबैय बिन सलूल जो अब तक कभी शरीके मशवरा नहीं किया गया था उसने भी यही राए दी, लेकिन उन नौ ख़ेज़ सहाबा ने जो जंगे बद्र में शरीक न हो सके थे इस बात पर इस्रार किया कि शहर से निकल कर हमला किया जाए, आंहज़रत सल्ल0 घर में तशरीफ़ ले गए और ज़िरह पहन कर बाहर तशरीफ़ लाए, अब लोगों को नदामत हुई कि हमने रसूलुल्लाह सल्ल0 को ख़िलाफ़े मर्ज़ी निकलने पर मजबूर किया, सबने अ़र्ज़ की कि हम अपनी राए से बाज़ आते हैं, इर्शाद हुआ कि पैग़म्बर को ज़ेबा नहीं कि हथियार पहन कर उतार दे।[1]

उहुद के दामन में

क़ुरैश बुध के दिन मदीना के क़रीब पहुंचे और कोहे उहुद पर पड़ाव डाला, आंहज़रत सल्ल0 जुमुआ़ के दिन नमाज़े जुमुआ़ पढ़कर एक हज़ार सहाबा रज़ि0 के साथ शहर से निकले, अब्दुल्लाह बिन उबैय तीन सौ की जमईयत लेकर आया था, लेकिन यह कहकर वापस चला गया कि "मुहम्मद (सल्ल0) ने मेरी राए न मानी" आंहज़रत सल्ल0 के साथ अब सिर्फ़ सात सौ सहाबा रज़ि0 रह गये।[2] उनमें एक सौ ज़िरह

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल एअ़तिसाम, बाब क़ौलुल्लाह तआला وأمرهم شورىٰ मुस्नद अहमद 1-351, सुनन दारमी 2-129

(2) ज़ादुल मआ़द 3-194, सीरत इब्ने हिशाम 2-64

पोश थे, मदीना से निकल कर फ़ौज का जाइज़ा लिया गया और जो लोग कम्सिन थे वापस कर दिये गए, उनमें हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0, बराअ् बिन आज़िब रज़ि0, अबू सईद खुदरी रज़ि0, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 और अ़राबा उवैसी रज़ि0 भी थे, जांनिसारी का यह ज़ौक़ था कि नौजवानों में से जब राफ़ेअ़ बिन खुदैज से कहा गया, कि तुम उम्र में छोटे हो, वापस जाओ, तो वह अंगूठों के बल तन कर खड़े हो गए कि क़द ऊंचा नज़र आए, चुनांचे उनकी यह तरकीब चल गई और वह ले लिये गए, समुरा रज़ि0 एक नौजवान जवान के हमसिन थे उन्होंने यह दलील पेश की कि मैं राफ़ेअ़ को लड़ाई में पछाड़ लेता हूं, इसलिये अगर उनको इजाज़त मिलती है तो मुझको भी मिलनी चाहिये, दोनों का मुक़ाबला कराया गया और समुरा ने राफ़ेअ़ को ज़मीन पर दे मारा, इस बिना पर उनको इजाज़त मिल गई।[1]

आंहज़रत सल्ल0 ने उहुद को पुश्त पर रखकर सफ़ आराई की, मस्अ़ब बिन उमैर रज़ि0 को अलम इनायत किया, जुबैर बिन औव्वाम रज़ि0 रिसाला के अफ़सर मुक़र्रर हुए, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 को उस हिस्सए फ़ौज की कमान मिली जो ज़िरह पोश न थे,[2] पुश्त की तरफ़ एहतिमाल था कि दुशमन उधर से आएं इसलिये पचास तीर अंदाज़ों का एक दस्ता मुअ़य्यन फ़रमाया और हुक्म दिया

(1) तारीख़े तबरी 3-61, सीरत इब्ने कसीर 3-30, सीरत इब्ने हिशाम 2-66

(2) तारीख़े तबरी 3-61, 62

कि गो लड़ाई में फ़त्ह हो जाए ताहम वह जगह से न हटें, अब्दुल्लाह बिन जुबैर उन तीर अंदाज़ों के अफ़सर मुक़र्रर हुए।[1]

क़ुरैशी को बद्र में तजर्बा हो चुका था, इसलिये उन्होंने निहायत तरतीब से सफ़ आराई की, मैमना पर ख़ालिद बिन वलीद को मुक़र्रर किया, मैसरा अकरमा को दिया जो अबू जह्ल के फ़रज़ंद थे, सवारों का दस्ता सफ़वान बिन उमय्या की कमान में था जो क़ुरैश का मशहूर रईस था, तीर अंदाज़ों के दस्ते अलग थे जिनका अफ़सर अब्दुललाह बिन रबीआ़ था, तल्हा अलमबरदार था, दो सौ घोड़े ख़रीदे थे कि ज़रूरत के वक़्त काम आएं[2] सबसे पहले तबले जंग के बजाए ख़ातूने क़ुरैश दफ़ पर अशआ़र पढ़ती हुई बढ़ीं, जिनमें कुश्तगाने बद्र का मातम और इंतिक़ामे ख़ून के रिज्ज़ थे, हिंदा (अबू सुफ़यान की बीवी) आगे आगे और चौदह औरतें साथ साथ थीं, अशआ़र यह थे-

نَحْنُ بَنَاتُ طَارِقِ نَمْشِيْ عَلَى النَّمَارِق

اِنْ تُقْبِلُوْا نُعَانِقْ أَوْتُدْبُرُوْا نُفَارِق

"हम आसमान के तारों की बेटियां हैं, हम क़ालीनों पर चलने वालियां हैं, अगर तुम बढ़कर लड़ोगे तो तुम से गले मिलेंगे और अगर पीछे क़दम हटाया तो हम तुम से अलग हो जाएंगे।"[3]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद (2) तारीख़े तबरी 3-62, 63 (3) सीरत इब्ने कसीर 3-31, सीरत इब्ने हिशाम स0 27, 28, इन अशआ़र का ज़िक्र मुस्तदरक में हाकिम ने किया है और इस हदीस को इमाम ज़हबी ने सहीह क़रार दिया है 3-256

लड़ाई का आग़ाज़

लड़ाई का आग़ाज़ इस तरह हुआ कि अबू आमिर जो मदीना का एक मक़बूले आम शख़्स था डेढ़ सौ आदमियों के साथ मैदान में आया, इस्लाम से पहले ज़ुह्द और पारसाई की बिना पर तमाम मदीना उसकी इज़्ज़त करता था, चूंकि उसको ख़्याल था कि अंसार जब उसको देखेंगे तो रसूलुल्लाह सल्ल0 का साथ छोड़ देंगे, मैदान में आकर पुकारा "मुझको पहचानते हो? मैं अबू आमिर हूं "अंसार ने कहा हां ओ बदकार! हम तुझको पहचानते हैं, ख़ुदा तेरी आरजू बर न लाए।[1]

कुरैश का अलमबरदार तलहा ने सफ़ से निकल कर पुकारा, क्यों मुसलमानों में कोई है? जो मुझको जल्द दोज़ख़ में पहुंचाए या ख़ुद मेरे हाथों बहिश्त में पहुंच जाए," अली मुर्तज़ा रज़ि0 ने सफ़ से निकल कर कहा "मैं हूं" यह कहकर तलवार मारी और तलहा की लाश ज़मीन पर थी,[2] तलहा के बाद उसके बेटे उस्मान ने जिसके पीछे पीछे औरतें अशआ़र पढ़ती आती थीं, अलम हाथ में लिया और रिज्ज़ पढ़ता हुआ हमला आवर हुआ-

إِنَّ عَلَىٰ أَهْلِ اللِّوَاءِ حَقًّا أَنْ تَخْضِبَ الصَّعْدَ أَوْ تَنْدَقَّا

"नेज़ा बरदार का फ़र्ज़ है कि वह नेज़ा ख़ून में रंग दे या टकरा कर टूट जाए।"

(1) मुस्नद अहमद 4-46, मुस्तदरक हाकिम 2-107,108

(2) तारिख़े तबरी 3-63

हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 मुक़ाबला को निकले और शाना पर तलवार मारी कि कमर तक उतर आई, साथ उनकी ज़बान से निकला कि "मैं साकिये हुज्जाज का बेटा हूं" अब आम जंग शुरू हो गई[1] हज़रत हम्ज़ा रज़ि0, हज़रत अली रज़ि0, अबू दुजाना रज़ि0 फ़ौजों के दल में घुसे और सफ़ें की सफ़ें साफ़ कर दीं[2] अबू दुजाना अरब के मशहूर पहलवान थे, आंहज़रत सल्ल0 ने दस्ते मुबारक में तलवार लेकर फ़रमाया "कौन इसका हक़ अदा करता है" इस सआ़दत के लिये दफ़अ़तन बहुत से हाथ बढ़े, लेकिन यह फ़ख़्र अबू दुजाना रज़ि0 के नसीब में था, इस ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ इ़ज़्ज़त ने उनको मग़रूर कर दिया, सर पर सुर्ख़ रूमाल बांधा और अकड़ते व तनते हुए फ़ौज से निकले, आंहज़रत सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि "यह चाल खुदा को सख़्त नापसंद है लेकिन इस वक़्त पसंद है" अबू दुजाना रज़ि0 फ़ौजों को चीरते, लाशों पर लाशे गिराते, बढ़ते चले जाते थे, यहां तक कि हिंदा सामने आ गई, उसके सर पर तलवार रखकर उठा ली कि रसूलुल्लाह सल्ल0 की तलवार इस क़ाबिल नहीं है कि औरत पर आज़माई जाए।[3] हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 दो दस्ती तलवार मारते थे और जिसकी तरफ़ बढ़ते थे सफ़ें की सफ़ें साफ़ हो जाती थीं, इसी हालत में निबाअ़ ग़बशानी सामने आ गया पुकारे कि "ओ ख़त्तानतुन्निसाअ् के बच्चे! कहां जाता है?"

(1) सीरत इब्ने कसीर 3-34, सीरत इब्ने हिशाम 2-74 (2)तारीख़े तबरी (3)मुस्तदरक हाकिम 3-256, ज़हबी ने तौसीक़ फ़रमाई है, तारीख़े तबरी 3-63, सीरत इब्ने कसीर 3-30,31 इस वाकिआ के बअ़ज़ हिस्से इमाम मुस्लिम और इमाम अहमद ने भी नक़्ल फ़रमाए हैं।

यह कह कर तलवार मारी, वह ख़ाक पर ढेर था, वह्शी जो एक गुलाम था और जिससे जुबैर बिन मुत्इम उसके आक़ा ने वादा किया था कि अगर वह हम्ज़ा को क़त्ल कर दे तो आज़ाद कर दिया जाएगा वह हज़रत हम्ज़ा रज़ि० की ताक में था, हज़रत हम्ज़ा रज़ि० बराबर आए तो उसने छोटा सा नेज़ा जिसको हिर्बा कहते हैं और जो हब्शियों का ख़ास हथियार है फेंक कर मारा जो नाफ़ में लगा और पार हो गया।[1] हज़रत हम्ज़ा रज़ि० ने उस पर हमला करना चाहा लेकिन लड़खड़ा कर गिर पड़े और रूह परवाज़ कर गई।[2]

मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग का पांसा कैसे पलटा

कुफ़्फ़ार के अलम बरदार लड़ लड़ कर क़त्ल हो जाते थे ताहम अलम गिरने नहीं पाता था, एक के गिरने से दूसरा जांबाज़ बढ़कर अलम को हाथ में ले लेता था, एक शख़्स ने जिसका नाम सवाब था जब अलम हाथ में लिया तो किसी ने बढ़ कर इस ज़ोर से तलवार मारी कि दोनों हाथ कट कर गिर पड़े लेकिन वह क़ौमी अलम को अपनी आंखों से ख़ाक पर नहीं देख सकता था, अलम के गिरने के साथ सीना के बल ज़मीन पर गिरा और अलम को सीना से दबा लिया, उसी हालत में यह कहता हुआ मारा गया कि "मैंने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया" अलम देर तक पड़ा रहा, आख़िर एक बहादुर ख़ातून (उम्रह बिंते अलक़मा) दिलेराना

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़त्लु हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब

(2) सीरत इब्ने कसीर 3-34

बढ़ी और अलम को हाथ में लेकर बुलंद किया, यह देखकर हर तरफ़ से कुरैश सिमट आए और उखड़े हुए पांव फिर जम गए।[1]

अबू आमिर कुफ़्फ़ार की तरफ़ से लड़ रहा था, लेकिन उसके साहबज़ादे हज़रत हंज़ला रज़ि० इस्लाम ला चुके थे उन्होंने आंहज़रत सल्ल० से बाप के मुक़ाबला में लड़ने की इजाज़त मांगी, लेकिन रहमते आलम ने यह गवारा न किया कि बेटा अपने बाप पर तलवार उठाए, हज़रत हंज़ला रज़ि० ने कुफ़्फ़ार के सिपहसालार (अबू सुफ़यान) पर हमला किया और करीब था कि उनकी तलवार अबू सुफ़यान का फ़ैसला कर दे, दफ़अतन पहलू से शद्दाद बिन अलअस्वद ने झपट कर उनके वार को रोका और उनको शहीद कर दिया, ताहम लड़ाई का पल्ला मुसलमानों ही की तरफ़ भारी था।[2] बहादुर नाज़नीनें जोरिज्ज़ से दिलों को उभार रही थीं, बदहवासी के साथ पीछे हटीं और मतलअ् साफ़ हो गया, लेकिन साथ ही मुसलमानों ने लूट शुरू कर दी, यह देखकर तीर अंदाज़ जो पुश्त पर मुक़र्रर किये गए थे वह भी ग़नीमत की तरफ़ झुके, अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० ने बहुत रोका लेकिन वह न रुक सके।[3] तीर अंदाज़ों की जगह ख़ाली देखकर ख़ालिद ने अकब से हमला किया, अब्दुल्लाह बिन जुबैर चंद जांबाज़ों के साथ जम कर लड़े, लेकिन सबके सब शहीद हो गए, अब रास्ता साफ़ था, ख़ालिद ने सवारों

(1) सीरत इब्ने कसीर 3-43, तबरी 3-65, सीरत इब्ने हिशाम 2-78 (2) मुस्तदरक हाकिम 3-225, तबरी 3-69 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

के दस्ता के साथ निहायत बेजिग्री से हमला किया, लोग लूटने में मसरूफ़ थे, मुड़कर देखा तो तलवारें बरस रही हैं, बदहवासी में दोनों फ़ौजें इस तरह बाहम मिल गईं कि खुद मुसलमान मुसलमानों के हाथ से मारे गए।(1) मस्अब बिन उमैर जो आंहज़रत सल्ल0 से सूरत में मुशाबेह थे, इब्ने कम्ईया ने उनको शहीद कर दिया।(2) मुश्रिकीन का इतने ज़ोर का रेला आया कि अक्सर सहाबा रज़ि0 के क़दम उखड़ गए और दुशमन रसूलुल्लाह सल्ल0 तक पहुंच गए, आप सल्ल0 के चेहरा मुबारक को ज़ख़्मी कर दिया, मिग़फ़र की दो टुकड़ियां चेहरए मुबारक में चुभ कर रह गईं और दाहिनी तरफ़ का नीचे का दांत शहीद हो गया।(3) चारों तरफ़ तलवारें और तीर बरस रहे थे, आप सल्ल0 अपने पहलू पर एक गढ़े में गिर गए, हज़रत अली रज़0 ने हाथ पकड़ा और हज़रत तलहा रज़ि0 ने गोद में उठा लिया।(4)

इसी बदहवासी और परेशानी में ख़बर उड़ गई कि आप सल्ल0 शहीद हो गए, इस इज़्तिराब में अक्सरों ने हिम्मत हार दी और जो जहां था वहीं का वहीं रह गया।(5) हज़रत अनस रज़ि0 बिन नुज़र ने चंद मुसलमानों को देखा कि हथियार फेंक दिये हैं और मग़मूम बैठे हैं, पूछा! बैठे क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा कि हुज़ूर सल्ल0 शहीद हो गए,

(1) तबरी 3-63, सीरत इब्ने हिशाम 2-78
(2) तबरी 3-66, सीरत इब्ने हिशाम 2-73
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मा असाबन्नबी सल्ल0 मिनल जराह यौमा उहुद
(4) ज़ादुल मआद 3-197, सीरत इब्ने हिशाम 2-80
(5) तबरी 3-68

बोले फिर जी कर क्या करोगे? उठो! जिस पर रसूल सल्ल0 ने जान दी उस पर तुम भी जान दे दो, हज़रत अनस रज़ि0 ने मुसलमानों की तरफ़ इशारा करके कहा "ऐ अल्लाह इनके फ़ेअ्ल से मैं मअ्ज़रत करता हूं और मुश्रिकीन के अमल से मैं बरी हूं" आगे बढ़े तो सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि0 मिले, अनस ने कहा सअ़द! मुझे जन्नत की खुशबू उहुद पहाड़ के इसी तरफ़ से आ रही है, यह कहकर बड़े जोश के साथ हमला किया और शहीद हो गए, शहादत के बाद देखा गया तो जिस्म पर अस्सी से ऊपर ज़ख़्म थे और लाश पहचान नहीं पड़ती थी, उनकी बहन ने उंगली के पोर के एक निशान से पहचाना।[1] एक मुहाजिर का गुज़र एक अंसारी रज़ि0 के पास हुआ, देखा तो वह खून में लोटपोट हैं, कहा तुमको मअ़लूम है कि मुहम्मद सल्ल0 शहीद हो गए, उन्होंने जवाब दिया कि अगर आप सल्ल0 शहीद हो गए तो अपनी मुराद को पहुंच गए तुम भी अपने दीन पर जान दे दो।"[2]

मुहब्बत व जांनिसारी के नमूने और मुसलमानों का दोबारा जमाव

जांनिसाराने ख़ास बराबर लड़ते जाते थे, लेकिन निगाहें रसूल सल्ल0 को ढूंढती थीं, सबसे पहले कअ्ब बिन मालिक रज़ि0 की नज़र आप सल्ल0 पर पड़ी, चेहरए मुबारक पर

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा बद्र
(2) सीरत इब्ने कसीर 3-61

मिग़फ़र था लेकिन आंखें नज़र आती थीं, कअूब ने पहचान कर पुकारा, "मुसलमानो! रसूलुल्लाह सल्ल0 यह हैं।" यह सुन कर हर तरफ़ से जां निसार टूट पड़े।[1] कुफ़्फ़ार ने अब हर तरफ़ से हट कर इसी रुख़ पर ज़ोर दिया, दल का दल हुजूम करके बढ़ता था, हज़रत तलहा रज़ि0 ने अपने पुरजोश हमलों से उनको पीछे हटा दिया, तीरों की चारों तरफ़ से बारिश थी, हज़रत अबू दुजाना रज़ि0 ने अपनी पीठ को आप सल्ल0 पर झुका कर ढाल बना दिया,[2] तीर उनकी पीठ पर लग रहे थे और वह बेहिस व हरकत खड़े थे।[3] एक मर्तबा ज़ोर शोर का हमला हुआ, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि कौन उनको पीछे ढकेलता है और जन्नत लेता है, सात अंसारी खड़े थे, एक एक आदमी बारी बारी बढ़ता रहा और आप सल्ल0 यही फ़रमाते रहे, सातों उस जगह काम आ गए।[4] हज़रत तलहा रज़ि0 ने अपने हाथ से सिपर का काम लिया और आंहज़रत सल्ल0 की जानिब आने वाले तीर अपने हाथ से रोके, यह हाथ हमेशा के लिये शल हो गया।[5] बेदर्द रहमते आलम सल्ल0 पर तीर बरसा रहे थे और आप सल्ल0 की ज़बान पर यह अलफ़ाज़ थे, "رَبِّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ" ऐ मेरे ख़ुदा! मेरी क़ौम को

(1) तबरी 3-67, सीरत इब्ने कसीर 3-68

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-417

(3) तबरी 3-66

(4) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वए उहुद

(5) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी

बख़्श दे यह जानते नहीं''[1] हज़रत तलहा ज़ख़्म खाते खाते चूर चूर होकर गिर गए, सहाबए किराम रज़ि० जब पलट कर आए तो आप सल्ल० ने फ़रमाया तलहा (रज़ि०) की ख़बर लो उनकी हालत नाज़ुक है, लोगों ने उनको उठाया तो उन पर दस से ऊपर ज़ख़्म थे, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के भी बीस से ऊपर ज़ख़्म आए थे[2] हज़रत अबू तलहा रज़ि० जो मशहूर तीर अंदाज़ थे उन्होंने इस क़द्र तीर बरसाए कि दो तीन कमानें उनके हाथ से टूट कर रह गईं, उन्होंने सिपर आंहज़रत सल्ल० के चेहरा पर ओट कर लिया था कि आप सल्ल० पर कोई वार न आने पाए, आप सल्ल० कभी गर्दन उठाकर दुशमनों की फ़ौज की तरफ़ देखते तो अ़र्ज़ करते कि आप गर्दन न उठाएं, ऐसा न हो कि कोई तीर आकर लग जाए, यह मेरा सीना सामने है[3] हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ि० भी मशहूर तीर अंदाज़ थे और उस वक़्त आप सल्ल० के रिकाब में हाज़िर थे, आंहज़रत सल्ल० ने अपना तर्कश उनके सामने डाल दिया और फ़रमाया "तुम पर मेरे मां बाप कुर्बान" तीर मारते जाओ[4] एक दफ़ा हुजूम हुआ तो आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया "कौन मुझ पर जान देता है?" ज़ियाद बिन सकन रज़ि० पांच अंसारी लेकर इस ख़िदमत के अदा करने के लिये बढ़े और एक एक ने जांबाज़ी से लड़कर अपनी जानें फ़िदा कर दीं, ज़ियाद को

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वए उहुद (2) मुस्तदरक हाकिम 3-348, सीरत इब्ने हिशाम 2-83 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वतुन्निसाअ् मअ़रिजाल। (4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

यह शर्फ़ हासिल हुआ कि आंहज़रत सल्ल0 ने हुक्म दिया कि उनका लाशा क़रीब लाओ, लोग उठा कर लाए कुछ कुछ जान बाक़ी थी क़दमों पर रख दिया और उसी हालत में जान दी।[1]

सर बवक़्ते ज़िब्ह अपना उसके ज़ेरे पाए है
यह नसीब अल्लाहु अक्बर लौटने की जाए है

एक बहादुर मुसलमान इस आलम में भी बेपरवाई के साथ खड़ा खजूरें खा रहा था, उसने बढ़कर पूछा कि "या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! अगर मैं मारा गया तो कहां हूंगा?" आपने फ़रमाया "जन्नत में" इस बशारत से बेखुद होकर वह इस तरह कुफ़्फ़ार पर टूट पड़ा कि मारा गया।[2] ऐन उस वक़्त जबकि काफ़िरों ने आम हमला कर दिया था और आप सल्ल0 के साथ सिर्फ़ चंद जांनिसार रह गए थे, उम्मे अम्मारा रज़ि0 आंहज़रत सल्ल0 के पास पहुचीं और अपना सीना सिपर कर दिया, कुफ़्फ़ार जब आप सल्ल0 पर बढ़ते थे तो तीर और तलवार से रोकती थीं, इब्ने क़म्ई जब दर्राता हुआ आंहज़रत सल्ल0 के पास पहुंच गया तो उम्मे अम्मारा रज़ि0 ने बढ़ कर रोका, चुनांचे कंधे पर ज़ख़्म आया और ग़ार पड़ गया, उन्होंने भी तलवार मारी लेकिन वह दोहरी ज़िरह पहने हुए था इसलिये कारगर न हुई।[3]

उबैय बिन ख़लफ़ लोहे में डूबा हुआ आपकी तरफ़ बढ़ा,

(1) तबरी 3-65, 66, सीरत इब्ने हिशाम 2-81
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद
(3) सीरत इब्ने कसीर 3-67, सीरत इब्ने हिशाम 2-81, 82

वह यह कहता जाता था कि अगर मुहम्मद (सल्ल0) बच गए तो मेरी ख़ैर नहीं, उसने मक्का में आप सल्ल0 को शहीद करने की क़सम खाई थी, उसकी एक हंसली, ज़िरह और खुद के दर्मियानी सूराख़ से नज़र आ रही थी, आंहज़रत सल्ल0 ने उस पर नेज़ा से वार किया और वह घोड़ा से गिर गया, उसके साथियों ने उसको उठाया, वह बैल की तरह चिल्लाता था, लोगों ने उससे कहा कि घबराने की क्या बात है, यह तो एक मअ़मूली ख़राश है, उसने कहा कि तुमको मअ़लूम नहीं कि मुहम्मद (सल्ल0) ने कहा था कि वह मुझे क़त्ल करेंगे, मुझे इस ज़ख़्म की इतनी तकलीफ़ है कि वह अगर जुल मजाज़ की बस्ती पर तक़सीम कर दी जाए तो वह सब मर जाएं, उबैय बिन ख़लफ़ राबिग़ पहुच कर मर गया।[1]

सहाबए किराम रज़ि0 सब तरफ़ से आपके पास आकर जमा हो गए, ख़ौद की एक कड़ी रुख़्सार मुबारक में धंस गई थी, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 कहते हैं कि मैं उसको निकालने चला, अबू उबैदा रज़ि0 ने खुदा की क़सम देकर मुझसे कहा कि मुझे इसका मौक़ा दो, उन्होंने दांतों में उसको दबा कर इस तरह आहिस्ता आहिस्ता निकालना शुरू किया कि हुजूर सल्ल0 को तकलीफ़ न हो, कड़ी निकल आई और उसके साथ अबू उबैदा का दांत उखड़ गया, मैं दूसरी कड़ी को निकालने के लिये बढ़ा, अबू उबैदा ने फिर

(1) तबरी 3-67, सीरत इब्ने कसीर 3-69, सीरत इब्ने हिशाम 2-84

क़सम दी और इसी तरह आहिस्ता आहिस्ता निकालना शुरू किया और उनका दूसरा दांत भी उखड़ गया[1] मालिक बिन सनान अंसारी रज़ि0 ने रुख़्सार मुबारक के खून को चूस लिया, आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि कुल्ली कर दो, उन्होंने अ़र्ज़ किया बखुदा कभी कुल्ली न करूंगा, जब वहां से चले तो हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया कि अगर किसी को जन्नती देखने का शौक़ हो तो इन्हें देख ले''[2]

आप सल्ल0 की वफ़ात की ख़बर मदीना पहुंची तो इख़्लास शिआ़र निहायत बेताबी के साथ दौड़े, जनाब फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि0 ने आकर देखा तो अभी तक चेहरए मुबारक से खून जारी था, हज़रत अली रज़ि0 सिपर में भर कर पानी लाए, जनाब सय्यदा धोती थीं लेकिन खून नहीं थमता था, बिलआख़िर चटाई का एक टुक्ड़ा जलाया और ज़ख़्म पर रख दिया खून फ़ौन थम गया[3] आप सल्ल0 ने एक चट्टान पर चढ़ना चाहा लेकिन ना ताक़ती से चढ़ नहीं सके, हज़रत तलहा रज़ि0 बैठ गए और अपने को ज़ीना बना दिया,[4] नमाज़ का वक़्त हुआ तो आपने बैठे बैठे नमाज़ पढ़ाई।[5]

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-29, किताबुल मग़ाज़ी वस्सियर

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-65, सीरत इब्ने हिशाम 2-80

(3) सहीहुल बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब मा असाबुन्नबी सल्ल0 मिनल जराह यौमा उहुद, सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद वस्सियर बाब ग़ज़वए उहुद

(4) मुस्तदक हाकिम 3-28, किताबुल मग़ाज़ी वस्सियर, इमाम ज़हबी ने इसको मुस्लिम की शर्त पर क़रा दिया है।

(5) ज़ादुल मआ़द 3-197, सीरत इब्ने हिशाम 7-86,87

इस जंग में बअ़ज़ सहाबा रज़ि0 ने आंहज़रत सल्ल0 से (जबकि हुज़ूर सल्ल0 को भी कई ज़ख़्म आए थे) अ़र्ज़ किया "काश आप मुश्रिकीन पर बद्दुआ फ़रमाएं, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया-

اِنِّیْ لَمْ اُبْعَثْ لَعَّانًا وَلٰکِنْ بُعِثْتُ دَاعِیًا وَرَحْمَةً، اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ

मैं लअ़नत करने के लिये नबी नहीं बनाया गया, मुझे तो ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाला और सरापा रहमत बनाया गया है, ऐ ख़ुदा! मेरी क़ौम को हिदायत फ़रमा, क्योंकि वह मुझे जानते नहीं।[1]

रसूलुल्लाह सल्ल0 साबित क़दमों के साथ पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए कि दुशमन इधर नहीं आ सकते, अबू सुफ़यान ने देख लिया, फ़ौज लेकर पहाड़ी पर चढ़ा, लेकिन हज़रत उमर रज़ि0 और चंद सहाबा रज़ि0 ने पत्थर बरसाए जिससे वह आगे न बढ़ सका।[2] अबू सुफ़यान ने सामने की पहाड़ी पर चढ़ कर पुकारा कि यहां मुहम्मद (सल्ल0) हैं? आप सल्ल0 ने हुक्म दिया कोई जवाब न दे, अबू सुफ़यान ने हज़रत अबू बक्र रज़ि0 और उमर रज़ि0 का नाम लेकर पुकारा, और जब कुछ आवाज़ न आई, तो पुकार कर बोला सब मारे गए, हज़रत उमर रज़ि0 से ज़ब्त न हो सका बोल उठे ओ दुशमने ख़ुदा! हम सब ज़िंदा हैं,

अबू सुफ़यान ने कहा:

"اُعْلُ هُبَل" "ऐ हुबल! तू ऊंचा रह"

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-111, बहवाला अश्शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ स0 48

(2) सीरत इब्ने कसीर 3-45

सहाबा रज़ि0 ने आंहज़रत सल्ल0 के हुक्म से कहाः
"اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلُّ" "अल्लाह ऊंचा है और बड़ा है"

अबू सुफ़यान ने कहाः
"لَنَا الْعُزّٰى وَلَا عُزّٰى لَكُمْ" "हमारे पास उज़्ज़ा है, तुम्हारे पास नहीं,

सहाबा रज़ि0 ने कहाः
"اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ" "ख़ुदा हमारा आक़ा है और तुम्हारा कोई आक़ा नहीं"

अबू सुफ़यान ने कहाः आज का दिन बद्र के दिन का जवाब है, फ़ौज के लोगों ने मुर्दों के नाक कान काट लिये हैं, मैंने यह हुक्म नहीं दिया था लेकिन मुझको मअ़लूम हुआ तो कुछ रंज भी नहीं हुआ।[1]

चंद मुहद्दा का हाल

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 कहते हैं मुझे रसूलुल्लाह सल्ल0 ने सअ़द बिन अर्रबीअ़ को देखने के लिये भेजा और मुझसे फ़रमाया कि वह अगर तुमको मिल जाएं तो उनको मेरा सलाम कहना कि रसूलुल्लाह सल्ल0 पूछते हैं तुम अपने को किस हाल में पाते हो? ज़ैद कहते हैं कि मैं लाशों को देखता फिरता था कि मेरी नज़र सअ़द पर पड़ी, उनका दमे वापसीं था, उनके जिस्म में नेज़े, तलवार के सत्तर ज़ख़्म थे, मैंने कहा सअ़द! रसूलुल्लाह सल्ल0 तुमको सलाम कहते हैं और फ़रमाते हैं तुम किस हाल में हो? उन्होंने जवाब दिया

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

कि हुज़ूर सल्ल0 को मेरा सलाम कहना और अ़र्ज़ करना कि मुझे जन्नत की ख़ुशबू आ रही है, मेरी क़ौम अंसार से मेरा प्याम कहना कि "जब तक एक झपकने वाली आंख भी तुम में से बाक़ी है उस वक़्त तक अगर दुशमन नबी सल्ल0 तक पहुंच गया तो ख़ुदा के हुज़ूर में तुम कोई उज़्र पेश न कर सकोगे" यह कहकर उनकी रूह परवाज़ कर गई।(1)

शुहदा में देखा गया तो अ़म्र बिन साबित की भी लाश थी, उनका लक़ब उसैरम है, यह क़बीला बनी अब्दुल अश्हल से तअ़ल्लुक़ रखते थे, उहुद के मअ़रके से पहले उनको इस्लाम से हमेशा इंकार रहा, उहुद के दिन दफ़अ़तन उनके दिल में इस्लाम का जज़्बा पैदा हुआ, आंहज़रत सल्ल0 और सहाबए किराम रज़ि0 तशरीफ़ ले जा चुके थे, यह मुसलमान हुए तलवार हाथ में ली और जंग में शरीक हो गए, किसी को इसकी इत्तिला नहीं हुई, जब मैदान साफ़ हुआ और बनी अब्दुल अश्हल अपने क़बीला के शुहदा की तलाश में निकले तो देखा कि उसैरम भी ज़ख़्मी पड़े हैं और कुछ सांस बाक़ी है, उन्होंने कहा यह तो उसैरम मअ़लूम होते हैं, यह यहां कहां, यह तो इस्लाम के मुन्किर थे, फिर उन्होंने उनसे पूछा कि तुम यहां कैसे आए? क्या क़ौम की हमीय्यत में या इस्लाम की मुहब्बत में? उन्होंने कहा नहीं बल्कि इस्लाम की मुहब्बत में, मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया और मैंने आंहज़रत सल्ल0 के साथ जिहाद में शिर्कत की और इस सआ़दत को पहुंचा, यह कहकर

(1) मुस्तदर हाकिम 3-221, किताब मअ़रिफ़तुस्सहाबा, ज़िक्रे मनाकिब सअ़द बिन रबीअ़ रज़ि0

उनकी रूह परवाज़ कर गई, लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल0 से तज़किरा किया, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः "वह जन्नती हैं" हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 कहते हैं कि उसैरम को एक वक़्त की नमाज़ पढ़ने की भी नौबत नहीं आई, (इस्लाम लाने के बाद ही शहीद हो गए)[1]

उन्ही शुहदा में हज़रत जाबिर के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह अम्र भी थे, उन्होंने उहुद से पहले हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुंज़िर को (जो बद्र में शहीद हो चुके थे।) ख़्वाब में देखा कि वह उनसे कह रहे हैं कि तुम हमारे पास चंद ही दिन में आने वाले हो, उन्होंने कहा तुम कहां हो? मुबश्शिर ने कहा जन्नत में, यहां हम आज़ादी के साथ चलते फिरते हैं, अब्दुल्लाह ने कहा क्या तुम बद्र में शहीद नहीं हुए? उन्होंने कहा हां! लेकिन फिर मुझे ज़िंदा कर दिया गया, हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने इसका ज़िक्र रसूलुल्लाह सल्ल0 से किया, आप सल्ल0 ने फ़रमाया "यह शहादत की तरफ़ इशारा है"[2] हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि मेरे वालिद की लाश को आंहज़रत सल्ल0 के पास लाया गया, दुशमनों ने उनके अअ़ज़ा काटे थे, जब आप सल्ल0 के सामने उनको रखा गया तो मैं उनका मुंह खोलने चला तो लोगों ने मुझे मना किया, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः कि फ़रिशते बराबर इन पर साया करते रहे हैं।[3]

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-30, मुस्नद अहमद 5-428, 429

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-225

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मन क़ुतिला मिनल मुस्लिमीन यौम उहुद

उन्ही शुहदा में हज़रत ख़ैसमा भी थे, उनके बेटे बद्र में शहीद हुए थे, उन्होंने आंहज़रत सल्ल0 से अ़र्ज़ किया कि बद्र की लड़ाई से मैं रह गया, हालांकि मुझे इसका बड़ा शौक़ था, लेकिन कुर्आ में मेरे बेटे का नाम निकला और शहादत उन्हीं के नसीब में थी, या रसूलुल्लाह सल्ल0 मैंने रात अपने बेटे को ख़्वाब में देखा, बेहतरीन शक्ल व सूरत है, जन्नत के मेवों और नहरों के दर्मियान चलता फिरता है और मुझसे कहता है कि मुझसे आ मिलो, साथ रहेंगे, मेरे रब ने मुझसे जो कुछ वादा किया मैंने हक़ पाया, खुदा की क़सम या रसूलुल्लाह सल्ल0 अब मैं जन्नत में उसकी रिफ़ाक़त का बहुत मुशताक़ हूं, मेरी उम्र भी बहुत हो गई, ज़ईफ़ी का ज़माना है, अब मुझे अपने रब की मुलाक़ात ही का शौक़ है, आप अल्लाह से दुआ फ़रमाइये कि जन्नत में रिफ़ाक़त नसीब फ़रमाए, आप सल्ल0 ने उनके हक़ में दुआ की और वह उहुद में शहीद हो गए।(1)

उन्ही शुहदा में अब्दुर्रहमान बिन जहश रज़ि0 भी थे, उन्होंने कहा था कि ऐ अल्लाह! तुझको क़सम है कि कल मेरा दुशमन का सामना हो वह मुझे क़त्ल करें, फिर मेरा पेट फाड़ें और नाक कान काटें, फिर तू मुझसे सवाल करे कि यह सब किस लिये हुआ? मैं कहूं यह सब तेरी ख़ातिर हुआ।(2)

उन्ही शुहदा में अ़म्र बिन अलजमूह रज़ि0 भी थे, उनके पांव में सख़्त लंग था, उनके चार जवान जवान बेटे थे.....

(1) ज़ादुल मआ़द 3-208

(2) असदुल ग़ाबा 3-91, ज़ादुल मआ़द 3-208

Maktab-e-Ashraf

.....जब उहुद का मअ़रका पेश आया तो अ़म्र रज़ि0 ने भी मैदान का इरादा किया, बेटों ने कहा अल्लाह ने आपको जिहाद से मुआफ़ी दी है, आप घर में रहें और हम लड़ने जाएं, वह आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0 मेरे बेटे मुझे जिहाद से रोकते हैं, मैं तो उम्मीद करता हूं कि मैं शहीद हूं और अपने इस लंगड़े पांव से जन्नत में चलूं, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि "अल्लाह ने तुमको जिहाद से रुख़्सत दी है" और उनके बेटों से फ़रमाया कि "तुम्हारा क्या हरज है इनको जाने दो शायद अल्लाह इनको शहादत नसीब करे।"[1]

उन्ही शुहदा में हज़रत मस्अ़ब बिन उमैर रज़ि0 भी थे, जिनके बदन पर इस्लाम से पहले दो सौ रूपये से कम की पौशाक नहीं होती थी, वह सिर्फ़ एक कम्मल छोड़कर शहीद हुए थे, जो इतना छोटा था कि कफ़न देने में जब उनका सर छिपाया जाता था तो पांव खुल जाते थे और जब पैर छिपाए जाते थे तो सर खुल जाता था, आंहज़रत सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि कम्मल से सर छिपा दो और पांव पर घास डाल दो।[2]

इसी जंग में नबी सल्ल0 के महबूब चचा शेरे ख़ुदा हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 भी शहीद हुए, दुशमनों ने उनके अअ़ज़ा काट कर उनकी लाश को बेहुर्मत किया था, हिंदा ज़ौजा अबू सुफ़यान ने उन फूलों का हार बनाया और अपने गले

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-220, सीरत इब्ने हिशाम 2-80

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मुसअ़ब उ़मैर

में डाला, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 की लाश पर गई और उनका पेट चाक करके कलेजा निकाला और चबा गई, लेकिन गले से उतर न सका इसलिये उगल देना पड़ा।(1)

हज़रत सफ़ीया रज़ि0 (हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 की बहन) शिकस्त की ख़बर सुन कर मदीना से निकलीं, आंहज़रत सल्ल0 ने उनके साहबज़ादे हज़रत ज़ुबैर को बुलाकर इर्शाद फ़रमाया कि हम्ज़ा की लाश न देखने पाएं, ज़ुबैर ने आंहज़रत सल्ल0 का पैग़ाम सुनाया, बोलीं कि मैं अपने भाई का माजिरा सुन चुकी हूं, लेकिन ख़ुदा की राह में यह कोई बड़ी क़ुर्बानी नहीं, आंहज़रत सल्ल0 ने इजाज़त दी, लाश पर गईं, ख़ून का जोश था और अज़ीज़ भाई के टुक्ड़े बिखरे पड़े थे लेकिन "اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ" कहकर चुप हो रहीं और मग़रिफ़रत की दुआ मांगी।(2)

ख़ातूनाने इस्लाम की ख़िदमत गुज़ारी व जांनिसारी

इस ग़ज़वा में अक्सर ख़ातूनाने इस्लाम ने भी शिर्कत की, हज़रत आइशा रज़ि0 और उम्मे सुलैम रज़ि0 जो हज़रत अनस रज़ि0 की मां थीं, ज़ख़्मियों को पानी पिलाती थीं, सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ि0 से मनक़ूल है कि "मैंने आइशा और उम्मे सुलैम रज़िअल्लाहु अन्हुमा को देखा कि पाएंचे चढ़ाए हुए मशक भर भर कर लाती थीं और ज़ख़्मियों को पानी पिलातीं थीं, मशक ख़ाली हो जाती थी तो जाकर फिर भर लाती थीं।(3) एक रिवायत में है कि उम्मे सुलैत

(1) सीरत इब्ने कसीर 3-74, इब्ने हिशाम 2-91 (2) मुस्तदरक हाकिम 3-218, तारीख़े तबरी 3-72 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए उहुद

रज़ि0 ने भी जो हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 की मां थीं यही ख़िदमत अंजाम दी।[1]

अंसार में से एक अफ़ीफ़ा के बाप, भाई, शौहर सब इस मअ्रका में मारे गए थे, बारी बारी तीन हादसों की सदा उनके कानों में पड़ी थी, लेकिन वह हर बार सिर्फ़ यह पूछती थीं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 कैसे हैं? लोगों ने कहा बख़ैर हैं, उन्होंने पास आकर चेहरए मुबारक देखा और बेइख़्तियार पुकार उठीं: "كُلُّ مُصِيبَةٍ بَعْدَكَ جَلَلٌ"[2] आप के होते सब मुसीबतें हेच हैं"

मैं भी और बाप भी, शौहर भी, बिरादर भी फ़िदा
ऐ शहे दीं तिरे होते हुए क्या चीज़ हैं हम

मुसलमानों की तरफ़ सत्तर आदमी मारे गए जिनमें ज़्यादातर अंसार थे, लेकिन मुसलमानों के इफ़लास का यह हाल था कि इतना कपड़ा भी न था कि शोहदा की पर्दा पोशी हो सकती, शुहदा बे गुस्ल उसी तरह खून में लुथड़े हुए, दो दो मिलाकर एक क़ब्र में दफ़्न किये गए, जिसको कुर्आन ज़्यादा याद होता उसको मुक़द्दम किया जाता,[3] आठ बरस बाद (वफ़ात से एक दो बरस पहले) जब आप उधर से गुज़रे तो बेइख़्तियार आप पर रिक़्क़त तारी हुई और इस तरह आपने पुर दर्द कलिमात इर्शाद फ़रमाए जैसे कोई ज़िंदा किसी मुर्दा से रुख़्सत हो रहा हो, और इसके बाद आप सल्ल0 ने

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ज़िक्रे उम्म सुलैत

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-99, सीरत इब्ने कसीर 3-93, तबरी 3-74

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मन क़ुतिला मिनल मुस्लिमीन यौम उहुद

सुफ़यान से मिला, अबू सुफ़यान ने अपना इरादा ज़ाहिर किया, मअ्बद ने कहा "मैं देखता आता हूं कि मुहम्मद (सल्ल0) इस सर व सामान से आ रहे हैं कि उनका मुक़ाबला नामुम्किन है, ग़र्ज़ अबू सुफ़यान वापस चला गया।"[1]

आंहज़रत सल्ल0 मदीना में तशरीफ़ लाए तो तमाम मदीना मातम कदा था, आप सल्ल0 जिस तरफ़ से गुज़रते थे घरों से मातम की आवाज़ें आती थीं, आपको इबरत हुई कि सबके अज़ीज़ व अक़ारिब मातमदारी का फ़र्ज़ अदा कर रहे हैं, लेकिन हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 का कोई नौहा ख़्वां नहीं है, रिक़्क़त के जोश में आपकी ज़बान मुबारक से बेइख़्तियार निकला "أَمَّا حَمْزَةَ فَلَا بَوَاكِيَ لَهُ" लेकिन हम्ज़ा (रज़ि0) का कोई रोने वाला नहीं।"

अंसार ने यह अलफ़ाज़ सुने तो तड़प उठे, सबने जाकर अपनी बीबियों को हुक्म दिया कि दौलत कदा पर जाकर हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 का मातम करो, आंहज़रत सल्ल0 ने देखा तो दरवाज़े पर पर्दा नशीनाने अंसार की भीड़ थी और हम्ज़ा रज़ि0 का मातम बुलंद था, उनके हक़ में दुआए ख़ैर की और फ़रमाया कि मैं तुम्हारी हमदर्दी का शुक्र गुज़ार हूं, लेकिन मुर्दों पर नौहा करना जाइज़ नहीं।[2]

---

(1) मुस्नद अहमद 2-84, इब्ने हिशाम 2-100 ता 104

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-215, ज़हबी ने हदीस की तस्हीह फ़रमाई है, इब्ने हिशाम 2-99

उज़ल व क़ारा और बीरे मऊना के दिलदोज वाक़िआत और ख़ुबैब रज़ि० की जवांमर्दी

जंगे उहुद के बाद दुश्मनों ने मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने और पामाल करने की मुख़्तलिफ़ तदाबीर पर अमल किया, चुनांचे 4 हि0 में क़ुरैश ने क़ौमे उज़ल और क़ारा के सात शख़्सों को गांठ कर मदीना में नबी सल्ल0 के पास भेजा कि हमारे क़बीले इस्लाम लाने को तैयार हैं, हमारे साथ मुअल्लिम कर दीजिये।[2] रसूलुल्लाह सल्ल0 ने दस बुज़ुर्ग सहाबा को जिनके सरदार आसिम बिन साबित रज़ि0 थे उनके साथ कर दिया, जब यह सहाबा रज़ि0 उनकी ज़द में पहुंच गए तो उनके दो सौ जवान आए कि उन्हें ज़िंदा गिरफ़्तार कर लें, तीर अंदाज़ों ने उनसे कहा कि "उतर आओ हम तुम को अम्न देते हैं" हज़रत आसिम रज़ि0 ने कहा "मैं काफ़िर की पनाह में नहीं आता।" यह कहकर ख़ुदा से ख़िताब किया कि "अपने पैग़म्बर को ख़बर पहुंचा दे" ग़र्ज़ वह मअ़ सात आदमियों के लड़कर तीरअंदाज़ों के हाथ शहीद हो गए।[2] क़ुरैश ने चंद आदमियों को भेजा कि आसिम रज़ि0 के बदन से गोश्त का एक लोथड़ा काट लाएं कि उनकी शनाख़्त न हो, क़ुदरते ख़ुदावंदी ने शहीद मुस्लिम की यह तह्क़ीर गवारा न की, शहद की मक्खियों ने लाश पर परा डाल दिया, क़ुरैश नाकाम फिर गए।[3] लेकिन दो

(1) तबक़ात इब्ने सअ़द 2-50

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुर्रजीअ़

(3) सीरत इब्ने हिशाम 2-171

शख़्सों ने जिनके नाम ख़ुबैब रज़ि0 और ज़ैद रज़ि0 थे काफ़िरों के वादों पर एतिमाद किया और टीकरे से उतर आए, सुफ़यान हुज़ली मक्का में ले गया और कुरैश के पास फरोख़्त कर आया, कुरैश ने उन्हें हारिस बिन आमिर के घर में चंद रोज़ भूका प्यासा क़ैद रखा, एक दिन हारिस का बच्चा खेलता हुआ हज़रत ख़ुबैब रज़ि0 के पास पहुंच गया, उनके पास उस वक़्त उस्तुरा था, उन्होंने बच्चा को ज़ानों पर बिठा लिया, जब बच्चा की मां ने यकायक देखा कि उसका बच्चा क़ैदी के पास है, जिसे चंद रोज़ से उन्होंने बे आब व दाना रखा था और उसके पास उस्तुरा भी है, तो बे इख़्तियार चीख़ मारी, हज़रत ख़ुबैब रज़ि0 ने कहाः यह समझती है कि मैं बच्चा को क़त्ल कर दूंगा, नहीं जानती कि मुसलमानों का काम ग़दर करना नहीं।

ज़ालिम कुरैश वालों ने चंद रोज़ के बाद हज़रत ख़ुबैब रज़ि0 को सलीब के नीचे ले जाकर खड़ा कर दिया और कहा "अगर इस्लाम छोड़ दो तो तुम्हारी जाँ बख़्शी हो सकती है" दोनों बुज़ुर्गवार ने जवाब दिया कि "जब इस्लाम न बाक़ी रहा तो जान रखकर क्या करेंगे।"

अब कुरैश ने पूछा कि कोई तमन्ना हो तो बयान करो, हज़रत ख़ुबैब रज़ि0 ने कहा कि दो रक्अत नमाज़ पढ़ लेने की हमें मोहलत दी जाए, मोहलत दी गई तो उन्होंने नमाज़ अदा की, हज़रत ख़ुबैब रज़ि0 ने कहा मैं नमाज़ में ज़्यादा वक़्त सर्फ़ करता, लेकिन सोचा कि दुशमन यह न कहें कि

मौत से डर गया है, बेरहमों ने दोनों को सलीब पर लटकाया और नेज़ा वालों से कहा कि नेज़ा की उनी से उनके जिस्मों के एक एक हिस्सा पर चर्के लगाएं।(1)

अल्लाहु अक्बर! उनका दिल इस्लाम पर कितना क़ाइम था, उनको दीने हक़ पर कितनी इस्तिक़ामत थी, उनको हमेशा की नजात और खुदा की खुशनूदी का कितना यक़ीन था कि इन तमाम तकलीफ़ों और ज़ख़्मों को बर्दाश्त करते हुए उफ़ तक न की।

एक सख़्त दिल ने हज़रत खुबैब रज़ि0 के जिगर को छेदा और पूछा कहो अब तुम भी पसंद करते होगे कि मुहम्मद (सल्ल0) फंस जाएं और मैं छूट जाऊं, खुबैब रज़ि0 ने निहायत जोश से जवाब दिया "खुदा जानता है मैं तो यह भी नहीं पसंद करता कि मेरी जान बच जाने के लिये नबी सल्ल0 के पांव में कांटा भी लगे।(2)

खुदा के इस बरगुज़ीदा बंदा फ़तल फ़ित्यान (जवांमर्द तरीन जवांमर्दान) ने मक़्तल और तमाशाइयों के हुजूम में सलीब के नीचे खड़े होकर फ़िलबदीह अश्आ़र कहे हैं, उनसे इस मंज़र की पूरी कैफ़ियत और उस बुज़ुर्गवार की सदाक़त व मुहब्बते इस्लाम की पाकीज़ा सूरत नज़र आती है:

"अंबोह दर अंबोह लोग मेरे गिर्द अगर खड़े हो रहे हैं
और उन्होंने बड़ी बड़ी जमाअतों को बुला लिया है,

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुर्रजीअ़ व रअ़ल व ज़कवान
(2) ज़ादुल मआ़द 3-245

मौत से डर गया है, बेरहमों ने दोनों को सलीब पर लटकाया और नेज़ा वालों से कहा कि नेज़ा की उनी से उनके जिस्मों के एक एक हिस्सा पर चर्के लगाएं।(1)

अल्लाहु अक्बर! उनका दिल इस्लाम पर कितना क़ाइम था, उनको दीने हक़ पर कितनी इस्तिक़ामत थी, उनको हमेशा की नजात और खुदा की खुशनूदी का कितना यक़ीन था कि इन तमाम तकलीफ़ों और ज़ख़्मों को बर्दाश्त करते हुए उफ़ तक न की।

एक सख़्त दिल ने हज़रत खुबैब रज़ि0 के जिगर को छेदा और पूछा कहो अब तुम भी पसंद करते होगे कि मुहम्मद (सल्ल0) फंस जाएं और मैं छूट जाऊं, खुबैब रज़ि0 ने निहायत जोश से जवाब दिया "खुदा जानता है मैं तो यह भी नहीं पसंद करता कि मेरी जान बच जाने के लिये नबी सल्ल0 के पांव में कांटा भी लगे।(2)

खुदा के इस बरगुज़ीदा बंदा फ़तल फ़ित्यान (जवांमर्द तरीन जवांमर्दान) ने मक़्तल और तमाशाइयों के हुजूम में सलीब के नीचे खड़े होकर फ़िलबदीह अश्आ़र कहे हैं, उनसे इस मंज़र की पूरी कैफ़ियत और उस बुज़ुर्गवार की सदाक़त व मुहब्बते इस्लाम की पाकीज़ा सूरत नज़र आती है:

"अंबोह दर अंबोह लोग मेरे गिर्द अगर खड़े हो रहे हैं
और उन्होंने बड़ी बड़ी जमाअतों को बुला लिया है,

(1) सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुर्रजीअ़ व रअ़ल व ज़कवान
(2) ज़ादुल मआ़द 3-245

यह सब के सब अदावत निकाल रहे हैं और मेरे ख़िलाफ़ जोश दिखा रहे हैं, और मैं इस हलाकत गाह में बंधा हुआ हूं, क़बीलों ने अपनी औरतों और बच्चों को भी बुला रखा है और मुझे एक मज़बूत बुलंद लकड़ी के पास ले आए हैं, उन्होंने कह दिया है कि कुफ़्र इख़्तियार करने से मुझे आज़ादी मिल सकती है मगर इससे तो मौत मेरे लिये ज़्यादा सहल है, मेरी आंखों से लगातार आंसू जारी हैं, मगर मुझे कुछ ना शकेबाई नहीं, मैं दुशमन के सामने न आजिज़ी करूंगा और न रोऊं चिल्लाऊंगा, मैं जानता हूं कि मैं खुदा की तरफ़ जा रहा हूं, मौत से मुझे इसलिये डर नहीं कि मर जाऊंगा, लेकिन मैं तो लपट वाली आग के खून चूसने से डरता हूं, इस अर्शे अज़ीम के मालिक ने मुझ से कोई ख़िदमत लेनी चाही और मुझे शकेबाई के लिये फ़रमाया है, अब उन्होंने ज़द व कोब से मेरा तमाम गोश्त कूट कूट दिया है और मेरी उम्मीद जाती रही है, मैं अपनी दरमांदगी और बेवतनी व बेकसी की फ़रयाद और उन इरादों की (जो मेरे जान तोड़ने के बाद यह लोग रखते हैं) खुदा से करता हूं, बखुदा जब मैं इस्लाम पर जान दे रहा हूं तो मैं यह परवाह नहीं करता कि राहे खुदा में किस पहलू पर गिरता और क्योंकर जान देता हूं, खुदा की ज़ात से अगर वह चाहे यह बिल्कुल उम्मीद है कि वह पारहाए गोश्त के हर एक टुक्ड़े को बरकत अता फ़रमाए।"[1]

(1) ज़ादुल मआ़द 3-245, इब्ने हिशाम 2-176

सबसे आख़िर में यह दुआ थी:

أَللّٰهُمَّ إِنَّا قَدْ بَلَّغْنَا رِسَالَةَ رَسُولِكَ فَبَلِّغْهُ الْغَدَاةَ مَايَصْنَعُ بِنَا.

"ऐ खुदा हमने तेरे रसूल सल्ल0 के अहकाम उन लोगों को पहुंचा दिये, अब तू अपने रसूल सल्ल0 को हमारे हाल की और उनके करतूतों की ख़बर फ़रमा दे।"(1)

सईद बिन आमिर रज़ि0 (जो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के उम्माल में से थे) का हाल यह था कि कभी कभी यकबारगी बेहोश हो जाया करते, उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने उनसे वजह पूछी वह बोले मुझे न कोई मर्ज़ है, न कुछ शिकायत है, जब खुबैब रज़ि0 को सलीब पर चढ़ाया गया तो मैं मज्मा में मौजूद था, मुझे जिस वक़्त खुबैब की बातें याद आ जाती हैं तो मैं कांप कर बेहोश हो जाता हूं।(2)

अबू बराअ् आमिर ने भी ऐसा ही फ़रेब किया, वह नबी सल्ल0 की ख़िदमत में आया और अ़र्ज़ की कि मुल्के नज्द की तअ़लीम व हिदायत के कुछ मुनादी मेरे साथ भेज दीजिये, उसका भतीजा नज्द का रईस था, आमिर ने यक़ीन दिलाया था कि मुनादी करने वालों की हिफ़ाज़त की जाएगी, नबी सल्ल0 नें मुंज़िर बिन अ़म्र अंसारी रज़ि0 को मअ़ सत्तर सहाबा रज़ि0 जो क़ुर्राअ् व फ़ुज़ला व मुंतख़ब बुज़ुर्गवार थे, उसके साथ कर दिया, जब वह बीरे मऊना पर जा पहुंचे, जो बनी आमिर का इलाक़ा था वहां से हराम बिन, मल्हान को नामए नबवी सल्ल0 देकर तुफ़ैल हाकिम के पास भेजा

(1) व (2) इब्ने हिशाम 2-173

गया, उसने उस सफ़ीर को क़त्ल करा दिया, जब्बार बिन सलमा एक शख़्स था, जिसने हाकिम के इशारे से उनकी पुश्त में नेज़ा मारा था जो छाती से साफ़ निकल गया, उन्होंने गिरते हुए कहा "فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ" "क़सम है कअ़बा के ख़ुदा की मैं अपनी मुराद को पहुंच गया।"

क़ातिल पर इस फ़िक़रह ने ऐसा असर किया कि वह नबी सल्ल0 की ख़िदमत में आकर मुसलमान हो गया, हाकिम ने बाक़ी सब को भी क़त्ल करा दिया, कअ़ब बिन ज़ैद ने जो कुश्तगाने ख़ंजरे तस्लीम की ओट में छिप कर बच रहे थे, इस वाक़िआ की ख़बर आंहज़रत सल्ल0 को पहुंचाई।[1]

बनू नज़ीर की जिलावतनी

बनी इस्राईल (यहूद) अपने इब्तिदाई ज़माना में ख़ुदा की मक़्बूल और बरगुज़ीदा क़ौम थी, लेकिन आख़िर दौर में वह ख़ुदा से इस क़दर दूर होते गए कि ख़ुदा के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ ठहरे।

हज़रत मसीह अलै0 जैसे रहम दिल ने उनकी हालतों को देखकर उन्हें सांप और सांप के बच्चे बताया था और यह भी ख़बर दी थी कि ख़ुदा की बादशाहत इस क़ौम से ले जाकर एक दूसरी क़ौम को दी जाएगी जो इसके अच्छे फल लाए।

जब इस बशारत के ज़ुहूर का वक़्त आ गया और

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुर्रजीअ़, इब्ने हिशाम 2-184

मुहम्मद सल्ल0 ने अपनी बेहतरीन तअ़लीम की तबलीग़ शुरू की तो यहूद ने सख़्त पेच व ताब खाया और आख़िर यही फ़ैसला किया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 को भी वैसे ही जुल्म व सितम की आमाजगाह बनाया जाए जैसा कि मसीह अलै0 को बना चुके थे।(1)

यहूद अगर्चे हिज्रत के पहले ही साल मुआहदा करके अम्ने आम्मा का पैमान बांध चुके थे, लेकिन फ़ित्री शरारत ने ज़्यादा देर तक छिपा न रहने दिया, मुआहदा से डेढ़ साल ही के बाद शरारतों का आग़ाज़ हो गया, जब नबी सल्ल0 बद्र की जानिब गए हुए थे उन्ही दिनों का ज़िक्र है कि एक मुसलमान औरत बनू क़ैनक़ाअ़ के मुहल्ला में दूध बेचने गई, चंद हूदियों ने शरारत की और उसे सरे बाज़ार बरहना कर दिया, औरत की चीख़ व पुकार सुनकर एक मुसलमान मौक़ा पर जा पहुंचा, उसने तैश में आकर फ़साद अंगेज़ यहूदी को क़त्ल कर दिया, इस पर सब यहूदी जमा हो गए उस मुसलमान को भी मार डाला और बलवा भी किया, नबी सल्ल0 ने बद्र से वापस आकर यहूदियों को इस बलवा के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करने के लिये बुलाया, उन्होंने मुआहदा का काग़ज़ भेज दिया और ख़ुद जंग पर आमादा हो गए।(2)

यह हरकत अब बग़ावत तक पहुंच गई थी, इसलिये उनको यह सज़ा दी गई कि मदीना छोड़ दें(3) कुरैश ने

(1) रहमतुल लिलआलमीन 1-129, 130 (2) अलबिदाया वन्निहाया 4-403, उयूनुल असर 1-295 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीस बनी अन्नज़ीर

मदीना के बुत परस्तों को नबी सल्ल0 के ख़िलाफ़ जंग करने की बाबत ख़त लिखा था, मगर आंहज़रत सल्ल0 की ज़ीरकी व दानाई से उनकी यह तदबीर कारगर न हुई, अब बद्र में शिकस्त पाने के बाद कुरैश ने यहूद को फिर लिखा कि "तुम जाइदादों और क़िलों के मालिक हो, तुम मुहम्मद (सल्ल0) से लड़ो, वर्ना हम तुम्हारे साथ ऐसा और ऐसा करेंगे, तुम्हारी औरतों की पाज़ेबें तक उतार लेंगे, इस ख़त के मिलने पर बनू नज़ीर ने अहद शिकनी का और आंहज़रत सल्ल0 से फ़रेब करने का इरादा कर लिया"[1]

4 हि0 का ज़िक्र है कि नबी सल्ल0 एक क़ौमी चंदा फ़राहम करने के लिये बनू नज़ीर के मुहल्ला में तशरीफ़ ले गए, उन्होंने आंहज़रत सल्ल0 को एक दीवार के नीचे बिठा दिया और तदबीर की कि इब्ने जहाश मलऊन दीवार के ऊपर जाकर एक भारी पत्थर नबी सल्ल0 पर गिरा दे और हुज़ूर सल्ल0 की ज़िंदगी का ख़ातमा कर दे।

आंहज़रत सल्ल0 को वहां जा बैठने के बाद बएलामे रब्बानी इस शरारत का इल्म हो गया और हिफ़ाज़ते इलाही से बच कर चले आए।[2]

बिलआख़िर बनू नज़ीर को यह सज़ा दी गई कि ख़ैबर जाकर आबाद हो जाएं उन्होंने छः सौ ऊंटों पर अस्बाब लादा, अपने घरों को अपने हाथ से गिराया, बाजे बजाते हुए निकले और ख़ैबर जा बसे।[3]

(1) सुनन अबी दाऊद, बाब फी ख़ैबर बनी अन्नज़ीर (2) सीरत इब्ने हिशाम 2-190
(3) मुसन्नफ अब्दुर्रज़्ज़ाक 5-358, इब्ने हिशाम 2-191, 192

ग़ज़वए ख़ंदक़

बनू नज़ीर मदीना से निकल कर ख़ैबर पहुंचे तो उन्होंने एक निहायत अज़ीमुश्शान साज़िश शुरू की, उन रुअसा में से सलाम बिन अबी अलहुक़ैक़, हुय्य बिन अख़्तब, कनाना बिन अर्रबीअ़ वग़ैरा मक्का मुअ़ज़्ज़मा गए और क़ुरैश से मिल कर कहा "अगर हमारा साथ दो तो इस्लाम का इस्तीसाल किया जा सकता है" क़ुरैश इसके लिये हमेशा तैयार रहते, क़ुरैश को आमादा करके यह लोग क़बीला ग़तफ़ान के पासा गए और उनको लालच दिया कि ख़ैबर का निस्फ़ मुहासिल उनको हमेशा दिया करेंगे, बनू असद ग़तफ़ान के हलीफ़ थे, ग़तफ़ान ने उनको लिख भेजा कि तुम भी साथ फ़ौजें लेकर आओ, क़बीला बनू सुलैम से क़ुरैश की क़राबत थी, इस तअ़ल्लुक़ से उन्होंने भी साथ दिया, बनू सअ़द का क़बीला यहूद का हलीफ़ था, इस बिना पर यहूद ने उनको भी आमादा किया, ग़र्ज़ तमाम क़बाइले अरब से लशकरे गिरां तैयार होकर मदीना की तरफ़ बढ़ा, उनकी तअ़दाद दस हज़ार से ज़ाइद थी।[1]

आंहज़रत सल्ल० ने यह ख़बरें सुनीं, सहाबा से मशवरा किया, हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० ईरानी होने की वजह से ख़दंक़ के तरीक़ा से वाक़िफ़ थे, उन्होंने राए दी कि खुले मैदान में निकल कर मुक़ाबला करना मस्लिहत नहीं, एक महफ़ूज़ मक़ाम में लशकर जमा किया जाए और इर्द गिर्द

(1) फ़ुतुल बारी 7-393, इब्ने हिशाम 2-214, 215

ख़ंदक़ खोद ली जाए, तमाम लोगों ने इस राए को पसंद किया और ख़ंदक़ खोदने के आलात मुहय्या किये गये।

मदीना में तीन जानिब मकानात और नख़्लिस्तान का सिलसिला था जो शहर पनाह का काम देता था, सिर्फ़ शामी रुख़ खुला हुआ था, आंहज़रत सल्ल0 ने 3/ हज़ार सहाबा रज़ि0 के साथ शहर से निकल कर उसी मक़ाम में ख़ंदक़ की तैयारियां शुरू कीं, यह ज़ुलक़अ़दा 5 हि0 की 8/ तारीख़ थी।

आंहज़रत सल्ल0 ने निशानात ख़ुद क़ाइम किये, दाग़ बेल डाल कर दस दस आदमियों पर दस दस गज़ ज़मीन तक़सीम की, ख़ंदक़ का उमुक़ 5/ गज़ रखा गया 6/ दिन में तीन हज़ार मुतबर्रक हाथों से यह काम अंजाम पाया।(1)

जब मस्जिदे नबवी बन रही थी तो सरवरे दो जहां सल्ल0 मज़दूरों की सूरत में थे, आज भी वही इबरत अंगेज़ मंज़र है, जाड़े की रातें हैं, तीन तीन दिन का फ़ाक़ा है, मुहाजिरीन और अंसान अपनी पीठों पर मिट्टी लाद लाद कर फेंकते हैं और जोशे मुहब्बत में हम आवाज़ होकर कहते हैं

نَحْنُ الَّذِيْنَ بَايَعُوْا مُحَمَّدَا عَلٰى الْإِسْلَامِ مَا بَقِيْنَا أَبَداً

"हम वहीं हैं जिन्होंने हमेशा के लिये मुहम्मद (सल्ल0) के हाथ पर बैअ़त की है"(2)

(1) फ़तुल बारी 7-393,394, इब्ने हिशाम 2-216,217

(2) सहीहुल बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी ग़ज़वतुल ख़ंदक

सरवरे दो आलम भी मिट्टी फेंक रहे हैं, शिकम मुबारक पर गर्द अट गई है उसी हालत में यह रिज्ज़ ज़बान पर है।

وَاللّٰهِ لَوْلَا اللّٰهُ مَا اهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا
فَأَنْزِلَنْ سَكِيْنَةً عَلَيْنَا وَثَبِّتِ الْأَقْدَامَ إِنْ لَاقَيْنَا
إِنَّ الْأُوْلٰى قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا إِذَا أَرَادُوْا فِتْنَةً أَبَيْنَا

"أَبَيْنَا" का लफ़्ज़ जब आता था तो आवाज़ बुलंद हो जाती थी और मुकर्रर कहते थे, इसके साथ अंसार के हक़ में दुआ भी देते थे, और यह मौजूं अलफ़ाज़ जबान पर आते थे।

أَللّٰهُمَّ إِنَّهُ لَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرَ الْآخِرَة فَبَارِكْ فِي الْأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَة (1)

पत्थर खोदते खोदते इत्तिफ़ाक़न एक सख़्त चट्टान आ गई, किसी की ज़र्ब काम नहीं देती थी, रसूल सल्ल0 तशरीफ़ लाए, तीन दिन का फ़ाक़ा था और पेट पर पत्थर बंधा हुआ था आपने दस्ते मुबारक से फावड़ा मारा तो चट्टान एक तौदए ख़ाक थी।(2)

सिल्अ् की पहाड़ी को पुश्त पर रखकर सफ़ आराई की गई, मस्तूरात शहर के महफ़ूज़ क़िलों में भेज दी गईं और चूंकि बनू कुरैज़ा के हमला का अंदेशा था इसलिये सलमा बिन असलम 200 आदमियों के साथ मुतअ़य्यन किये गए कि उधर से हमला न होने पाए।(3)

(1) व (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल ख़ंदक़
(3) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-422

बनू कुरैज़ा के यहूद अब तक अलग थे, लेकिन बनू नज़ीर ने उनको मिला लेने की कोशिश की, हैय बिन अख़्तब (हज़रत सफ़ीया रज़ि0 का बाप) ख़ुद कुरैज़ा के सरदार कअ़ब बिन असद के पास गया, उसने मिलने से इंकार किया, हैय ने कहा "मैं फ़ौजों का दरयाए बेकरां लाया हूं कुरैश और तमाम अरब उमंड आया है और एक मुहम्मद (सल्ल0) के ख़ून का प्यासा है, यह मौक़ा हाथ से जाने देने के क़ाबिल नहीं, अब इस्लाम का ख़ातमा है।" कअ़ब अब भी राज़ी न था, उसने कहाः मैंने मुहम्मद (सल्ल0) को हमेशा सादिकुल वअ़्द पाया, उनसे अहद शिकनी ख़िलाफ़े मुरव्वत है, लेकिन हैय का जादू राईगां नहीं जा सकता था।

आं हज़रत सल्ल0 को यह हाल मअ़लूम हुआ तो तहक़ीक़ और इत्मामे हुज्जत के लिये सअ़्द बिन मआ़ज़ रज़ि0 और सअ़्द बिन उबादा रज़ि0 को वहां भेजा और फ़रमाया कि अगर दरहक़ीक़त बनू कुरैज़ा ने मुआहदा तोड़ दिया हो तो वहां से आकर इस ख़बर को मुब्हम लफ़्ज़ों में बयान करना कि लोगों में बेदिली न फैलने पाए, दोनों साहिबों ने बनू कुरैज़ा को मुआहदा याद दिलाया तो उन्होंने कहा "हम नहीं जानते मुहम्मद (सल्ल0) कौन हैं और मुआहदा क्या चीज़ है।"[1]

ग़र्ज़ बनू कुरैज़ा ने.....इस बेशुमार फ़ौज में और इज़ाफ़ा कर दिया, कुरैश, यहूद, और क़बाइले अरब की दस

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-220, 224

हज़ार फ़ौजें तीन हिस्सों में तक़सीम होकर मदीना के तीन तरफ़ इस ज़ोर शोर से हमलाआवर हुई कि मदीना की ज़मीन हिल गई।[1]

इस मअ़रका की तस्वीर खुद खुदा ने खींची है:

اِذْجَاءُ وْكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا. هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالاً شَدِيْدًا

"जबकि दुशमन ऊपर की तरफ़ और नशेब की तरफ़ से आ पड़े, और जब आंखें डगने लगीं और कलेजे मुंह में आ गए और तुम खुदा की निस्बत तरह तरह के गुमान करने लगे, तब मुसलमानों की जांच का वक़्त आ गया वह ज़ोर से लरज़ने लगे।"[2]

फ़ौजे इस्लाम में मुनाफ़िक़ों की तअ़दाद भी शामिल थी, जो बज़ाहिर मुसलमानों के साथ थे, लेकिन मौसम की सख़्ती, रसद की क़िल्लत, मुतवातिर फ़ाक़े, रातों की बेख़्वाबी, बेशुमार फ़ौजों का हुजूम, ऐसे वाक़िआत थे जिन्होंने उनका पर्दा फ़ाश कर दिया, आ आकर आंहज़रत सल्ल0 से इजाज़त मांगनी शुरू की कि हमारे घर महफ़ूज़ नहीं, हमको शहर में वापस चले जाने की इजाज़त दी जाए।[3]

(1) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-423, फ़तहुल बारी में और सीरत की किताबों में लशकर की तअ़दाद दस हज़ार मज़कूर है। (2) सहीहुल बुख़ारी में मौजूद है कि यह आयात ग़ज़वए ख़ंदक के बारे में नाज़िल हुईं, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल ख़ंदक (3) ज़ादुल मआ़द 3-272, सीरत इब्ने हिशाम 2-222

يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ وَّمَاهِيَ بِعَوْرَةٍ، اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَاراً

"कहते हैं कि हमारे घर खुले पड़े हैं और वह खुले नहीं हैं, बल्कि उनको भागना मक़्सूद है।" (अहज़ाब)

लेकिन जाँनिसाराने इस्लाम का तिलाए इख़्लास इसी कसौटी पर आज़माने के क़ाबिल था।[1]

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّا اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا

"जब मुसलमानों ने क़बाइल की फ़ौजें देखीं तो बोल उठे कि यह वही है जिसका वादा ख़ुदा ने और उसके रसूल (सल्ल0) ने किया था और ख़ुदा और उसका रसूल सल्ल0 सच्चे थे और इस बात ने उनके यक़ीन और इताअ़त को और भी बढ़ा दिया।" (अहज़ाब)

मुहासरा की शिद्दत और सहाबए किराम की अज़ीमत

तक़रीबन एक महीना तक इस सख़्ती से मुहासरा क़ाइम रहा कि आंहज़रत सल्ल0 और सहाबा रज़ि0 पर तीन तीन फ़ाक़े गुज़र गए, एक दिन सहाबा रज़ि0 ने बेताब होकर आंहज़रत सल्ल0 के सामने पेट खोल कर दिखाए, कि पत्थर बंधे हैं, लेकिन जब आप सल्ल0 ने शिकम मुबारक खोला तो एक के बजाए दो पत्थर थे।[2] मुहासरा इस क़दर शदीद और पुर ख़तर हो गया था कि एक दफ़ा आंहज़रत स0

(1) तफ़सीरे क़ुर्तबी 14-157 (2) शमाइले तिर्मिज़ी, बाब माजाअ् फ़ी ऐशिन्नबी सल्ल0

ने लोगों से ख़िताब करके फ़रमायाः कोई है जो बाहर निकल कर मुहासरीन की ख़बर लाए? तीन दफ़ा आप सल्ल0 ने यह अलफ़ाज़ फ़रमाए, लेकिन हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 के सिवा और कोई सदा नहीं आई, आंहज़रत सल्ल0 ने उसी मौक़ा पर हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 को हवारी का लक़ब दिया।(1)

मुहासिरीन ख़ंदक़ को उबूर नहीं कर सकते थे, इसलिये दूर से तीर और पत्थर बरसाते थे, आंहज़रत सल्ल0 ने ख़ंदक के मुख़्तलिफ़ हिस्सों पर फ़ौजें तक़सीम कर दी थीं जो मुहासिरीन के हमलों का मुक़ाबला करती थीं, एक हिस्सा ख़ुद आप सल्ल0 के एहतिमाम में था।(2)

मुहासरा की सख़्ती देखकर आप सल्ल0 को ख़्याल हुआ कि ऐसा न हो कि अंसार हिम्मत हार जाएं, इसलिये आप सल्ल0 ने ग़तफ़ान से इस शर्त पर मुआहदा करना चाहा कि मदीना की पैदावार का एक सुलुस उनको दे दिया जाए, सअ़द बिन उबादा और सअ़द बिन मआज़ रज़िअल्लाहु अन्हुमा को रुअसाए अंसार ने बुलाकर मशवरा फ़रमाया, दोनों ने अ़र्ज़ की कि अगर यह ख़ुदा का हुक्म है तो इंकार की मजाल नहीं, लेकिन अगर राए है तो यह अ़र्ज़ है कि कुफ़्र की हालत में भी कोई शख़्स हमसे ख़िराज मांगने की जुर्अत न कर सका और अब तो इस्लाम ने हमारा पाया बहुत बुलंद कर दिया है, यह इस्तिक़लाल देखकर आप सल्ल0 को इत्मीनान हुआ, सअ़द रज़ि0 ने मुआहदा का

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल ख़ंदक

(2) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-425

काग़ज़ लेकर तमाम इबारत मिटा दी और कहा उन लोगों से जो बन आए कर दिखाएं।[1]

अब मुश्रिकों की तरफ़ से हमला का यह इंतिज़ाम किया गया कि क़ुरैश के मशहूर जनरल यअ़नी अबू सुफ़यान, ख़ालिद बिन वलीद, अम्र बिन अलआ़स, ज़िरार बिन अलख़त्ताब, हुबैरा, का एक एक दिन मुक़र्रर हुआ, हर जनरल अपनी बारी के दिन पूरी फ़ौज लेकर लड़ता था, ख़ंदक़ को उबूर नहीं कर सकते थे, लेकिन ख़ंदक़ का अर्ज़ चूंकि ज़्यादा न था इसलिये बाहर से तीर और पत्थर बरसाते थे।[2] चूंकि इस तरीक़ा में कामियाबी नहीं हुई इसलिये क़रार पाया कि अब आम हमला किया जाए, तमाम फ़ौजें यक्जा हुईं, क़बाइल के तमाम सरदार आगे आगे थे, ख़ंदक़ एक जगह से इत्तिफ़ाक़न कम अ़रीज़ थी, यह मौक़ा हमला के लिये इंतिख़ाब किया गया, अरब के मशहूर बहादुरों यअ़नी ज़िरार, हुबैरा, नौफ़ल, अम्र बिन अब्दे वुद्द ने ख़ंदक़ के इस किनारे से घोड़ों को महमीज़ किया तो उस पार थे, इनमें सबसे ज़्यादा बहादुर अम्र बिन अब्दे वुद्द था, वह एक हज़ार सवारों के बराबर माना जाता था, जंगे बद्र में ज़ख़्मी होकर वापस चला गया था और क़सम खाई थी कि जब तक इंतिक़ाम न लूंगा बालों में तेल न डालूंगा, उस वक़्त उसकी उम्र 90/ बरस की थी, ताहम सबसे पहले वही आगे बढ़ा और अरब के दस्तूर के मुवाफ़िक़ पुकारा कि मुक़ाबला को कौन आता है? हज़रत अली रज़ि० ने उठ कर कहा कि

(1) कशफ़ुल अस्तार लिल बज़्ज़ाज़ 1-332, सीरत इब्ने हिशाम, 2-223

(2) सीरते हलबीया 2-636

"मैं" लेकिन आंहज़रत सल्ल0 ने रोका कि यह अम्र बिन अब्दे वुद्द है! हज़रत अली रज़ि0 बैठ गए, लेकिन अम्र की आवाज़ का और किसी तरफ़ से जवाब नहीं आता था, अम्र ने दोबारा पुकारा और फिर वही एक सदा जवाब में थी, तीसरी दफ़ा जब आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि "यह अम्र है" तो हज़रत अली रज़ि0 ने अ़र्ज़ की हां मैं जानता हूं कि यह अम्र है, ग़र्ज़ आप सल्ल0 ने इजाज़त दी, खुद दस्ते मुबारक से तलवार इनायत की, सर पर अमामा बांधा।

अम्र का क़ौल था कि कोई शख़्स दुन्या में अगर मुझसे तीन बातों की दरख़्वास्त करे तो एक ज़रूर क़बूल करूंगा, हज़रत अली रज़ि0 ने अम्र से पूछा कि क्या वाक़ई तेरा क़ौल है, फिर हसबे ज़ैल गुफ़्तगू हुई:

हज़रत अली रज़ि0:- मैं दरख़्वास्त करता हूं कि तू इस्लाम ला।

अम्रः यह नहीं हो सकता।

हज़रत अली रज़ि0: लड़ाई से वापस चला जा।

अम्रः- मैं ख़ातूनाने अरब का तअ़ना नहीं सुन सकता।

हज़रत अली रज़ि0: मुझसे मअ़रका आरा हो,

अम्र हंसा और कहा मुझको उम्मीद न थी कि आसमान के नीचे यह दरख़्वास्त भी मेरे सामने पेश की जाएगी, हज़रत अली रज़ि0 प्यादा थे, अम्र की ग़ैरत ने यह गवारा न किया, घोड़े से उतर आया और पहली तलवार घोड़े के पांव पर मारी कि कोंचें कट गईं, फिर पूछा कि तुम कौन हो?

आपने नाम बताया, उसने कहा मैं तुमसे लड़ना नहीं चाहता, आपने फ़रमाया "हां लेकिन मैं चाहता हूं" अम्र अब गुस्सा से बेताब था, पर्तले से तलवार निकाली और आगे बढ़कर वार किया, हज़रत अली रज़ि0 ने सिपर पर रोका, लेकिन सिपर में डूब कर निकल आई और पेशानी पर लगी, गो ज़ख़्म कारी न था, ताहम यह तुग़रा आपकी पेशानी पर यादगार रह गया, क़ामूस में लिखा है कि हज़रत अली रज़ि0 को जुलक़रनैन भी कहते थे, जिसकी वजह यह थी कि आपकी पेशानी पर दो ज़ख़्मों के निशान थे, एक अम्र के हाथ का और एक इब्ने मुलजिम का, दुशमन का वार हो चुका तो हज़रत अली रज़ि0 ने वार किया, उनकी तलवार शाना काट कर नीचे उतर आई, साथ ही हज़रत अली रज़ि0 ने अल्लाहु अक्बर का नअ़रा मारा और फ़त्ह का एलान हो गया।[1] अम्र के बाद ज़िरार और हुबैरा ने हमला किया लेकिन जब जुलफ़िक़ार का हाथ बढ़ा तो पीछे हटना पड़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने ज़िरार का तआ़कुब किया, ज़िरार ने मुड़कर बर्छे का वार करना चाहा, लेकिन रोक लिया और कहा उमर! इस एहसान को याद रखना।[2]

नौफ़ल भागते हुए ख़ंदक़ में गिरा, सहाबा रज़ि0 ने तीर मारने शुरू किये, उसने कहा "मुसलमानो! मैं शरीफ़ाना मौत चाहता हूं" हज़रत अली रज़ि0 ने उसकी दरख़्वस्त मंजूर की

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-34, सीरत इब्ने हिशाम 2-224, 225, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-436, 439, सीरतुन्नबी सल्ल0 1-427, 428

(2) सीरते हलबीया 2-644

और ख़ंदक़ में उतर कर तलवार से मारा कि शरीफ़ों के शायान था।[1] हमला का यह दिन बहुत सख़्त था तमाम दिन लड़ाई रही, कुफ़्फ़ार हर तरफ़ से तीरों और पत्थरों का मेंह बरसा रहे थे और एक दम के लिये यह बारिश थमने न पाई थी, यही दिन है जिसका ज़िक्र अहादीस में है कि आंहज़रत सल्ल0 की मुसलसल चार नमाज़ें क़ज़ा हुई, मुसलसल तीर अंदाज़ी और संग बारी से जगह से हटना नामुम्किन था।[2]

हज़रत सफ़ीया रज़ि0 का दिलेराना इक़्दाम

मस्तूरात जिस क़िला में थीं, बनू क़ुरैज़ा की आबादी से मुत्तसिल था, यहूदियों ने यह देखकर कि तमाम जमईयत आंहज़रत सल्ल0 के साथ है, क़िला पर हमला किया, एक यहूदी क़िला के फाटक तक पहुंच गया और क़िला पर हमला करने का मौक़ा ढूंढ रहा था, हज़रत सफ़ीया रज़ि0 (आंहज़रत सल्ल0 की फूफी) ने देख लिया, मस्तूरात की हिफ़ाज़त के लिये हज़रत हस्सान रज़ि0 बिन साबित (शाइरे रसूल सल्ल0) मुतअय्यन कर दिये गए थे, हज़रत सफ़ीया रज़ि0 ने उनसे कहा कि उतर कर इसको क़त्ल कर दो, वर्ना यह जाकर दुशमनों को पता करेगा, हज़रत हस्सान रज़ि0 को एक आरज़ा हो गया था, जिसने उनमें इस क़दर जुब्न पैदा कर दिया था कि वह लड़ाई की तरफ़ नज़र उठाकर भी नहीं देख सकते थे, इस बिना पर अपनी मअ़ज़ूरी ज़ाहिर की

(1) दलाइलुन्नुबुववा 3-438, सीरते हलबीया 2-637
(2) सुनन अन्नसाई, किताबुस्सलात

और कहा कि मैं इस काम का होता तो यहां क्यों होता, हज़रत सफ़ीया रज़ि० ने ख़ेमा की एक चोब उखाड़ी और उतर कर यहूदी के सर पर इस ज़ोर से मारी कि सर फट गया, हज़रत सफ़ीया रज़ि० चली आईं और हस्सान रज़ि० से कहा कि हथियार और कपड़े छीन लाओ, हस्सान रज़ि० ने कहा जाने दीजिये मुझको इसकी ज़रूरत नहीं, हज़रत सफ़ीया रज़ि० ने कहा अच्छा जाओ उसका सर काट कर क़िला के नीचे फेंक दो कि यहूदी मरऊब हो जाएं, लेकिन यह ख़िदमत भी हज़रत सफ़ीया रज़ि० ही को अंजाम देनी पड़ी, यहूदियों को यक़ीन हुआ कि क़िला में भी फ़ौज मुतअय्यन है, इस ख़्याल से फिर उन्होंने हमला की जुर्अत न की।[1]

नुस्रते ग़ैबी और मुहासरा का ख़ातमा

मुहासरा जिस क़दर तूल होता जाता था, मुहासरा करने वाले हिम्मत हारते जाते थे, दस हज़ार आदमियों को रसद पहुंचाना, आसान काम न था, इत्तिफ़ाक़ यह कि बावजूद सर्दी के मौसम के इस ज़ोर की हवा चली कि तूफ़ान आ गया, ख़ेमों की तनाबें उखड़ उखड़ गईं, खाने के देगचे चूल्हों पर उलट उलट जाते थे, इस वाक़िआ ने फ़ौजों से बढ़कर काम दिया, इसी बिना पर क़ुर्आन मजीद ने इस बादे सरसर को अस्करे इलाही से तअ़बीर किया है।[2]

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحاً

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-228

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 3-448

وَّجُنُوْداً لَّمْ تَرَوْهَا،

"मुसलमानो! खुदा के उस एहसान को याद करो कि जब तुम पर फ़ौजें आ पड़ीं तो हमने उन पर आंधी भेजी और वह फ़ौजें भेजीं जो तुम को दिखाई नहीं देती थीं।" (अहज़ाब)

नुऐम बिन मसऊद सक़फ़ी एक ग़तफ़ानी रईस थे, कुरैश और यहूद दोनों उनको मानते थे, वह इस्लाम ला चुके थे, लेकिन कुफ़्फ़ार को अभी इसका इल्म न था, उन्होंने कुरैश और यहूद से अलग अलग जाकर इस क़िस्म की बातें कीं जिससे दोनों में फूट पड़ गई।[1]

मौसम की सख़्ती, मुहासरा का इम्तिदाद, आंधी का ज़ोर, रसद की क़िल्लत, यहूद की अलाहिदगी, यह तमाम अस्बाब ऐसे जमा हो गए थे कि कुरैश के पाए सिबात अब नहीं ठहर सकते थे, अबू सुफ़यान ने फ़ौज से कहा, रसद ख़त्म हो चुकी, मौसम का यह हाल है, यहूद ने साथ छोड़ दिया, अब मुहासरा बेकार है, यह कहकर तबले रहील बजने का हुक्म दिया[2] ग़तफ़ान भी उसके साथ रवाना हो गए, बनू कुरैज़ा मुहासरा छोड़ कर अपने क़िलों में चले आए और मदीना का उफ़ुक़ 20,22/ दिन तक गुबार आलूद रह कर साफ़ हो गया।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْراً وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ،

(1) सीरत इब्ने हिशाम
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-232

"और खुदा ने काफ़िरों को गुस्सा में भरा हुआ हटा दिया कि उनको कुछ हाथ न आया, और मुसलमानों को लड़ने की नौबत न आई।"

(अहज़ाब)

इस मअ़रका में फ़ौजे इस्लाम का जानी नुक़्सान कम हुआ, लेकिन अंसार का सबसे बड़ा बाजू टूट गया, यअ़नी हज़रत सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि० जो क़बीला औस के सरदार थे ज़ख़्मी हुए और फिर जां बर न हो सके, उनके ज़ख़्म खाने का वाक़िआ मुअस्सिर और इबरत अंगेज़ है।

मां अपने जिगर के टुकड़े को जिहाद और शहादत पर आमादा करती है

हज़रत आइशा रज़ि० जिस क़िला में पनाह गुज़ीं थीं, सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि० की मां भी वहीं उनके साथ थीं, हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि मैं क़िला से बाहर निकल कर फिर रही थी, अक़ब से पांव की आहट मअ़लूम हुई, मुड़कर देखा तो सअ़द रज़ि० हाथ में हर्बा लिये जोश की हालत में बड़ी तेज़ी से बढ़े जा रहे हैं और यह शेअ़र ज़बान पर है-

لَبِّث قَلِيْلاً يُدْرِكِ الْهَيْجَا جَمَلْ لَابَأْسَ بِالْمَوْتِ إِذَا الْمَوْتُ نَزَلْ

"ज़रा ठहर जाना कि लड़ाई में एक शख़्स और पहुंच जाए, जब वक़्त आ गया तो मौत से क्या डर है।"

हज़रत सअ़द रज़ि० की मां ने सुना तो आवाज़ दी

बेटा! दौड़ कर जा, तूने देर लगा दी, सअ़द रज़ि0 की ज़िरह इस क़दर छोटी थी कि उनके दोनों हाथ बाहर थे, हज़रत आइशा रज़ि0 ने सअ़द रज़ि0 की मां से कहा "काश सअ़द की लम्बी ज़िरह होती" इत्तिफ़ाक़ यह कि इब्नुल अरक़ा ने ताक कर खुले हुए हाथ पर तीर मारा जिससे अकहल की रग कट गई।[1] ख़ंदक़ का मअ़रका हो चुका तो आंहज़रत सल्ल0 ने उनके लिये मस्जिद के सिहन में एक ख़ेमा खड़ा कराया और उनकी तीमारदारी शुरू की, इस लड़ाई में रुफ़ैदा एक ख़ातून शरीक थीं, जो अपने पास दवाएं रखती थीं और ज़ख़्मों की मरहम पट्टी करती थीं, यह ख़ेमा उन्हीं का था और वह इलाज की निगरां थीं, आंहज़रत सल्ल0 ने खुद दस्ते मुबारक से मिशकस लेकर दाग़ा, लेकिन वह फिर वरम कर आया, दोबारा दाग़ा, लेकिन फिर फ़ाएदा न हुआ, कई दिन के बाद यअ़नी बनू क़ुरैज़ा की हलाकत के बाद ज़ख़्म खुल गया और उन्होंने वफ़ात पाई।[2]

ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअ़

ग़ज़वए ख़ंदक़ के बाद आप सल्ल0 ने ग़तफ़ान के क़बाइल के मुक़ाबला के लिये चार सौ सहाबा रज़ि0 के साथ नज्द का रुख़ किया, इस ग़ज़वा में सहाबा रज़ि0 के पांव ऐसे ज़ख़्मी हो गए थे कि चीथड़े लपेट कर चलते थे इसलिये इस ग़ज़वा का नाम ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ है।[3] इस

(1) सहीहुल बुख़ारी, बाब रजउन्नबी सल्ल0 मिनल अहज़ाब, तफ़सील सीरत इब्ने हिशाम 2-226, 1227 और दलाइलुन्नुबूव्वा 3-440-441में है। (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रजउन्नबी सल्ल0 मिनल अहज़ाब, फ़तहुल बारी 7-412 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअ़

ग़ज़वा के बाद यह वाक़िआ पेश आया कि दो सहाबी अब्बाद बिन बिश्र रज़ि0 और अम्मार बिन यासिर रज़ि0 एक जगह पहरे पर मुक़र्रर थे, हज़रत अब्बाद रज़ि0 खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे और हज़रत अम्मार सोए हुए थे, एक दुशमन ने हज़रत अब्बाद रज़ि0 को एक तीर मारा, उन्होंने तीर निकाल कर फेंक दिया और नमाज़ बराबर पढ़ते रहें, यहां तक कि उनके तीन तीर लगे, लेकिन वह नमाज़ में मशगूल रहे, सलाम फेरने के बाद अपने साथी को जगाया, उन्होंने कहा सुब्हानल्लाह! तुमने हमें जगा क्यों न दिया, उन्होंने कहा कि मैं एक सूरत पढ़ रहा था मेरा जी न चाहा कि उसको नातमाम छोड़ूं।[1]

ग़ज़वए बनू कुरैज़ा

आंहज़रत सल्ल0 ने आग़ाज़े क़्याम में यहूद के साथ मुआहदा किया था, और उनको जान व माल व मज़हब हर चीज़ में अम्न व आज़ादी बख़्शी, लेकिन जब कुरैश ने उनको तह्रीज़ व तह्दीद का ख़त लिखा तो वह आमादए बग़ावत हो गए, आंहज़रत सल्ल0 ने उन लोगों से तज्दीदे मुआहदा करनी चाही, बनू नज़ीर ने इंकार किया और जिला वतन कर दिये गये, लेकिन बनू कुरैज़ा ने नए सिरे से मुआहदा कर लिया, चुनांचे उनको अम्न दे दिया गया, सहीह मुस्लिम में इन वाक़िआत को इख़्तसार के साथ इन अलफ़ाज़ में बयान किया गया है.....[2]

(1) मुस्नद अहमद 3-344, सुनन अबू दाऊद, किताबुत्तहारत, बाबुल वुज़ू मिनद्दम
(2) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-433

عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ يَهُوْدَ بَنِى النَّضِيرِ وَقُرَيْظَةَ حَارَبُوْا رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَجْلَى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيهِ وَسَلَّمَ بَنِى النَّضِيرِ وَأَقَرَّ قُرَيْظَةَ وَمَنَّ عَلَيْهِمْ،

"हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा के यहूद ने आंहज़रत सल्ल0 से लड़ाई की तो आप सल्ल0 ने बनू नज़ीर को जिला वतन कर दिया और क़ुरैज़ा को रहने दिया और एहसान किया।[1]

बनू नज़ीर जब जिला वतन हुए तो उनके रईसे अअ़ज़म हुय्य बिन अख़्तब, अबू राफ़ेअ़, सलाम बिन अबिल हुक़ैक़ ख़ैबर में जाकर आबाद हुए और वहां रियासते आम हासिल कर ली, जंगे अह्ज़ाब उन्हीं की कोशिशों का नतीजा था, क़बाइले अरब में दौरा करके तमाम मुल्क में आग लगा दी और क़ुरैश के साथ मिल कर मदीना पर हमला आवर हुए, उस वक़्त तक क़ुरैज़ा मुअहादा पर क़ाइम थे, लेकिन हुय्य बिन अख़्तब ने उनको बहका कर तोड़ लिया और उनसे वादा किया कि ख़ुदा नख़्वास्ता अगर क़ुरैश दस्त बर्दार होकर चले गए तो मैं ख़ैबर छोड़ कर यहीं रहूंगा, चुनांचे उसने वादा वफ़ा किया, क़ुरैज़ा ने अह्ज़ाब में एलानिया शिर्कत की और शिकस्त खाकर हट आए, तो इस्लाम के सबसे बड़े दुशमन हुय्य बिन अख़्तब को साथ लाए,[2] अब इसके सिवा कोई चारा न था कि उनका कोई आख़िरी

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब 1 जिलाउल यहूद मिनल हिजाज़
(2) सीरतुन्नबी 1-434 बहवाला तबरी व सीरत इब्ने हिशाम

फ़ैसला किया जाए, आंहज़रत सल्ल0 ने अह्ज़ाब से फ़ारिग़ होकर हुक्म दिया कि अभी लोग हथियार न खोलें और कुरैज़ा की तरफ़ बढ़ें।[1] कुरैज़ा अगर सुलह व आश्ती से पेश आते तो क़ाबिले इत्मीनान तस्फ़िया के बाद उनको अम्न हो जाता, लेकिन वह मुक़ाबला का फ़ैसला कर चुके थे, फ़ौज से आगे बढ़कर जब हज़रत अली रज़ि0 उनके क़िलों के पास पहुंचे तो उन्होंने एलानिया आंहज़रत सल्ल0 को गालियां दीं, ग़र्ज़ उनका मुहासरा कर लिया गया और तक़रीबन एक महीना मुहासरा रहा, बिलआख़िर उन्होंने दरख़्वास्त पेश की कि हज़रत सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि0 जो फ़ैसला करें वह हमें मंजूर है।

हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ि0 और उनका क़बीला (औस) कुरैज़ा का हलीफ़ और हम अहद था और अरब में यह तअ़ल्लुक़ हम नसबी से बढ़कर था, आंहज़रत सल्ल0 ने उनकी यह दरख़्वास्त मंजूर की।[2]

कुर्आन मजीद में जब तक कोई ख़ास हुक्म नहीं आता था, आंहज़रत सल्ल0 तौरात के अहकाम की पाबंदी फ़रमाते थे, चुनांचे अक्सर मसाइल, क़िब्ला, नमाज़, रज्म, क़िसास बिलमिस्ल, वग़ैरा वग़ैरा में जब तक ख़ास वह्य नहीं आई, आंहज़रत सल्ल0 ने तौरात ही की पाबंदी फ़रमाई, सअ़द रज़ि0 ने जो फ़ैसला किया यअ़नी यह लड़ने वाले क़त्ल किये जाएं, औरतों बच्चे क़ैद हों, माल व अस्बाब ग़नीमत क़रार

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रज्उन्नबी सल्ल0 मिनल अह्ज़ाब
(2) हज़रत सअ़द रज़ि0 की तह्कीम का ज़िक्र बुख़ारी में मौजूद है, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रजउन्नबी सल्ल0 मिनल अह्ज़ाब

दिया जाए[1] तौरात के मुताबिक़ था, तौरात किताब सनीया इस्हाह 20, आयत 10/ में है:

"जब किसी शहर पर हमला करने के लिये तू जाए तो पहले सुलह का पैग़ाम दे, अगर वह सुलह तस्लीम कर लें और तेरे लिये दरवाज़े खोल दें तो जितने लोग वहां मौजूद हों सब तेरे गुलाम हो जाएंगे, लेकिन अगर सुलह न करें तो उनका मुहासरा कर और जब तेरा खुदा तुझको उन पर क़ब्ज़ा दिला दे तो जिस क़दर मर्द हों, सबको क़त्ल कर दे, बाक़ी औरतें, बच्चे, जानवर और जो चीज़ें शहर में मौजूद हों सब तेरे लिये माले ग़नीमत होंगी।[2]

अहादीस में मज़कूर है कि हज़रत सअ़द रज़ि0 ने जब यह फ़ैसला किया तो आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि तुमने आसमानी फ़ैसला किया।[3] तौरात के इसी हुक्म की तरफ़ इशारा था, यहूदियों को जब यह हुक्म सुनाया गया तो जो फ़िक़रे उनकी ज़बान से निकले उससे साबित होता है कि वह खुद भी इस फ़ैसला को हुक्मे इलाही के मुवाफ़िक़ समझते थे।

हुय्य बिन अख़तब जो इन तमाम फ़ितन का बानी था, मक़्तल में लाया गया तो आंहज़रत सल्ल0 की तरफ़ उसने नज़र उठा कर देखा और यह फ़िक़रे कहे:

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब जवाज़े किताल फी नक़ज़िल अहद
(2) सीरतुन्नबी सल्ल0, अल्लामा शिब्ली नोअ़मामी 1-435, बहवाला तौरात
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब रजउन्नबी सल्ल0 मिनल अह्ज़ाब

أَمَا وَاللّٰهِ مَالُمْتُ نَفْسِیْ فِی عَدَاوَتِکَ وَلٰکِنَّهٗ مَنْ یَّخْذُلُ اللّٰهَ یُخْذَلُ

"हां खुदा की क़सम मुझको इसका अफ़सोस नहीं है कि मैंने तेरी (आप सल्ल0 की) अदावत की, लेकिन बात यह है कि जो शख़्स खुदा को छोड़ देता है खुदा भी उसको छोड़ देता है।"

फिर लोगों की तरफ़ मुख़ातब होकर कहाः

أَیُّهَا النَّاسُ اِنَّهٗ لَا بَاْسَ بِاَمْرِ اللّٰهِ کِتَابٌ وَقَدْرٌ وَمَلْحَمَةٌ کَتَبَهَا اللّٰهُ عَلٰی بَنِی اِسْرَائِیلَ

"लोगो! खुदा के हुक्म की तअ़मील में कुछ मुज़ाइक़ा नहीं, यह एक हुक्मे इलाही था जो लिखा हुआ था, यह एक सज़ा थी जो खुदा ने बनी इस्राईल पर लिखी थी।"[1]

हुय्य बिन अख़्तब की यह बात ख़ास तौर पर लिहाज़ रखने के क़ाबिल है कि जब वह जिला वतन होकर ख़ैबर जा रहा था तो उसने यह मुआहदा किया था कि आंहज़रत सल्ल0 की मुख़ालफ़त पर किसी को मदद न देगा, इस मुआहदा पर उसने खुदा को ज़ामिन किया था, लेकिन अह्ज़ाब में उसेन इस मुआहदा की जिस तरह की तअ़मील की उसका हाल अभी गुज़र चुका।

सरीयए नज्द और हज़रत सुमामा रज़ि० का क़बूले इस्लाम

नबी सल्ल0 ने कुछ सवार नज्द की जानिब रवाना

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-241

फ़रमाए थे, वह वापस होते हुए सुमामा बिन असाल को गिरफ़्तार कर लाए थे, फ़ौज वालों ने उन्हें मस्जिदे नबवी सल्ल0 के सुतून से ला बांधा था, नबी सल्ल0 ने वहां तशरीफ़ लाकर दरयाफ़्त किया कि सुमाका क्या हाल है? सुमाना ने कहा मुहम्मद (सल्ल0) मेरा हाल अच्छा है, अगर आप मेरे क़त्ल किये जाने का हुक्म दें तो यह हुक्म एक खूनी के हक़ में होगा और अगर आप इन्आम फ़रमाएंगे तो एक शुक्रगुज़ार पर रहमत करेंगे और अगर माल की ज़रूरत है तो जिस क़दर चाहिये बता दीजिये।

दूसरे रोज़ नबी सल्ल0 ने सुमामा से फिर वही सवाल किया, सुमामा ने कहा मैं कह चुका हूं कि अगर आप एहसान फ़रमाएंगे तो एक शुक्र गुज़ार शख़्स पर फ़रमाएंगे।

तीसरे रोज़ नबी सल्ल0 ने फिर सुमामा से वही सवाल किया, उसने कहा मैं अपना जवाब दे चुका हूं, नबी सल्ल0 ने हुक्म दिया कि सुमामा को छोड़ दो, सुमामा रिहाई पाकर खजूर के एक एक बाग़ में गए, जो मस्जिदे नबवी सल्ल0 के क़रीब ही था, वहां जाकर गुस्ल किया और फिर मस्जिदे नबवी सल्ल0 में लौट कर आ गए और आते ही कलिमा पढ़ लिया।

सुमाम रज़ि0 ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0! क़सम है ख़ुदा की कि सारे आलम में आप से ज़्यादा और किसी शख़्स से मुझे नफ़रत न थी, लेकिन अब तो आप सल्ल0 ही मुझे दुन्या में सबसे बढ़ कर प्यारे मअ़लूम होते हैं।

बखुदा आपके शहर से मुझे निहायत नफ़रत थी, मगर आज तो वह मुझे सब मक़ामात से पसंदीदा नज़र आता है, बखुदा आपके दीन से बढ़कर मुझे और किसी दीन से बुग्ज़ न था, लेकिन आज तो आप ही का दीन मुझे महबूब तर हो गया है।

सुमामा रज़ि0 ने यह भी अ़र्ज़ किया कि मैं अपने वतन से मक्का को उम्रा के लिये जा रहा था, रास्ता में गिरफ़्तार कर लिया गया था, अब उम्रा के बारे में क्या इर्शाद है, नबी सल्ल0 ने उन्हें इस्लाम क़बूल करने की बशारत दी और उम्रा करने की इजाज़त फ़रमाई।

हज़रत सुमामा रज़ि0 मक्का पहुंचे तो वहां के एक शख़्स ने पूछा कहो तुम साबी बन गए? हज़रत सुमामा रज़ि0 ने कहा नहीं! मैं मुहम्मद रसूलुल्ला सल्ल0 पर ईमान लाया हूं और इस्लाम क़बूल किया है और अब याद रखना कि मुल्के यमामा से तुम्हारे पास एक दानए गंदुम भी नहीं आएगा, जब तक नबी सल्ल0 की इजाज़त न होगी।[1]

हज़रत सुमामा रज़ि0 ने अपने मुल्क पहुंचते ही मक्का की तरफ़ आने वाला अनाज बंद कर दिया, ग़ल्ला की आमद के रुक जाने से अह्ले मक्का बिलबिला उठे और आख़िर नबी सल्ल0 ही से इल्तिजा करनी पड़ी, नबी सल्ल0 ने सुमामा रज़ि0 को लिख दिया कि ग़ल्ला बदस्तूर जाने दें[1]

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब रबतुल असीर व हब्सुहू, सहीह बुख़ारी में इख़्तिसार के साथ रिवायत मन्क़ूल है

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहक़ी 4-80

(उन दिनों अह्ले मक्का नबी सल्ल0 के जानी दुशमन थे) इस क़िस्सा से न सिर्फ़ यही साबित हुआ कि नबी सल्ल0 ने क्योंकर एक शख़्स की जान बख़्शी फ़रमाई जो ख़ुद भी अपने आपको वाजिबुल क़त्ल समझता था और न सिर्फ़ यही साबित हुआ कि नबी सल्ल0 के पाकीज़ा हालात और अख़्लाक़ का कैसा असर लोगों पर पड़ता था कि सुमामा जैसा शख़्स जो इस्लाम और मदीना और आंहज़रत सल्ल0 से सख़्त नफ़रत व अदावत रखता था, तीन रोज़ के बाद बखुशी खुद मुसलमान हो गया था, बल्कि नबी सल्ल0 की नेकी और तीनत की पाकी और रहमदिली का सुबूत इस तरह मिलता है कि मक्का के जिन काफ़िरों ने आंहज़रत सल्ल0 को मक्का से निकाला था और बद्र, उहुद, ख़ंदक़ में अब तक नबी सल्ल0 और मुसलमानों के तबाह व बर्बाद करने के लिये सारी ताक़त सर्फ़ कर चुके थे, उनके लिये रहमतुल लिल आलमीन यह पसंद नहीं फ़रमाते कि उनका ग़ल्ला रोक दिया जाए और उनको तंग व ज़लील करके अपना फ़रमां बरदार बनाया जाए।

सुलह हुदैबिया

6 हि0 में नबी सल्ल0 ने अपना एक ख़्वाब मुसलमानों को सुनाया, फ़रमाया कि मैंने देखा गोया मैं और मुसलमान मक्का पहुंच गए हैं और बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे हैं, इस ख़्वाब के सुनने से ग़रीबुल वतन मुसलमानों को इस शौक़ ने जो बैतुल्लाह के तवाफ़ का उनके दिल में था, बेचैन

कर दिया और उन्होंने उसी साल नबी सल्ल0 को सफ़रे मक्का के लिये आमादा कर लिया।[1]

चूंकि मुहाजिरीन उमूमन और अक्सर अंसार इस सआ़दत के मुंतज़िर थे, 1400/ अशख़ास इस सफ़र में हमरिकाब हुए, मक़ामे ज़ुल हुलैफ़ा पहुंच कर कुर्बानी की इब्तिदा की, रस्में अदा हो गईं यअ़नी कुर्बानी के ऊंट साथ थे, उनकी गर्दनों पर कुर्बानी की अलामत के तौर पर लोहे के नअ़ूल लगा दिये गए।[2]

एहतियात के लिये क़बीलए ख़ुज़ाआ़ का एक शख़्स जिसके इस्लाम लाने का हाल कुरैश को मअ़लूम न था, पहले भेज दिया गया कि कुरैश के इरादा की ख़बर लाए, जब क़ाफ़िला उस्फ़ान के क़रीब पहुंचा उसने आकर ख़बर दी कि कुरैश ने तमाम क़बाइल (अहाबीश) को यक्जा करके कह दिया है कि मुहम्मद (सल्ल0) मक्का में कभी नहीं आ सकते।[3]

ग़ज़ कुरैश ने बड़े ज़ोर व शोर से मुक़ाबला की तैयारी की, क़बाइले मुत्तहिदा के पास पैग़ाम भेजा कि वह जमईयते अज़ीम लेकर आएं, मक्का से बाहर बलदह के मक़ाम पर फ़ौजें फ़राहम हुईं, ख़ालिद बिन वलीद जो अब तक इस्लाम नहीं लाए थे, दो सौ सवार लेकर जिनमें अबू जह्ल का बेटा अकरमा भी था, मुक़द्दमतुल जैश के तौर पर आगे बढ़े और ग़ुमैम तक पहुंच गए जो राबिग़ और जुह्फ़ा के दर्मियान है।[4]

(1) सीरते हलबीया 2-688 (2) व (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया (4) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-449

आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि कुरैश ने ख़ालिद बिन वलीद को तलीआ़ बनाकर भेजा है और वह मक़ामे गुमैम तक आ गए हैं, इसलिये कतरा कर दाहनी तरफ़ से चलो, फ़ौजे इस्लाम जब गुमैम के क़रीब पहुंच गई तो ख़ालिद को घोड़ों की गर्द उड़ती नज़र आई, वह घोड़ा उड़ाते हुए गए और कुरैश को ख़बर की कि लशकरे इस्लाम गुमैम तक आ गया।

आंहज़रत सल्ल0 आगे बढ़े और हुदैबिया में पहुंच कर क़्याम किया, यहां पानी की क़िल्लत थी, एक कुंवां था वह पहली ही आमद में ख़ाली हो गया, लेकिन एजाज़े नबवी सल्ल0 से उसमें इस क़दर पानी आ गया कि सब सैराब हो गए।[1]

क़बीलए खुज़ाआ ने अब तक इस्लाम नहीं क़बूल किया था, लेकिन इस्लाम के हलीफ़ और राज़दार थे, कुरैश और आम कुफ़्फ़ार जो मंसूबे इस्लाम के ख़िलाफ़ बनाया करते थे वह हमेशा आंहज़रत सल्ल0 को उससे मुत्तलअ् कर दिया करते थे, इस क़बीला के रईसे अअ्ज़म बुदैल बिन वरक़ा थे (फ़त्हे मक्का में इस्लाम लाए) उनको आंहज़रत सल्ल0 का तशरीफ़ लाना मअ़लूम हुआ तो चंद आदमी साथ लेकर बारगाहे नबवी सल्ल0 में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की कि कुरैश की फ़ौजों का सैलाब आ रहा है, वह आपको कअ्बा में न जाने देंगे, आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि कुरैश से जाकर

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया

कह दो कि "हम उम्रा की ग़र्ज़ से आए हैं, लड़ना मक़्सूद नहीं, जंग ने कुरैश की हालत ज़ार कर दी है और उनको सख़्त नुक़्सान पहुंचा है, उनके लिये यह बेहतर है कि एक मुद्दते मुअ़य्यन के लिये मुआहदए सुलह कर लें और मुझको अरब के हाथ में छोड़ दें, इस पर भी अगर राज़ी नहीं तो उस खुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं यहां तक लड़ूंगा कि मेरी गर्दन अलग हो जाए और खुदा को जो फ़ैसला करना हो कर दे।"

बुदैल ने जाकर कुरैश से कहा कि "मैं मुहम्मद (सल्ल0) के पास से पैग़ाम लेकर आया हूं, इजाज़त दो तो कह दूं" चंद शरीर बोल उठे कि हमको मुहम्मद (सल्ल0) के पैग़ाम सुनने की ज़रूरत नहीं, लेकिन संजीदा लोगों ने इजाज़त दी, बुदैल ने आंहज़रत सल्ल0 की शर्तें पेश कीं, उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी ने उठ कर कहा क्यों कुरैश! क्या मैं तुम्हारा बाप और तुम मेरे बच्चे नहीं? बोले हां! उर्वा ने कहा मेरी निस्बत तुमको बदगुमानी तो नहीं? सबने कहा "नहीं" उर्वा ने कहा "अच्छा तुम मुझको इजाज़त दो कि मैं खुद जाकर मुआमला तै करूं, मुहम्मद (सल्ल0) ने मअ़क़ूल शर्तें पेश की हैं" ग़र्ज़ आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में आए, कुरैश का पैग़ाम सुनाया और कहा मुहम्मद (सल्ल0)! फ़र्ज़ करो तुमने कुरैश का इस्तीसाल कर दिया तो क्या इसकी और भी कोई मिसाल है कि किसी ने अपनी क़ौम को बर्बाद कर दिया हो, इसके सिवा अगर लड़ाई का रुख़ बदला तो तुम्हारे साथ जो यह भीड़ है गर्द की तरह उड़ जाएगी, हज़रत अबू बक्र

रज़ि0 को इस बदगुमानी पर इस क़दर गुस्सा आया कि गाली देकर कहा क्या हम मुहम्मद सल्ल0 को छोड़ कर भाग जाएंगे? उर्वा ने आंहज़रत सल्ल0 से पूछा यह कौन हैं?.....आप सल्ल0 ने फ़रमाया "अबू बक्र" उर्वा ने कहा मैं इनकी सख़्त कलामी का जवाब देता, लेकिन इनका एहसान मेरी गर्दन पर है जिसका बदला मैं अभी तक अदा नहीं कर सका।[1]

उर्वा आंहज़रत सल्ल0 से बेतकल्लुफ़ाना तरीक़ा से गुफ़्तगू कर रहा था और जैसा कि अरब का क़ाएदा है कि बात करते करते मुख़ातब की दाढ़ी पकड़ लेते हैं, वह रीश मुबारक पर बार बार हाथ डालता था, मुग़ीरा बिन शोअ़बा रज़ि0 जो हथियार लगाए आंहज़रत सल्ल0 की पुश्त पर खड़े थे इस जुर्अत को गवारा न कर सके, उर्वा से कहा "अपना हाथ हटा ले वर्ना यह हाथ बढ़ कर वापस न जा सकेगा" उर्वा ने मुग़ीरा को पहचाना और कहाः ओ दग़ाबाज़! क्या मैं तेरी दग़ाबाज़ी के मुआमला में तेरा काम नहीं कर रहा हूं, (मुग़ीरा ने चंद आदमी क़त्ल कर दिये थे जिनका खून बहा उर्वा ने अपने पास से अदा किया था)[2]

उर्वा ने रसूलुल्लाह सल्ल0 के साथ सहाबा रज़ि0 की हैरत अंगेज़ अक़ीदत का जो मंज़र देखा उसने उसके दिल पर अजब असर किया, क़ुरैश से जाकर कहा कि "मैंने क़ैसर व किस्रा व नजाशी के दरबार देखे हैं, यह अक़ीदत

(1) पूरी रिवायत सहीह बुख़ारी में मौजूद है, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद
(2) सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

Maktaba-e-Ashraf

और वारफ़्तगी कहीं नहीं देखी, मुहम्मद (सल्ल0) बात करते हैं तो सन्नाटा छा जाता है, कोई शख़्स उनकी तरफ़ नज़र भर कर देख नहीं सकता, वह वुज़ू करते हैं, तो जो पानी गिरता है उस पर ख़िल्क़त टूट पड़ती है, थूक गिरता है तो अक़ीदत केश हाथों हाथ लेते हैं, और चेहरा और हाथों पर मल लेते हैं।"[1]

चूंकि यह मुआमला नातमाम रह गया, आंहज़रत सल्ल0 ने ख़राश बिन उमय्या को कुरैश के पास भेजा, लेकिन कुरैश ने उनकी सवारी का ऊंट जो ख़ास रसूलुल्लाह सल्ल0 की सवारी का था मार डाला और खुद उन पर भी यही गुज़रने वाली थी, लेकिन क़बाइले मुत्तहिदा के लोगों ने बचा लिया और वह किसी तरह जान बचाकर चले आए।[2]

अब कुरैश ने एक दस्ता भेजा कि मुसलमानों पर हमला आवर हो, लेकिन यह लोग गिरफ़्तार कर लिये गए, गोया सख़्त शरारत थी, लेकिन रहमते आलम सल्ल0 का दामने अफ़्व इससे ज़्यादा वसीअ़ था, आप सल्ल0 ने सबको छोड़ दिया और मुआफ़ी दे दी[3] कुर्आन मजीद की इस आयत में इसी वाक़िआ की तरफ़ इशारा है।

وَهُوَ الَّذِیْ كَفَّ اَیْدِیَهُمْ عَنْكُمْ وَاَیْدِیَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَیْهِمْ.

(1) सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-314, मुस्नद अहमद 4-324
(3) सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

"वह वही ख़ुदा है जिसने मक्का में उन लोगों का हाथ तुमसे और तुम्हारा हाथ उनसे रोक दिया बाद इसके कि तुमको उन पर क़ाबू दे दिया था।"

बैअ़ते रिज़वान

बिलआख़िर आप सल्ल0 ने गुफ़्तगूए सुलह के लिये हज़रत उमर रज़ि0 का इंतिख़ाब किया लेकिन उन्होंने मअ़ज़िरत की कि क़ुरैश मेरे सख़्त दुशमन हैं और मक्का में मेरे क़बीला का एक शख़्स भी नहीं कि मुझको बचा सके, आप सल्ल0 ने हज़रत उस्मान रज़ि0 को भेजा वह अपने एक अज़ीज़ (अबान बिन सईद) की हिमायत में मक्का गए और आंहज़रत सल्ल0 का पैग़ाम सुनाया, क़ुरैश ने उनको नज़र बंद कर लिया, लेकिन आम तौर पर यह ख़बर मशहूर हो गई कि वह क़त्ल कर डाले गए।[1] यह ख़बर आंहज़रत सल्ल0 को पहुंची तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया "उस्मान के ख़ून का क़िसास लेना फ़र्ज़ है" यह कहकर आप सल्ल0 ने एक बबूल के दरख़्त के नीचे बैठकर सहाबा रज़ि0 से जांनिसारी की बैअ़त ली, तमाम सहाबा रज़ि0 ने जिनमें ज़न व मर्द दोनों शामिल थे वलवला अंगेज़ जोश के साथ दस्ते मुबारक पर जांनिसारी का अहद किया, यह तारीख़े इस्लाम का मोहतम्म बिश्शान वाक़िआ है, इस बैअ़त का नाम "बैअ़तुर्रिज़वान" है, सूरए फ़त्ह में इस वाक़िआ का और दरख़्त का ज़िक्र है।

(1) मुस्नद अहमद 4-324, सीरत इब्ने हिशाम 2-314,315

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْيُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا.

"खुदा मुसलमानों से राज़ी था जबकि वह तेरे हाथ पर दरख़्त के नीचे बैअ़त कर रहे थे, सो खुदा ने जान लिया जो कुछ उन लोगों के दिलों में था तो ख़ुदा ने उन पर तसल्ली नाज़िल की और आजिलाना फ़त्ह दी।"

लेकिन बाद को मअ़लूम हुआ वह ख़बर सही न थी।[1]

मुआहदा व सुलहनामा

कुरैश ने सुहैल बिन अ़म्र को सफ़ीर बना कर भेजा, वह निहायत फ़सीह व बलीग़ मुक़र्रिर थे, चुनांचे उन लोगों ने "ख़तीबे कुरैश" का ख़िताब दिया था।[2] कुरैश ने उनसे कह दिया कि सुलह सिर्फ़ इस शर्त पर हो सकती है कि मुहम्मद (सल्ल0) इस साल वापस चले जाएं।

सुहैल आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और देर तक सुलह के शराइत पर गुफ़्तगू रही, बिलआख़िर चंद शर्तों पर इत्तिफ़ाक़ हुआ और आंहज़रत सल्ल0 ने हज़रत अली को बुलाकर हुक्म दिया कि मुआहदा के अ़लफ़ाज़ क़लमबंद करें, हज़रत अली रज़ि0 ने उन्वान पर "بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم" लिखा, अरब का क़दीम तरीका था कि ख़ुतूत की इब्तिदा में "بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ" लिखते थे।

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-315, 316, इज्मालन बैअ़त का तज़किरा सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में भी मौजूद है। (2) ज़रकानी 2-229

"بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم" से वह नाआशना थे, इस बिना पर सुहैल बिन अम्र ने कहा "بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم" के बजाए वही क़दीम अलफ़ाज़ लिखे जाएं, आंहज़रत सल्ल0 ने मंज़ूर फ़रमाया, आगे का फ़िक़रह था "هذا ما قاضىٰ عليه محمدٌ رسولُ اللّٰه" यअ़नी "यह वह मुआहदा है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 ने तस्लीम किया" सुहलै ने कहा "अगर हम आपको पैग़म्बर ही तस्लीम करते तो फिर झगड़ा क्या था, आप सिर्फ़ अपना और अपने बाप का नाम लिखवाएं" आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि गो तुम तकज़ीब करते हो लेकिन ख़ुदा की क़सम मैं ख़ुदा का पैग़म्बर हूं, यह कहकर आप सल्ल0 ने हज़रत अली रज़ि0 को हुक्म दिया कि अच्छा मेरा नाम लिखो, हज़रत अली रज़ि0 से ज़्यादा कौन फ़रमाँ गुज़ार हो सकता था, लेकिन आलमे मुहब्बत में ऐसे मक़ाम भी पेश आते हैं जहां फ़रमांबरदारी से इंकार करना पड़ता है, हज़रत अली रज़ि0 ने कहा मैं हरगिज़ आपका नाम न मिटाऊंगा, आपने फ़रमाया कि अच्छा मुझको दिखाओ मेरा नाम कहां है? हज़रत अली रज़ि0 ने उस जगह उंगली रख दी, आपने रसूलुल्लाह सल्ल0 का लफ़्ज़ मिटा दिया।

शराइते सुलह यह थेः

1- मुसलमान इस साल वापस चले जाएं।

2- अगले साल आएं और सिर्फ़ तीन दिन क़्याम करके चले जाएं।

3-हथियार लगा कर न आएं, सिर्फ़ तलवार साथ लाएं, वह भी नियाम में और नियाम भी जिलबान (थैला वग़ैरा) में।

4- मक्का में जो मुसलमान पहले से मुक़ीम हैं उनमें से किसी को अपने साथ न ले जाएं और मुसलमानों में से कोई मक्का में रह जाना चाहे तो उसको न रोकें।

5- काफ़िरों या मुसलमानों में से कोई शख़्स अगर मदीना जाए तो वापस कर दिया जाए, लेकिन अगर कोई मुसलमान मक्का में जाए तो वह वापस नहीं किया जाएगा।

6- क़बाइले अरब को इख़्तियार होगा कि फ़रीक़ैन से जिसके साथ चाहें मुआहदा में शरीक हो जाएं।[1]

मुसलमानों की आज़माइश

यह शर्तें बज़ाहिर मुसलमानों के सख़्त ख़िलाफ़ थीं, इत्तिफ़ाक़ यह कि ऐन उस वक़्त जबकि मुआहदा लिखा जा रहा था सुहैल के साहबज़ादे (अबू जुंदल) जो इस्लाम ला चुके थे और मक्का में काफ़िरों ने उनको क़ैद कर रखा था और तरह तरह की अज़ीयतें देते थे, किसी तरह भाग कर पांव में बेड़ियां पहने हुए आए और सबके सामने गिर पड़े, सुहैल ने कहा "मुहम्मद (सल्ल0) सुलह की तअ़मील का यह पहला मौक़ा है, इस (अबू जुंदल) को शराइते सुलह के मुताबिक़ मुझको वापस दे दो" आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया "अभी मुआहदा क़लमबंद नहीं हो चुका।" सुहैल ने कहा

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब सुलह हुदैबिया

"तो हमको सुलह भी मंजूर नहीं।" आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमायाः "कि अच्छा इनको यहीं रहने दो" सुहैल ने नामंजूर किया, आप सल्ल0 ने चंद दफ़ा इस्रार से कहा, लेकिन सुहैल किसी तरह राज़ी न हुआ, मजबूरन आंहज़रत सल्ल0 को तस्लीम करना पड़ा, अबू जुंदल को काफ़िरों ने इस क़दर मारा था कि उनके जिस्म पर निशान थे, मज्मा के सामने तमाम ज़ख़्म दिखाए और कहा बिरादराने इस्लाम! क्या फिर मुझको उसी हालत में देखना चाहते हो? मैं इस्लाम ला चुका हूं, क्या फिर मुझको काफ़िरों के हाथ में देते हो, तमाम मुसलमान तड़प उठे, हज़रत उमर रज़ि0 ज़ब्त न कर सके, आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में आए और कहाः या रसूलुल्लाह! क्या आप पैग़म्बरे बरहक़ नहीं हैं? आप सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया "हां हूं" हज़रत उमर रज़ि0 ने कहाः क्या हम हक़ पर नहीं हैं? आप सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया "हां हम हक़ पर हैं" हज़रत उमर रज़ि0 ने कहाः तो हम दीन में यह ज़िल्लत क्यों गवारा करें? आप सल्ल0 ने फ़रमाया "मैं ख़ुदा का पैग़म्बर हूं और ख़ुदा के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं कर सकता, ख़ुदा मेरी मदद करेगा" हज़रत उमर रज़ि0 ने कहाः क्या आप (सल्ल0) ने यह नहीं फ़रमाया था कि हम लोग कअ़बा का तवाफ़ करेंगे? आप सल्ल0 ने फ़रमाया लेकनि यह तो नहीं कहा था कि इसी साल करेंगे, हज़रत उमर रज़ि0 उठकर हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के पास आए और वही गुफ़्तगू की, हज़रत अबू बक्र

रज़ि0 ने कहा वह पैग़म्बरे ख़ुदा हैं, जो कुछ करते हैं ख़ुदा के हुक्म से करते हैं।(1)

हज़रत उमर रज़ि0 को अपनी इन गुस्ताख़ाना मअ़रूज़ात का जो बेइख़्तियारी में उनसे सरज़द हुई तमाम उम्र सख़्त रंज रहा और उसके कफ़्फ़ारा के लिये उन्होंने नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, ख़ैरात की, गुलाम आज़ाद किये। बुख़ारी शरीफ़ में अगर्चे इन अअ्माल का ज़िक्र इज्मालन है लेकिन इब्ने इस्हाक़ ने तफ़सील से यह बातें गिनाई हैं।(2)

इस हालत का गवारा करना सहाबी की इताअत शिआ़री का सख़्त ख़तरनाक इम्तिहान था, एक तरफ़ इस्लाम की तौहीन है, अबू जुंदल रज़ि0 बेड़ियां पहने चौदह सौ जांनिसाराने इस्लाम से इस्तिग़ासा करते हैं, सबके दिल जोश से लबरेज़ हैं, और अगर रसूलुल्लाह सल्ल0 का ज़रा ईमाअ् हो जाए तो तलवार फ़ैसलए क़ातेअ़ के लिये मौजूद है, दूसरी तरफ़ मुआहदा पर दस्तख़त हो चुके हैं और ईफ़ाए अहद की ज़िम्मादारी है, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने अबू जुंदल की तरफ़ देखा और फ़रमायाः

يَا اَبَا جُنْدَل اِصْبِرْ وَاحْتَسِبْ فَاِنَّ اللّٰهَ جَاعِلٌ لَکَ وَلِمَنْ مَّعَکَ مِنَ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ فَرَجاً وَّمَخْرَجاً، اِنَّا قَدْ عَقَدْنَا صُلْحًا وَاِنَّا لَا نَغْدِرُ بِهِمْ.(3)

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया व किताबुश्शुरूत फ़िल जिहाद, इब्ने हिशाम 2-317

(3) मुस्नद अहमद 4-325, इब्ने हिशाम 2-318

"अबू जुंदल! सब्र और ज़ब्त से काम लो, खुदा तुम्हारे और मज़लूमों के लिये कोई राह निकालेगा, सुलह अब हो चुकी है और हम उन लोगों से बदअह्दी नहीं कर सकते।"

आंहज़रत सल्ल0 ने हुक्म दिया कि लोग यहीं कुर्बानी करें, लेकिन लोग इस क़दर दिल शिकस्ता थे कि एक शख़्स भी न उठा, यहां तक कि जैसा सहीह बुख़ारी में है, तीन दफ़ा बार बार कहने पर भी एक शख़्स आमादा न हुआ[1] आंहज़रत सल्ल0 घर में तशरीफ़ ले गए और उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 से शिकायत की, उन्होंने कहा "आप किसी से कुछ न फ़रमाएं बल्कि बाहर निकल कर खुद कुर्बानी करें और एहराम उतरवाने के लिये बाल मुंडवाएं" आप सल्ल0 ने बाहर आकर खुद कुर्बानी की और बाल मुंडवाए, अब जब लोगों को यक़ीन हो गया कि इस फ़ैसला में तबदीली नहीं हो सकती तो सबने कुर्बानियां कीं और एहराम उतारा।[2]

बसूरत नाकामी बहक़ीक़त कामियाबी

सुलह के बाद तीन दिन तक आप सल्ल0 ने हुदैबिया में क़्याम फ़रमाया, फिर रवाना हुए तो राह में यह सूरत उतरीः

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا

"हमने तुझको खुली हुई फ़त्ह इनायत की।"

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया

(2) सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

Maktabe-Ishraf

तमाम मुसलमान जिस चीज़ को शिकस्त समझते थे खुदा ने उसको फ़त्ह कहा, आंहज़रत सल्ल0 ने हज़रत उमर को बुला कर फ़रमाया यह आयत नाज़िल हुई है, उन्होंने तअ़ज्जुब से पूछाः क्या यह फ़त्ह है? इर्शाद हुआ कि "हां" सहीह मुस्लिम में है कि हज़रत उमर रज़ि0 को तस्कीन हो गई और मुतमइन हो गए[1] नताइजे माबअूद ने इस राज़े सरबस्ता की उक़्दा कुशाई की।

अब तक मुसलमान और काफ़िर बाहम मिलते जुलते न थे, अब सुलह की वजह से आमद व रफ़्त शुरू हुई और तिजारती तअ़ल्लुक़ात की वजह से कुफ़्फ़ार मदीना में आते, महीनों क़्याम करते और मुसलमानों से मिलते जुलते थे, बातों बातों में इस्लामी मसाइल का तज़किरा आता रहता था, इसके साथ हर मुसलमान इख़्लास, हुस्ने अमल, नेकूकारी, पाकीज़ा अख़्लाक़ी की एक ज़िंदा तस्वीर था, जो मुसलमान मक्का जाते थे उनकी सूरतें यही मनाज़िर पेश करती थीं, इससे खुद बखुद कुफ़्फ़ार के दिल इस्लाम की तरफ़ खिंचते आते[2] मुअर्रिख़ीन का बयान है कि इस मुआहदए सुलह से लेकर फ़त्हे मक्का तक इस क़दर कसरत से लोग इस्लाम लाए कि कभी नहीं लाए थे[3] हज़रत ख़ालिद रज़ि0 (फ़ातिहे शाम) और अम्र बिन आस रज़ि0 (फ़ातिहे मिस्र) का इस्लाम भी उसी ज़माना की यादगार है।[4]

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब सुलह हुदैबिया, सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, तफ़सीर सूरतुल फ़त्ह (2) ज़ादुल मआ़द 3-309 (3) दलाइलुन्नुबूव्वा 4-160 (4) सीरतुन्नबी 1-459

मुआहदए सुलह में यह जो शर्त थी कि जो मुसलमान मदीना चला आएगा वह फिर मक्का को वापस कर दिया जाएगा, इसमें सिर्फ़ मर्द दाख़िल थे, औरतें न थीं, औरतों के मुतअ़ल्लिक़ ख़ास यह आयत उतरी।[1]

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا اِذَا جَاءَ كُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ، أَللّٰهُ أَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ، فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤمِنَاتٍ فَلاَ تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ، لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَاهُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ، وَآتُوْهُمْ مَآ أَنْفَقُوْا، وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَا آتَيْتُمُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ، وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ.

"मुसलमानो! जब तुम्हारे पास औरतें हिज्रत करके आएं तो उनको जांच लो, ख़ुदा उनके ईमान को अच्छी तरह जानता है, अब अगर तुमको मअ़लूम हो कि वह मुसलमान हैं तो उनको काफ़िरों के यहां वापस न भेजो, न वह औरतें काफ़िरों के क़ाबिल हैं और न काफ़िर उन औरतों के क़ाबिल हैं और उन औरतों पर उन लोगों ने जो ख़र्च किया हो वह उनको दे दो, और तुम उनसे शादी कर सकते हो बशर्तेकि उनके महर अदा कर दो, और काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रखो।"

(सूरत मुम्तहिना आयत 10)

जो मुसलमान मक्का में मजबूरी से रह गए थे, चूंकि

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

कुफ़्फ़ार उनको सख़्त तकलीफ़ें देते थे इसलिये वह भाग भाग कर मदीना आते थे, सबसे पहले उत्बा बिन उसैद रज़ि0 (अबू बुसैर रज़ि0) भाग कर मदीना आए.....आंहज़रत सल्ल0 ने उत्बा रज़ि0 से फ़रमाया कि वापस जाओ, उत्बा रज़ि0 ने अ़र्ज़ की कि क्या आप मुझको काफ़िरों के पास भेजते हैं कि जो मुझको कुफ़्र पर मजबूर करें? आप सल्ल0 ने फ़रमाया "खुदा इसकी तदबीर निकालेगा" उत्बा रज़ि0 मजबूरन दो काफ़िरों की हिरासत में वापस गए, लेकिन मक़ामे जुल हलैफ़ा पहुंच कर उन्होंने एक शख़्स को क़त्ल कर डाला, दूसरा शख़्स जो बच रहा उसने मदीना आकर आंहज़रत सल्ल0 से शिकायत की, साथ ही अबू बुसैर रज़ि0 पहुंचे और अ़र्ज़ की कि आप ने अहद के मुवाफ़िक़ अपनी तरफ़ से मुझको वापस कर दिया, अब आप पर कोई ज़िम्मादारी नहीं, यह कह कर मदीना से चले गए और मक़ामे ऐस में जो समंदर के किनारे जूमिर्रा के पास है रहना इख़्तियार किया, मक्का के बेकस और सितम रसीदा लोगों को जब इल्म हुआ कि जान बचाने का ठिकाना पैदा हो गया है, तो चोरी छिपे भाग भाग कर यहां आने लगे, चंद रोज़ बाद अच्छी ख़ासी जमईयत हो गई और अब उन लोगों ने इतनी कूव्वत हासिल कर ली कि कुरैश का कारवाने तिजारत जो शाम को जाया करता था उसको रोक लेते थे, उन हमलों में जो माले ग़नीमत मिल जाता था वह उनकी मअ़ाश का सहारा था। कुरैश ने मजबूर होकर आंहज़रत

सल्ल0 को लिख भेजा कि मुआहदा की इस शर्त से हम बाज़ आते हैं, अब जो मुसलमान चाहे मदीना जाकर आबाद हो सकता है हम उससे तअ़र्रुज़ न करेंगे, आप सल्ल0 ने आवारा वतन लोगों को लिख भेजा कि यहां चले आओ, चुनांचे अबू जुंदल रज़ि0 और उनके साथी मदीना में आकर आबाद हो गए और कारवाने कुरैश का रास्ता बदस्तूर खुल गया।[1]

मस्तूरात में से उम्मे कुल्सूम रज़ि0 जो रईसे मक्का (उक़्बा बिन अबी मुईत) की बेटी थीं और मुसलमान हो चुकी थीं, मदीना हिज्रत करके आईं, लेकिन उनके साथ उनके दोनों भाई अम्मरा और वलीद भी आए और आंहज़रत सल्ल0 से दरख़्वास्त की कि इनको वापस दे दीजिये आप सल्ल0 ने मंजूर नहीं फ़रमाया।[2] सहाबा में से जिन लोगों की अज़्वाज मक्का में रह गई थीं और अब तक काफ़िरा थीं सहाबा रज़ि0 ने उनको तलाक़ दे दी।[3]

हुदैबिया की सुलह को खुदा ने फ़त्ह कहा है, लेकिन अज्साम की नहीं कुलूब की, इस्लाम को अपनी इशाअ़त के लिये जो अम्न दरकार था वह इस सुलह से हासिल हो गया था, इस सुलह को खुद दुशमन फ़त्ह समझते थे, कुरैश और मुसलमानों में अब तक जो मअ़रके हुए फ़ौजी हैसियत से

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल हुदैबिया

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाबुश्शुरूत फ़िल जिहाद

कुरैश की सफ़ में हर जगह ख़ालिद बिन वलीद का नाम मुम्ताज़ नज़र आता है, जाहिलीयत में रिसाला की अफ़सरी उन्हीं के सिपुर्द थी, उहुद में कुरैश के उखड़े हुए पांव उन्हीं की कोशिशों से संभले थे, हुदैबिया के मौक़ा पर भी कुरैश का तलाया उन्ही की ज़ेरे अफ़सरी नज़र आया था, लेकिन कुरैश का यह सिपहसालारे अअ्ज़म भी आख़िर इस्लाम के हमलए कारी से बच न सका।(1)

सुलह हुदैबिया के बाद हज़रत ख़ालिद ने मक्का से निकल कर मदीना का रुख़ किया, रास्ता में हज़रत अम्र बिन अलआ़स मिले, पूछा किधर का क़स्द है? बोले इस्लाम लाने जाता हूं, आख़िर कब तक? अम्र बिन अलआ़स ने कहा हमारा भी यही इरादा है, दोनों साहब एक साथ बारगाहे नबवी में हाज़िर होकर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए।(2) और अब वह जौहर जो इस्लाम की मुख़ालफ़त में सर्फ़ हो रहा था, इस्लाम की मुहब्बत में सर्फ़ होने लगा।

फ़त्हे मक्का में हज़रत ख़ालिद जब एक मुसलमान दस्ता के अफ़सर बन कर आंहज़रत सल्ल0 के सामने से गुज़रे, आप सल्ल0 ने पूछा कौन? लोगों ने कहा, ख़ालिद हैं, आपने फ़रमाया खुदा की तलवार है।(3)

ग़ज़वए मौता में जब हज़रत जअ़फ़र, ज़ैद बिन हारसा और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़िअल्लाहु अन्हुम के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ि0 ने अलम अपने हाथ में लिया तो मुसलमान ख़तस से बाहर थे।

(1) सीरतुन्नबी 1-473 (2) अलइसाबा 1-418 (3) सुनन तिर्मिज़ी अबवाबुल मनाकिब

अहदे ख़िलाफ़त में एक (ख़ालिद रज़ि0) ने शाम का मुल्क क़ैसर से छीन लिया और दूसरा (अम्र बिन अलआ़स रज़ि0) मिस्र का फ़ातेह हुआ।[1]

सलातीन व उमराअ़ को दावते इस्लाम

7 हि0 के मुहर्रम की पहली तारीख़ थी कि नबी सल्ल0 ने बादशाहाने आलम के नाम दावते इस्लाम के ख़ुतूत मुबारक अपने सफ़ीरों के हाथ रवाना फ़रमाए, जो सफ़ीर जिस क़ौम के पास भेजा गया वह वहां की ज़बान जानता था ताकि तब्लीग़ बख़ूबी कर सके।[2]

अब तक नबी सल्ल0 ने कोई मुहर न बनाई थी, जब शाहाने आलम के ख़ुतूत लिखे गए तो उन पर मुहर करने के लिये ख़ातिम तैयार की गई, यह चांदी की थी, तीन सुतूर में यह इबारत कंदा थी।[3] (محمد رسول اللّٰه)

उन ख़ुतूत के देखने से मअ़लूम होता है कि ख़ुतूत ईसाई बादशाहों के नाम थे, उनमें ख़ुसूसियत से यह आयते शरीफ़ा भी थी:

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَنْ لَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

"ऐ अहले किताब! आओ ऐसी बात पर इत्तिफ़ाक़ करें जो हमारे तुम्हारे दीन में मुसावी है यअ़नी ख़ुदा

(1) सीरतुन्नबी 1-474 (2) तबक़ात इब्ने सअ़द 2-23 (3) सहीहुल बुख़ारी किताबुल लिबास, बाब ख़ातिमु फ़िल ख़सिर

के सिवा किसी दूसरे की इबादत न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न ठहराएं और खुदा के सिवा खुदाई का दर्जा हम अपने जैसे इंसानों के लिये तज्वीज़ न करें।"

अब हम मुख़्तसर तौर पर उस सिफ़ारतों का हाल दर्ज करते हैं।

नामए मुबारक बनाम नजाशी शाहे हब्शा

असहम बिन अब्जर बादशाहे हबश अल मुलक़्क़ब ब नजाशी के पास अम्र बिन उमय्या अज़्ज़ुम्री आंहज़रत सल्ल0 का नामए मुबारक लेकर गए थे, यह बादशाह ईसाई था।[1]

तारीख़े तबरी से नामा मुबारक का तर्जुमा नक़्ल किया जाता है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"यह ख़त अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल0) की तरफ़ से नजाशी असहम बादशाहे हबश के नाम है, तुझे सलामती हो, मैं पहले अल्लाह की सताइश करता हूं जो मलिक, कुद्दूस, सलाम, मोमिन और मुहैमिन है, और ज़ाहिर करता हूं कि ईसा बिन मरयम अलै0 अल्लाह की मख़्लूक़ और उसका हुक्म हैं, जो मरयम अलै0 बतूल तय्यिबा की जानिब भेजा गया और उन्हें ईसा अलै0 का उससे हमल ठहर गया, खुदा ने ईसा अलै0 को अपनी

(1) ज़ादुल मआद 3-689

रूह और नफ़्ख़ से इस तरह पैदा किया जैसा कि आदम अलै0 को अपने हाथ और नफ़्ख़ से पैदा किया था, अब मेरी दावत यह है कि तू ख़ुदा पर जो अकेला और लाशरीक है, ईमान ले आ, और हमेशा उसकी फ़रमां बर्दारी में रहा कर और मेरा इत्तिबा कर और मेरी तअ़लीम का सच्चे दिल से इक़रार कर, क्योंकि मैं अल्लाह का रसूल हूं।

मैं क़ब्ल इसके उस मुल्क में अपने चचेरे भाई जअ़फ़र को मुसलमानों की एक जमाअत के साथ भेज चुका हूं, तुम उसे बआराम ठहरा लेना, नजाशी! तुम तकब्बुर छोड़ दो क्योंकि मैं तुमको और तुम्हारे दरबार को ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूं, देखो मैंने अल्लाह का हुक्म पहुंचा दिया और तुम्हें बख़ूबी समझा दिया, अब मुनासिब है कि मेरी नसीहत मान लो, सलाम उस पर जो सीधी राह पर चलता है।"[1]

नजाशी इस फ़रमान मुबारक पर मुसलमान हो गया, और जवाब में यह अरीज़ा तहरीर किया:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में नजाशी असहम बिन अब्जर की तरफ़ से, ऐ नबी अल्लाह के, आप पर अल्लाह की सलामती, रहमत, और बरकतें हों, उसी ख़ुदा की जिसके सिवा कोई मअ़बूद

(1) तारीख़े तबरी 2-131, 132, ज़ादुल मआ़द 3-689

नहीं, और जिसने मुझे इस्लाम की हिदायत फ़रमाई है, अब अ़र्ज़ यह है कि हुज़ूर सल्ल0 का फ़रमान मेरे पास पहुंचा, ईसा अलै0 के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ आपने तहरीर फ़रमाया है, बखुदाए ज़मीन व आसमान वह उससे ज़र्रा बराबर भी बढ़ कर नहीं, उनकी हैसियत इतनी ही है जो आपने तहरीर फ़रमाई है, हमने आपकी तअ़लीम सीख ली है और आपका चचेरा भाई और मुसलमान मेरे पास आराम से हैं, और मैं इक़रार करता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं, सच्चे हैं और रास्त बाज़ों की सच्चाई ज़ाहिर करने वाले हैं, मैं आप से बैअ़त करता हूं, मैंने आपके चचेरे भाई के हाथ पर बैअ़त और अल्लाह की फ़रमांबरदारी का इक़रार कर लिया है, और मैं हुज़ूर सल्ल0 की ख़िदमत में अपने फ़रज़ंद अरहा को रवाना करता हूं, मैं तो अपने ही नफ़्स का मालिक हूं अगर हुज़ूर सल्ल0 का मंशा होगा कि मैं हाज़िरे ख़िदमत हो जाऊं तो ज़रूर हाज़िर हो जाऊंगा, क्योंकि मैं यक़ीन करता हूं कि हुज़ूर सल्ल0 जो फ़रमाते हैं वही हक़ है, ऐ ख़ुदा के रसूल सलाम आप पर।"[1]

बनाम शाहे बहरैन

(2) मुंज़िर बिन सावी शाहे बहरैन था, शहंशाहे फ़ारस का ख़िराज गुज़ार था, अलाअ् बिन अलहज़रमी उसके पास

(1) तारीख़े तबरी 2-232, ज़ादुल मआ़द 3-690 नजाशी और क़ैसर व किस्रा को फ़रमाने मुबारक इर्साल करने का ज़िक्र इजमालन सहीह मुस्लिम में मौजूद है, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब कुतुबुन्नबी सल्ल0

नामए मुबारक लेकर गए थे, यह मुसलमान हो गया और इसकी रिआया का अक्सर हिस्सा भी मुसलमान हुआ, उसने जवाब में आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में लिखा था कि बअ़ज़ लोगों ने तो इस्लाम को अज़हद पसंद किया है, बअ़ज़ ने कराहत का इज़हार किया है, बअ़ज़ ने मुख़ालफ़त की है, मेरे इलाक़ा में यहूदी और मजूसी बहुत हैं, उनके लिये जो इर्शाद हो किया जाए, नबी सल्ल0 ने जवाब में तहरीर फ़रमाया थाः

وَمَنْ يَّنْصَحُ فَلِنَفْسِهٖ، وَمَنْ أَقَامَ عَلٰى يَهُوْدِيَّةٍ أَوْ مَجُوْسِيَّةٍ فَعَلَيْهِ الْجِزْيَةَ

"जो नसीहत करता है वह अपने लिये, और जो यहूदीयत या मजूसीयत पर क़ाइम रहे वह जिज़्या (ख़िराज रईयताना) दिया करे।"[1]

बनाम शाहे उम्मान

(3) जैफ़र व अब्द फ़रज़ंदाने जुलंदी मालिक उम्मान के नाम अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 के बदस्त ख़त भेजा गया, अम्र का क़ौल है कि जब मैं उम्मान पहुंचा तो पहले अब्द को मिला, यह सरदार था और अपने भाई की निस्बत ज़्यादा नर्म व ख़ुश ख़ुल्क़ था, मैंने उसे बताया कि मैं रसूलुल्लाह सल्ल0 का सफ़ीर हूं और तुम्हारे पास और तुम्हारे भाई के पास आया हूं।

अब्द बोला मेरा भाई उम्र में मुझसे बड़ा और मुल्क का

(1) ज़ादुल मआ़द 3-693, उयूनुल असर 2-266

मालिक है, मैं तुम्हें उसकी ख़िदमत में पहुंचा दूंगा, मगर यह तो बताओ कि तुम किस चीज़ की दावत देते हो?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 ने कहाः अकेले खुदा की तरफ़ जिसका कोई शरीक नहीं, नीज़ इस शहादत की तरफ़ कि मुहम्मद सल्ल0 खुदा के बंदे और (उसके) रसूल हैं।

अब्द ने कहा अम्र तू सरदारे क़ौम का बेटा है, बता तेरे बाप ने क्या किया, क्योंकि हम उसे नमूना बना सकते हैं?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 ने जवाब दिया वह मर गया, नबी सल्ल0 पर ईमान न लाया था, काश वह ईमान लाता और आंहज़रत सल्ल0 की रास्त बाज़ी का इक़रार करता, मैं भी अपने बाप की राए पर था हत्ताकि खुदा ने मुझे इस्लाम की हिदायत फ़रमाई।

अब्दः तुम कब से मुहम्मद (सल्ल0) के पैरू हो गए हो?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0ः अभी थोड़ा अर्सा हुआ।

अब्दः कहां?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0ः नजाशी के दरबार में, और नजाशी भी मुसलमान हो गया।

अब्दः वहां की रिआया ने नजाशी के साथ क्या सुलूक किया?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0ः उसे बदस्तूर बादशाह रहने दिया और उन्होंने भी इस्लाम क़बूल कर लिया।

अब्दः (तअ़ज्जुब से) क्या बिशप पादरयों ने भी?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0ः हां!

अब्दः देखो अम्र क्या कह रहे हो, इंसान के लिये कोई चीज़ भी झूट से बढ़ कर ज़िल्लत बख़्श नहीं।

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: मैंने झूट नहीं कहा और इस्लाम में झूट बोलना जाइज़ भी नहीं।

अब्दः हिरक़्ल ने क्या किया, क्या उसे नजाशी के इस्लाम लाने का हाल मअ़लूम है?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: हां!

अब्दः तुम क्योंकर ऐसा कह सकते हो?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: नजाशी हिरक़्ल को ख़िराज दिया करता था, जब से मुसलमान हुआ कह दिया है कि अब अगर वह एक दिरहम भी मांगे तो न दूंगा।

हिरक़्ल तक यह बात पहुंच गई, हिरक़्ल के भाई यन्नाक़ ने कहा यह नजाशी हुजूर का अदना गुलाम अब ख़िराज देने से इंकार करता है और हुजूर के दीन को भी उसने छोड़ दिया है, हिरक़्ल ने कहा फिर क्या हुआ उसने अपने लिये एक मज़हब पसंद कर लिया और क़बूल कर लिया, मैं क्या करूं? बुख़ुदा अगर इस शहंशाही का मुझे ख़्याल न होता तो मैं भी वही करता जो नजाशी ने किया है।

अब्दः देखा अम्र! क्या कह रहे हो?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: क़सम है ख़ुदा की सच कह रहा हूं।

अब्दः अच्छा बताओ वह किन चीज़ों के करने का हुक्म देते

हैं और किन चीज़ों से मना करते हैं।

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: वह अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की इताअत का हुक्म देते हैं और मआ़सियते इलाही से रोकते हैं, वह ज़िना, शराब के इस्तेमाल से और पत्थरों, बुतों और सलीब की परस्तिश से मना फ़रमाते हैं।

अब्द: कैसे अच्छे अहकाम हैं जिनकी वह दावत देते हैं, काश मेरा भाई मेरी राए क़बूल करे, हम दोनों मुहम्मद सल्ल0 की ख़िदमत में जाकर ईमान लाएं।

मैं समझता हूं कि अगर मेरे भाई ने इस पैग़ाम को रद किया और दुन्या ही का राग़िब रहा तो वह अपने मुल्क के लिये भी सरापा नुक़्सान साबित होगा।

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: अगर वह इस्लाम क़बूल करेगा तो नबी सल्ल0 उसी को इस मुल्क का बादशाह तस्लीम फ़रमा लेंगे, वह सिर्फ़ इतना करेंगे कि यहां सदक़ा वसूल करके यहां के गुरबा को तक़सीम करा दिया करेंगे।

अब्द: यह तो अच्छी बात है, मगर सदक़ा से क्या मुराद है?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 ने ज़कात के मसाइल बताए, जब यह बताया कि ऊंट में भी ज़कात है, तो अब्द बोला क्या वह हमारे मवाशी में से भी सदक़ा देने को कहेंगे? वह तो खुद ही दरख़्तों के पत्तों से पेट भर लेता और खुद ही पानी पीता है।

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 ने कहा, हां! ऊंटों से सदक़ा लिया जाता है।

अब्द: मैं नहीं जानता कि मेरी क़ौम के लोग जो तआ़दाद में

ज़्यादा हैं और दूर दूर तक बिखरे पड़े हैं वह इस हुक्म को मान लेंगे।

अलग़र्ज़ अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 वहां चंद रोज़ ठहरे, अब्द रोज़ रोज़ की बातें अपने भाई को पहुंचाया करता था, एक रोज़ अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 को बादशाह ने तलब किया, चोबदारों ने दोनों जानिब से बाजू थाम कर उन्हें बादशाह के हुजूर में पेश किया, बादशाह ने फ़रमाया इन्हें छोड़ दो, चोबदारों ने छोड़ दिया, यह बैठने लगे, चोबदारों ने फिर टोका, उन्होंने बादशाह की तरफ़ देखा, बादशाह ने कहा, बोलो तुम्हारा क्या काम है?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 ने ख़त दिया जिस पर मुहर सब्त थी।

जैफ़र ने मुहर तोड़कर ख़त खोला, पढ़ा, फिर भाई को दिया, उसने भी पढ़ा, और अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 ने देखा कि भाई ज़्यादा नर्म दिल है।

बादशाह ने पूछा कि कुरैश का क्या हाल है?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 ने कहाः सबने तौअन व करहन उनकी इताअत इख़्तियार कर ली है।

बादशाह ने पूछा कि उनके साथ रहने वाले कौन लोग हैं?

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0: जिन्होंने इस्लाम को बरज़ा व रग़बत क़बूल किया, सब कुछ छोड़ कर नबी सल्ल0 को इख़्तियार कर लिया है और पूरी फ़िक्र और अक़्ल व तर्जबा से नबी सल्ल0 की जांच कर ली है, बादशाह ने कहा अच्छा

तुम कल फिर मिलना, अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 दूसरे रोज़ बादशाह के भाई से फिर मिले, वह बोला कि अगर हमारी हुकूमत को सदमा न पहुंचे तो बादशाह मुसलमान हो जाएगा।

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 फिर बादशाह से मिले।

बादशाह ने कहा, मैंने इस मुआमला में ग़ौर किया, देखो अगर मैं ऐसे शख़्स की इताअत इख़्तियार करता हूं जिसकी फ़ौज हमारे मुल्क तक नहीं पहुंची तो मैं सारे अरब में कमज़ोर समझा जाऊंगा, हालांकि अगर उनकी फ़ौज इस मुल्क में आए तो मैं ऐसी सख़्त लड़ाई लड़ूंगा कि तुम्हें कभी साबिक़ा न हुआ हो।

अम्र बिन अलआ़स रज़ि0 ने कहा बेहतर मैं कल वापस चला जाऊंगा।

बादशाह ने कहा नहीं! कल तक ठहरो।

दूसरे दिन बादशाह ने उन्हें आदमी भेजकर बुलाया और दोनों भाई मुसलमान हो गए और रिआया का अक्सर हिस्सा भी इस्लाम ले आया।[1]

बनाम हाकिमे दमिश्क़ व हाकिमे यमामा

(4) मुंज़िर बिन हारिस बिन अबू शिमर दमिश्क़ का हाकिम और शाम का गवर्नर था, शुजाअ़ बिन वहबुल असदी उसके पास बतौरे सिफ़ारत भेजे गए, यह ख़त पढ़कर बहुत बिगड़ा, कहा मैं ख़ुद मदीना पर हमला करूंगा बिल-

(1) ज़ादुल मआ़द 3-693 ता 696, नसबुर्राया 4-423,424, उयूनुल असर 2-267 ता 269

आख़िर सफ़ीर को बएज़ाज़ रुख़सत किया, मगर मुसलमान न हुआ।[1]

(5) हौज़ह बिन अली हाकिमे यमामा ईसाइयुल मज़हब था, सुलैत बिन अम्र रज़ि0 नामए मुबारक उसके पास ले गए थे, उसने कहा कि अगर इस्लाम पर मेरी आधी हुकूमत तस्लीम कर ली जाए तो मुसलमान हो जाऊंगा, हौज़ा इस जवाब से थोड़े दिनों बाद हलाक हो गया।[2]

बनाम शाहे इस्कंदरिया

(6) जुरैह बिन मत्ता अलमुलक़्क़ब बिही मुक़ौक़स शाहे इस्कंदरिया व मिस्र ईसाइयुल मज़हब था, हातिब रज़ि0 बिन अबी बलतआ उसके पास सफ़ीर होके गए थे, नबी सल्ल0 ने ख़त के आख़िर में तहरीर फ़रमा दिया था कि अगर तुमने इस्लाम से इंकार किया तो तमाम मिस्रियों (अह्ले क़िब्त) के मुसलमान न होने का गुनाह तुम्हारी गर्दन पर होगा।

सफ़ीर ने ख़त पहुंचाने के अलावा बादशाह को इन अलफ़ाज़ में समझाया था:

"साहब! आप से पहले इस मुल्क में एक शख़्स हो चुका है जो "أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَى" (मैं तुम लोगों का बड़ा ख़ुदा हू) कहा करता था, और ख़ुदा ने उसे दुन्या और आख़िरत की रुस्वाई दी, जब ख़ुदा का ग़ज़ब भड़का तो वह मुल्क वग़ैरा कुछ भी न रहा, इसलिये तुम दूसरों को देखो और इबरत पकड़ो, यह न हो कि दूसरे तुम से इबरत लिया

(1) ज़ादुल मआद 3-697 (2) ज़ादुल मआद 3-696, उयूनुल असर 2-269

करें।"

बादशाह ने कहा हम खुद एक मज़हब रखते हैं, उसे तर्क नहीं करेंगे, जब तक उससे बेहतर दीन कोई न मिले।

हज़रत हातिब रज़ि0 ने कहा, मैं आपको उस दीन की जानिब बुलाता हूं जो जुम्ला मज़ाहिब से किफ़ायत कुनिंदा है।

नबी सल्ल0 ने सब ही को दावते इस्लाम फ़रमाई है, कुरैश ने मुख़ालफ़त की है और यहूद ने अदावत की, लेकिन सब में से मवद्दत व मुहब्बत के साथ क़रीब तर नसारा रहे हैं, बखुदा जिस तरह हज़रत मूसा अलै0 ने हज़रत ईसा अलै0 के लिये बशारत दी, इसी तरह हज़रत ईसा अलै0 ने मुहम्मद सल्ल0 की बशारत दी है, कुर्आन मजीद की दावत हम आपको उसी तरह देते हैं जैसे आप अह्ले तौरात को इंजील की दावत दिया करते हैं।

जिस नबी को जिस क़ौम का ज़माना मिला वही क़ौम उसकी उम्मत समझी जाती है, इसलिये आप पर लाज़िम है कि 'उस नबी की इताअत करें जिसका अहद आपको मिल गया है और यह समझ लें कि हम आपको हज़रत मसीह अलै0 के मज़हब ही की दावत देते हैं।

मुक़ौक़श ने कहा, मैंने इस नबी के बारे में ग़ौर किया, हुनूज़ मुझे कोई रग़बत मअ़लूम नहीं हुई, अगर्चे वह किसी मरगूब शैय से नहीं रोकते हैं, मैं जानता हूं कि वह साहिर ज़रर रसां हैं, न काहिन काज़िब, और उनमें तो नुबूव्वत ही

की अलामत पाई जाती है बहरहाल मैं इस मुआमला में मज़ीद ग़ौर करूंगा।

फिर आंहज़रत सल्ल0 के ख़त को हाथी दांत के डब्बे में रखवा कर मुहर लगवाकर ख़ज़ाना में रखवा दिया, आंहज़रत सल्ल0 के लिये तहाइफ़ भेजे और जवाबे ख़त में यह लिखा कि यह तो मुझे मअ़लूम है कि एक नबी का जुहूर बाक़ी है, मगर मैं यह समझता रहा कि वह रसूल मुल्के शाम में होंगे।

दुलदुल, मशहूर ख़च्चर, इसी ने तोहफ़े में भेजा था।[1]

बनामे हिरक़्ल शाहे कुस्तुन्तुनिया

(7) हिरक़्ल शाहे कुस्तुन्तुनिया या रूमा की मश्रिक़ी शाख़े सलतनत का नामवर शहंशाह ईसाइयुल मज़हब था, हज़रत दिहया बिन ख़लीफ़ा अलकल्बी रज़ि0 उसके पास नामए मुबारक लेकर गए थे, यह बादशाह से बैतुल मक़्दिस के मक़ाम पर मिले, हिरक़्ल ने सफ़ीर के एज़ाज़ में बड़ा शानदार दरबार किया और सफ़ीर से नबी सल्ल0 के मुतअ़ल्लिक़ बहुत ही बातें दरयाफ़्त करता रहा।

इसके बाद हिरक़्ल ने मज़ीद तहक़ीक़ात करना भी ज़रूरी समझा, हुक्म दिया कि अगर मुल्क में कोई शख़्स मक्का का आया हुआ मौजूद हो तो पेश किया जाए।

इत्तिफ़ाक़ से उन दिनों अबू सुफ़यान मअ़ दीगर ताजिराने मक्का शाम आए हुए थे, उन्हें बैतुल मक़्दिस

(1) ज़ादुल मआ़द 3-691, नसबुर्राया 4-421-422, उयूनुल अस्र 2-665, 666

पहुंचाया और दरबार में पेश किया गया, क़ैसर ने हमराही ताजिरों से कहा कि मैं अबू सुफ़यान से सवाल करूंगा अगर यह कोई जवाब ग़लत दें तो मुझे बता देना।

अबू सुफ़यान उन दिनों नबी सल्ल0 के जानी दुशमन थे, उनका अपना बयान है कि अगर मुझको यह डर न होता कि मेरे साथ वाले मेरा झूट ज़ाहिर कर देंगे तो मैं बहुत सी बातें बनाता, मगर उस वक़्त क़ैसर के सामने मुझे सच सच ही कहना पड़ा।

सवाल व जवाब यह हैं:-

क़ैसरः मुहम्मद (सल्ल0) का ख़ानदान और नसब कैसा है?

अबू सुफ़यानः शरीफ़ व अज़ीम।

यह जवाब सुनकर हिरक़्ल ने कहा, "सच है नबी शरीफ़ घराने के होते हैं ताकि उनकी इताअत में किसी को आ़र न हो।"

क़ैसरः मुहम्मद (सल्ल0) से पहले भी किसी ने अरब में नबी होने का दावा किया है?

अबू सुफ़यानः "नहीं।"

यह जवाब सुनकर हिरक़्ल ने कहा "अगर ऐसा होता तो मैं समझ लेता कि अपने से पहले की तक़्लीद और रेस करता है।

क़ैसरः नबी होने से पहले क्या यह शख़्स झूट बोला करता था, इसको झूट बोलने की कभी तोहमत दी गई थी?

अबू सुफ़यानः "नहीं"

हिरक़्ल ने इस जवाब पर कहा "यह नहीं हो सकता कि जिस शख़्स ने लोगों पर झूट न बोला वह खुदा पर झूट बांधे।"

क़ैसरः उसके बाप दादा में से कोई शख़्स बादशाह भी हुआ है?

अबू सुफ़यानः "नहीं।"

हिरक़्ल ने इस जवाब पर कहा "अगर ऐसा होता तो मैं समझ लेता नुबूव्वत के बहाने से बाप दादा की सलतनत हासिल करना चाहता है।

क़ैसरः मुहम्मद (सल्ल0) के मानने वाले मिस्कीन ग़रीब लोग ज़्यादा हैं या सरदार और क़वी लोग?

अबू सुफ़यानः मिस्कीन और हक़ीर लोग।

हिरक़्ल ने जवाब पर कहा हर एक नबी के पहले मानने वाले मिस्कीन ग़रीब लोग ही होते रहे हैं।

क़ैसरः उन लोगों की तअ़दाद रोज़ बरोज़ बढ़ रही है या कम हो रही है?

अबू सुफ़यानः बढ़ रही है।

हिरक़्ल ने कहा, ईमान का यही ख़ास्सा है कि आहिस्ता आहिस्ता बढ़ता और हद्दे कमाल तक पहुंच जाता है।

क़ैसरः कोई शख़्स उनके दीन से बेज़ार होकर फिर भी जाता है?

अबू सुफ़यानः "नहीं।"

हिरक़्ल ने कहा "लज़्ज़ते ईमान की यही तअ्सीर है कि

जब दिल में बैठ जाती है और रूह पर अपना असर क़ाइम कर लेती है तब जुदा नहीं होती।"

क़ैसरः यह शख़्स कभी अह्द व पैमान को तोड़ भी देता है?

अबू सुफ़यानः नहीं, इम्साल हमारा इससे मुआहदा हुआ है देखिये क्या अंजाम हो?

अबू सुफ़यान कहते हैं कि मैं सिर्फ़ इस जवाब में इतना फ़िक़रा ज़्यादा कर सका था, मगर क़ैसर ने उस पर कुछ तवज्जोह न की और यूं कहा, बेशक नबी अहद शिकन नहीं होते, अहद शिक्नी दुन्यादार ही करता है, नबी दुन्या के तालिब नहीं होते।

क़ैसरः कभी उस शख़्स के साथ तुम्हारी लड़ाई भी हुई?

अबू सुफ़यानः "हां।"

क़ैसरः जंग का नतीजा क्या रहा?

अबू सुफ़यानः कभी वह ग़ालिब रहे (बद्र में) और कभी हम (उहुद में)।

हिरक़्ल ने कहा "खुदा के नबियों का यही हाल होता है लेकिन आख़िर खुदा की मदद और फ़त्ह उन ही को हासिल होती है।"

क़ैसरः उनकी तअ़लीम क्या है?

अबू सुफ़यानः एक खुदा की इबादत करो, बाप दादा के तरीक़ (बुत परस्ती) को छोड़ दो, नमाज़, रोज़ा, सच्चाई, पाकदामनी, सिला रहम की पाबंदी इख़्तियार करो।

हिरक़्ल ने कहा "कि नबीये मौऊद की यही अलामतें

हमको बताई गई हैं, मैं समझता था कि नबी का जुहूर होने वाला है, लेकिन यह न समझता था कि वह अरब में से होगा'' अबू सुफ़यान! अगर तुमने सच सच जवाब दिये हैं तो वह एक रोज़ इस जगह का जहां मैं बैठा हुआ हूं (शाम व बैतुल मक़्दिस) का ज़रूर मालिक हो जाएगा, काश मैं उनकी ख़िदमत में पहुंच सकता और नबी (सल्ल0) के पांव धोया करता।

इसके बाद आंहज़रत सल्ल0 का नामए मुबारक पढ़ा गया, अराकीने दरबार उसे सुन कर बहुत चीख़े और चिल्लाए और हमको दरबार से बाहर निकाल दिया गया, अबू सुफ़यान कहते हैं कि मेरे दिल में उसी रोज़ से अपनी ज़िल्लते नफ़्स और आंहज़रत सल्ल0 की आइंदा अज़मत का यक़ीन हो गया।[1]

बनाम किस्रा शाहे ईरान

(8) ख़ुस्रू व परवेज़ किस्रा ईरान (निस्फ़ मश्रिकी दुन्या) का शहंशाह था, ज़रतुश्ती मज़हब रखता था, अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा उसके पास नामए मुबारक ले गए थे, नामए मुबारक की नक़्ल यह है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

مِنْ مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰهِ اِلٰى كِسْرٰى عَظِيْمِ فَارَسَ، سَلَامٌ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى وَآمَنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَشَهِدَ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ،

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब बद्उल वह्य, बाब हद्सना अबुल यमान हकीम बिन नाफ़ेअ, सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब किताबुन्नबी सल्ल0 इला हिरक़्ल।

وَأَدْعُوْكَ بِدِعَايَةِ اللّٰهِ فَإِنِّیْ أَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ إِلَى النَّاسِ كَافَّةً لِيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِيْنَ، أَسْلِمْ تَسْلَمْ، فَإِنْ أَبَيْتَ فَعَلَيْكَ إِثْمُ الْمَجُوْسِ.

अल्लाह रहमाने रहीम के नाम से:-

"मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़ से किस्रा बुज़ुर्ग फ़ारस के नाम, सलाम उस पर जो सीधे रास्ता पर चलता और खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाता और यह शहादत अदा करता है कि खुदा के सिवा कोई इबादरत के लाइक़ नहीं और मुहम्मद सल्ल0 उसका बंदा और रसूल है, मैं तुझे खुदा के पैग़ाम की दावत देता हूं और मैं खुदा का रसूल हूं, मुझे जुम्ला नस्ले आदम की तरफ़ भेजा गया है ताकि जो कोई ज़िंदा है उसे अज़ाबे इलाही का डर सुनाया जाए और जो मुन्किर हैं उन पर खुदा का क़ौल पूरा हो, तू मुसलमान हो जा सलामत रहेगा, वर्ना मजूस का गुनाह तेरे ज़िम्मा होगा।"

खुस्रू ने देखते ही ख़त गुस्से से चाक कर डाला और ज़बान से कहा मेरी रिआया का अदना शख़्स मुझको ख़त लिखता है और अपना नाम मेरे नाम से पहले तहरीर करता है?

उसने खुस्रू बाज़ान को जो यमन में उसका वाइस्राए (नाइबे सलतनत) था और अरब का तमाम मुल्क उसी के ज़ेरे इक़्तिदार या ज़ेरे असर समझा जाता था, यह हुक्म भेजा

कि उस शख़्स (नबी सल्ल0) को (मआ़ज़ल्लाह) गिरफ़्तार करके मेरे पास रवाना कर दो।

बाज़ान ने एक फ़ौजी दस्ता मामूर किया फ़ौजी अफ़सर का नाम खुर्रखुस्रा था, एक मुल्की अफ़सर भी रवाना किया जिसका नाम बाबवैह था, बाबवैह को यह हिदायत की थी कि आंहज़रत सल्ल0 के हालात पर गहरी नज़र डाले और आंहज़रत सल्ल0 को किस्रा के पास पहुंचा दे, लेकिन अगर आप साथ जाने से इंकार करें वापस आकर रिपोर्ट करे।'

जब यह अफ़सर मदीना में नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि वह कल को फिर हाज़िर हों, दूसरे रोज़ नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "आज रात तुम्हारे बादशाह को खुदा ने हलाक कर डाला, जाओ और तहक़ीक़ करो, अफ़सर यह ख़बर सुनकर यमन को लौट गए, वहां वाइस्राए के पास सरकारी इत्तिला आ चुकी थी खुस्रू को उसके बेटे ने क़त्ल कर दिया है और तख़्त का मालिक "शेरवैह" है जो बाप का क़ातिल था।

अब बाज़ान ने नबी सल्ल0 के आदात व अख़्लाक़ और तअ़लीम व हिदायत के मुतअ़ल्लिक़ कामिल तहक़ीक़ात कीं और तहक़ीक़ात के बाद मुसलमान हो गया, दरबार और मुल्क का अक्सर हिस्सा मुसलमान हो गया।[1]

जो सफ़ीर नबी सल्ल0 ने भेजा था उसने वापस आकर

(1) तारीख़े तबरी 2-133

अ़र्ज़ किया कि शाहे ईरान ने नामए मुबारक चाक कर डाला, उस वक़्त नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "مَزَّقَ مُلْكَهُ" (उसने अपनी क़ौम के फ़रमाने सलतनत को चाक कर दिया है।)[1]

नाज़िरीन! इस मुख़्तसर और पुरहैबत जुम्ला को देखें और सवा चौदह सौ बरस की तारीख़े आलम में तलाश करें कि किसी जगह उस क़ौम की सलतनत का निशान मिलता है जो इस वाक़िआ से पेशतर चार पांच हज़ार बरस से निस्फ़ दुन्या पर शहंशाही करती थी और जिसकी फ़ुतूहात बारहा यूनान व रूमा को नीचा दिखा चुकी थीं, हरगिज़ नहीं।

ग़ज़वए ख़ैबर

ख़ैबर मदीना से शाम की जानिब तीन मंज़िल पर एक मक़ाम का नाम है, यह यहूदियों की ख़ालिस आबादी का क़स्बा था, आबादी के गिर्दा गिर्द मुस्तहकम क़िले बने हुए थे।[2]

नबी सल्ल0 को सफ़रे हुदैबिया से पहुंचे हुए अभी थोड़े ही दिन (एक माह से कम) हुए थे कि सुनने में आया कि ख़ैबर के यहूदी फिर मदीना पर हमला करने वाले हैं, उन्होंने क़बीला बनू ग़तफ़ान के चार हज़ार जंगजू बहादुरों को भी अपने साथ मिला लिया था और मुआहदा यह था कि अगर

(1) सहीहुल बुख़ारी में नामए मुबारक के चाक करने और आप सल्ल0 की बद्दुआ का ज़िक्र है, किताबुल मग़ाज़ी, बाब किताबुन्नबी सल्ल0 इला किस्रा व क़ैसर।

(2) सीरते हलबीया 2-726

मदीना फ़त्ह हो गया तो पैदावार का निस्फ़ हिस्सा हमेशा बनू ग़तफ़ान को देते रहेंगे।(1)

नबी सल्ल0 ने इस ग़ज़वा में सिर्फ़ उन्हीं सहाबा को हमरिकाब चलने की इजाज़त दी थी जो "لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ" की बशारत से मुम्ताज़ थे और जिनको "وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَأْخُذُوْنَهَا" का मुज़दह मिल चुका था, उनकी तअ़दाद सोलह सौ थी जिनमें दो सौ सवार थे।(2)

लशकरे इस्लमा आबादिये ख़ैबर के मुत्तसिल रात के वक़्त पहुंच गया था, नबी सल्ल0 की आदते मुबारक यह थी कि रात को लड़ाई शुरू न करते और न कभी शबखून डाला करते, इसलिये लशकरे इस्लाम ने मैदान में डेरे डाल दिये।(3) यह मैदान अह्ले ख़ैबर और बनू ग़तफ़ान के दर्मियान पड़ता था, इस तदबीर का फ़ाएदा यह हुआ कि जब बनू ग़तफ़ान यहूदियाने ख़ैबर की मदद के लिये निकले तो उन्होंने लशकरे इस्लाम को सद्दे राह पाया और इसलिये चुपचाप अपने घरों को वापस चले गए।(4)

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने सबसे पहले ख़ैबर के क़िलों की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई, और एक एक करके उन क़िलों को फ़त्ह करना शुरू किया, उन क़िलों में एक ऐसा क़िला था

(1) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-478, मन्क़ूल अज़ तारीखुल ख़मीस
(2) सीरते हलबीया 2-726
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए ख़ैबर
(4) इब्ने हिशाम 2-230

जो नामवर यहूदी शहसवार मरहब का तख़्त गाह था, उसको हज़रत अली रज़ि0 ने सर किया, उसका वाक़िआ यह है कि यह क़िला मुसलमानों के लिये बहुत सख़्त दुशवार गुज़ार साबित हो रहा था और उनका क़ाबू उस पर नहीं चल रहा था, हज़रत अली रज़ि0 की आंखें उस वक़्त आशोब कर आई थीं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया: "لَأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ غَداً رَجُلاً يُحِبُّهُ اللّٰهُ وَرَسُولُهُ يَفْتَحُ اللّٰهُ عَلٰى يَدَيه" (कल फ़ौज का अलम उस शख़्स को दिया जाएगा जिससे खुदा तआला और रसूलुल्लाह मुहब्बत करते हैं और खुदा तआला फ़त्ह इनायत फ़रमाएगा।) यह ऐसी तअ़रीफ़ थी कि जिसे सुनकर फ़ौज के बड़े बड़े बहादुर अगले दिन की कमान मिलने के आरज़ूमंद हो गये थे, सुब्ह हुई तो नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत अली रज़ि0 को याद फ़रमाया, लोगों ने अ़र्ज़ किया कि उन्हें आशोबे चश्म है और आंखों में दर्द भी होता रहा है, हज़रत अली रज़ि0 आ गए तो नबी सल्ल0 ने लुआब मुबारक जनाब मुर्तज़ा रज़ि0 की आंखों को लगा दिया, उसी वक़्त आंखें खुल गईं, न आशोब की सुर्ख़ी बाक़ी थी और न दर्द की तकलीफ़, फिर फ़रमाया अली जाओ, राहे खुदा में जिहाद करो, पहले इस्लाम की दावत दो बाद में जंग, अली! अगर तुम्हारे हाथ पर एक शख़्स भी मुसलमान हो जाए तो यह काम भारी ग़नीमतों के हासिल हो जाने से बेहतर होगा।[1]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए ख़ैबर, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब ग़ज़वए ख़ैबर

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि0 ने क़िला नाइम पर जंग की नज़र डाली, मुक़ाबले के लिये क़िला का मशहूर सरदार मरहब जब मैदान में निकला, यह अपने आप को हज़ार बहादुरों के बराबर कहा करता था, उसने आते ही यह रिज्ज़ पढ़ना शुरू कर दिया

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ أَنِّي مَرْحَبُ
شَاكِي السِّلَاحِ بَطَلٌ مُجَرَّبُ
إِذَا الْقُلُوبُ أَقْبَلَتْ تَلَهَّبُ

"ख़ैबर जानता है कि मैं हथियार सजाने वाला, बहादुर, तजर्बाकार मरहब हूं, जब लोगों के होश मारे जाते हैं तो मैं बहादुरी दिखाया करता हूं।"

इसके मुक़ाबला के लिये हज़रत आमिर बिन अल अक्वअ् रज़ि0 निकले, वह भी अपना रिज्ज़ पढ़ते जाते थे,

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ أَنِّي غَامِرُ
شَاكِي السِّلَاحِ بَطَلٌ مُغَافِرُ

"ख़ैबर जानता है कि मैं हथियार चलाने में उस्ताद, नबुर्द आज़मा, तल्ख़ हूं मेरा नाम आमिर है।"

मरहब ने उन पर तलवार से वार किया, हज़रत आमिर रज़ि0 ने उसे ढाल पर रोका और मरहब के हिस्सए ज़ेरीं पर वार चलाया, मगर उनकी तलवार जो लम्बाई में छोटी थी, उन ही के घुटने पर लगी, जिसके सदमा से बिलआख़िर शहीद हो गए, फिर हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि0 निकले, रिज्ज़े हैदरी से मैदान गूंज उठा, आप फ़रमाते थे-

أَنَــا الَّــذِیْ سَــمَّتْنِــیْ اُمِّــیْ حَیْــدَرَهْ
كَــلَیْــثِ غَــابَــاتٍ كَــرِیْــهِ الْــمَــنْــظَرَهْ
اُوْفِیْهِــمْ بِــالــصَّــاعِ كَیْــلَ السَّــنْــدَرَه

"मैं हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम शेरे ग़ज़बनाक रखा है, मैं जंगलों के शेर की तरह हूं और बहुत ही हैबतनाक हूं, मैं अपने पैमाने की सख़ावत से बड़े बड़े पैमाने अता करूंगा।"

हज़रत अली रज़ि0 ने एक ही हाथ तलवार का ऐसा लगाया कि उसका काम तमाम हो गया, और फ़त्ह हो गई।[1]

ख़ैबर का वाक़िआ है कि एक सियाह फ़ाम हब्शी गुलाम जो अपने यहूदी आक़ा की बकरियां चराता था, यह देखकर कि यहूदी लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं, उनसे पूछा कि आप लोगों का क्या इरादा है? उन्होंने कहा कि हम उस शख़्स से लड़ने जा रहे हैं जो नुबूव्वत का दावा करता है, उसके दिल में नबी सल्ल0 का शौक़ पैदा हुआ वह अपना गल्ला लेकर आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप सल्ल0 से पूछा कि आप क्या फ़रमाते हैं और किस बात की दावत देते हैं? आप सल्ल0 ने फ़रमाया "मैं इस्लाम की दावत देता हूं और यह कि तुम इसकी गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और यह कि मैं अल्लाह का पैग़म्बर हूं और अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब ग़ज़वा कर्द, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे अली रज़ि0

न करो'' गुलाम ने कहा कि अगर मैंने यह गवाही दी और अल्लाह पर ईमान ले आया तो मुझे क्या मिलेगा? फ़रमाया: ''अगर तुम इसी पर मरे तो जन्नत है।'' गुलाम ने इस्लाम क़बूल किया और अ़र्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्ल0 यह गल्ला मेरे पास अमानत है, मैं क्या करूं? आप सल्ल0 ने फ़रमाया ''उनको हंका दो और कंकरी मारो अल्लाह तुम्हारी अमानत अदा करा देगा'' उसने ऐसा ही किया और बकरियां अपने मालिक के पास पहुंच गईं, मालिक समझ गया कि गुलाम मुसलमान हो गया, इतने में आंहज़रत सल्ल0 ने वअ़ज़ फ़रमाया और सहाबा को जिहाद पर उभारा, जब मुसलमानों और कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला हुआ तो शहीदों में यह गुलाम भी था, लोग उसकी लाश उठाकर ख़ेमा में ले गए, आंहज़रत सल्ल0 ने उसको देखकर फ़रमाया ''अल्लाह ने इस गुलाम पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाया और इसको बड़ी तौफ़ीक़ दी'' मैंने इसके सरहाने दो हूरें देखीं हालांकि इसको एक मर्तबा भी सज्दा करने की नौबत नहीं आई।[1]

इसी तरह का एक दूसरा वाक़िआ है कि आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में एक शख़्स आया और उसने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0 में सियाह फ़ाम, कम रू आदमी हूं, बू भी ख़राब है, माल भी मेरे पास नहीं है, अगर मैं यहूदियों से लड़ूं और मारा जाऊं तो क्या जन्नत में जाऊंगा? फ़रमाया ''हां'' यह सुन कर वह आगे बढ़ा, जंग की, और मारा गया, आंहज़रत सल्ल0 उसके पास आए, आपने फ़रमाया ''अल्लाह

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा 4-219, ज़ादुल मआ़द 3-323

ने तुम्हारा चेहरा हसीन कर दिया, तुम्हें खुशबूदार बना दिया और तुम्हें बहुत सा माल दिया, फिर फ़रमाया "मैंने देखा कि हूरों में से उसकी दो बीवियां हैं।"(1)

ख़ैबर की लड़ाई से पहले एक अअ्राबी आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, ईमान लाया और आप के साथ हो गया, आपने उसको एक सहाबी के सिपुर्द कर दिया कि वह उसकी तअ़लीम व तरबियत करें, जब ख़ैबर की जंग हुई और कुछ माल ग़नीमत हाथ आया तो आपने उस अअ्राबी का भी हिस्सा लगाया, अअ्राबी अपने साथियों के ऊंट चराने गया था, जब पलट कर आया तो लोगों ने उसका हिस्सा दिया, वह अपना हिस्सा लिये हुए आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि या रसूलुल्लाह सल्ल0 यह क्या है? फ़रमाया कि "यह तुम्हारा हिस्सा है।" उसने कहा मैं इसलिये थोड़ी आपके साथ हुआ था, मैं तो इसलिये साथ हुआ था कि (हलक़ की तरफ़ इशारा करते हुए कहा) यहां मेरे तीर लगे और मैं मर कर जन्नत में चला जाऊं, फ़रमाया "अगर तुम इस इरादा में सच्चे हो तो अल्लाह भी यही करके दिखाएगा।" ख़ैबर की लड़ाई में अअ्राबी शहीद हुआ तो उसकी लाश लोग हुज़ूर सल्ल0 के पास लाए आपने देख कर फ़रमाया "यह वही है?" लोगों ने कहा हां या रसूलुल्लाह! फ़रमाया "इसका मुआमला अल्लाह से सच्चा था, अल्लाह ने वही कर दिया" आंहज़रत सल्ल0 ने उसको उसी के जुब्बा में रखकर

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा 4-221, ज़ादुल मआ़द 3-324

कफ़नाया फिर उसको मुक़द्दम रखकर नमाज़ पढ़ाई, दुआ में यह भी फ़रमाया "कि ऐ अल्लाह यह तेरा बंदा तेरे रास्ता में हिज्रत करके निकला था और शहीद मारा गया है मैं इसका गवाह हूं।[1]

फ़त्ह के बाद ज़मीने मफ़तूह पर क़ब्ज़ा कर लिया गया लेकिन यहूद ने दरख़्वास्त की कि ज़मीन हमारे क़ब्ज़ा में रहने दी जाए, हम पैदावार का निस्फ़ हिस्सा अदा किया करेंगे, यह दरख़्वास्त मंजूर हुई।[2]

बटाई का वक़्त आता था तो आंहज़रत सल्ल0 अब्दुल्लाह बिन रवाहा को भेजते थे वह ग़ल्ला को दो हिस्सों में तक़सीम करके यहूद से कहते थे कि इसमें से जो हिस्सा चाहो ले लो, यहूद इस अद्ल पर मुतहैयर होकर कहते कि ज़मीन और आसमान ऐसे ही अद्ल से क़ाइम हैं।[3] ख़ैबर की ज़मीन तमाम मुजाहिदीन पर जो इस जंग में शरीक थे तक़सीम कर दी गई।[4]

ख़ैबर ही के मौक़ा पर हज़रत जअ्फ़र बिन अबी तालिब रज़ि0 अपने साथियों के साथ हब्शा से पहुंचे, उनके साथ यमन के अश्अ़री भी थे, यह कुछ ऊपर पचास आदमी थे, एक कशती पर सवार थे, कशती ने उनको हब्शा के साहिल पर पहुंचा दिया, वहां हज़रत जअ्फ़र बिन अबी

(1) सुनन नसाई 4-60, मुस्तदरक हाकिम 3-495, दलाइलुन्नुबूव्वा 4-221
(2) सुनन अबी दाऊद, किताबुल ख़िराज वलइमारा, बाब मा जाऊ फ़ी हुक्मे अर्ज़े ख़ैबर
(3) फ़तुल बुल्दान बलाज़री स0 34
(4) अबू दाऊद, किताबुल ख़िराज वल इमारा, बाब मा जाऊ फ़ी हुक्मे अ़र्ज़े ख़ैबर

तालिब और उनके साथियों से मुलाक़ात हुई, हज़रत जअ्फ़र रज़ि0 ने कहा हमको यहां रसूलुल्लाह सल्ल0 ने भेजा है और ठहरने का हुक्म दिया है, तुम लोग भी हमारे साथ ठहरो, यह लोग ठहर गए और हब्शा से साथ ही रवाना हो गए, जब यह हुज़ूर सल्ल0 की ख़िदरमत में पहुंचे और आप सल्ल0 ने हज़रत जअ्फ़र की आवाज़ सुनी तो बड़ी मुसर्रत से उनसे बढ़कर मिले और पेशानी पर बोसा दिया और फ़रमाया "ख़ुदा की क़सम मैं नहीं कह सकता कि मुझे ख़ैबर की फ़त्ह की ज़्यादा ख़ुशी है या जअ्फ़र के आने की" आप सल्ल0 ने ख़ैबर के माले ग़नीमत में आने वालों का भी हिस्सा लगाया।[1]

ख़ैबर ही के मौक़ा पर एक यहूदी औरत ने आंहज़रत सल्ल0 को ज़हर दिया, सल्लाम बिन मशकम यहूदी की बीवी ज़ैनब ने लोगों से पूछा कि हुज़ूर सल्ल0 को कौनसा गोश्त ज़्यादा मरग़ूब है, लोगों ने कहा दस्त का, उसने आपकी ख़िदमत में एक भुनी हुई बकरी पेश की और दस्त में खूब ज़हर मिला दिया, जब आपने उसमें से गोश्त नोचा, तो अल्लाह ने उस दस्त ही के ज़रीआ आपको मुत्तलअ् कर दिया कि इसमें ज़हर मिला हुआ है, आपने यहूदियों से दरयाफ़्त फ़रमाया क्या तुमने इस बकरी में ज़हर मिलाया है? उन्होंने इक़्बाल किया, फ़रमाया क्यों? उन्होंने कहा हमने सोचा कि अगर आप (मआज़ल्लाह) झूटे हैं तो हमको छुट्टी मिल जाएगी और अगर पैग़म्बर हैं तो आपको कोई

(1) सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए ख़ैबर, सहीह मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल

नुक़्सान नहीं होगा, औरत को भी ख़िदमत में हाज़िर किया गया और उसने एतिराफ़ किया कि मेरा इरादा मार डालने ही का था, फ़रमाया "अल्लाह तआला तुझे इसका मौक़ा नहीं दे सकता था" सहाबा रज़ि0 ने अ़र्ज़ किया हम इसे क़त्ल कर दें, आपने फ़रमाया "नहीं"।[1]

सुलह हुदैबिया में क़ुरैश से मुआहदा हुआ था कि अगले साल आंहज़रत सल्ल0 मक्का में आकर उम्रा अदा करेंगे और तीन दिन क़्याम करके वापस चले जाएंगे,[2] इस बिना पर आंहज़रत सल्ल0 ने इस साल उम्रा अदा करना चाहा और एलान करा दिया कि जो लोग वाक़िअए हुदैबिया में शरीक थे उनमें से कोई न रह जाए, चुनांचे बजुज़ उन लोगों के जो इस अस्ना में मर चुके थे सबने यह सआ़दत हासिल की।[3]

मुआहदा में शर्त थी कि मुसलमान मक्का में आएं तो हाथियार साथ न लाएं, इसलिये अस्लहा जंगे बतन या जुज में जो मक्का से आठ मील उधर है छोड़ दिये गए, और दो सौ सवारों का एक दस्ता अस्लहा की हिफ़ाज़त के लिये मुतअ़य्यन कर दिया गया,[4] रसूलुल्लाह सल्ल0 लब्बैक कहते हुए हरम की तरफ़ बढ़े, अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि0 ऊंट की महार थामे हुए आगे आगे यह रिज्ज़ पढ़ते जाते थे।

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाबुश्शातुल्लती सुम्मत लिन्नबीये बिख़ैबर।
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उमरतुल क़ज़ा
(3) सीरत इब्ने कसीर 3-429
(4) ज़ादुल मआ़द 3-370

خَلُّوْا بَنِیْ الْکُفَّارِ عَنْ سَبِیْلِہٖ
اَلْیَوْمَ نَضْرِبُکُمْ عَلٰی تَنْزِیْلِہٖ
ضَرْبًا یُزِیْلُ الْھَامَ عَنْ مَقِیْلِہٖ
وَیُذْھِلُ الْخَلِیْلَ عَنْ خَلِیْلِہٖ[1]

"काफ़िरो! सामने से हट जाओ, आज जो तुमने उतरने से रोका है तो हम तलवार का वार करेंगे, वह वार जो सर को ख़्वाबगाह से अलग कर दे और सारी दोस्ती हवा कर दे"

सहाबा का जम्मे ग़फ़ीर साथ था और बरसों की देरीना तमन्ना, वह बड़े जोश के साथ मनासिके हज्ज अदा कर रहे थे, अह्ले मक्का का ख़्याल था कि मुसलमानों को मदीना की आब व हवा ने कमज़ोर कर दिया है, इस बिना पर आपने हुक्म दिया कि लोग तवाफ़ में तीन पहले फेरे में अकड़ते हुए चलें[2] अरबी ज़बान में इसको "रमल" कहते हैं, चुनांचे आज तक यह सुन्नत बाक़ी है।

अह्ले मक्का ने अगर्चे चार व नाचार मुसलमानों को उम्रा की इजाज़त दी थी, ताहम उनकी आंखें इस मंज़र के देखने की ताब नहीं ला सकती थीं, रुअसाए क़ुरैश ने उमूमन शहर ख़ाली कर दिया और पहाड़ों पर चले गए, तीन दिन के बाद हज़रत अली रज़ि० के पास आए और कहा मुहम्मद (सल्ल०) से कह दो कि शर्त पूरी हो चुकी अब मक्का से

(1) सुनन तिर्मिज़ी, अबवाबुल अम्साल, बाब माजाअ फी इंशाअश्शेअ़र, सुनन नसाई, किताब मनासिकुल हज्ज, बाब इंशाउश्शेअ़र फिल हज्जि

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा

निकल जाएं, हज़रत अली रज़ि0 ने आंहज़रत सल्ल0 से अ़र्ज की, आप उसी वक़्त रवाना हो गए,[1] चलते वक़्त हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 की सग़ीरुस्सिन साहबज़ादी उमामा जो मक्का में रह गई थीं, आंहज़रत सल्ल0 के पास "चचा चचा" कहती दौड़ती आई, हज़रत अली रज़ि0 ने हाथों में उठा लिया, लेकिन हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 (हज़रत अली रज़ि0 के भाई) और ज़ैद बिन हारसा ने अपने दावे पेश किये, हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 कहते कि यह मेरे चचा की लड़की है, ज़ैद कहते थे कि हम्ज़ा रज़ि0 मेरे मज़हबी भाई थे इस रिश्ता से यह मेरी भतीजी है, हज़रत अली रज़ि0 को दावा था कि मेरी हमशीरा भी है और पहले मेरी ही ग़ोद में आई है, आंहज़रत सल्ल0 ने सबके दअ़वों को बराबर देख कर उनको अस्मा की गोद में दे दिया, वह उमामा की ख़ाला थीं, फिर फ़रमाया "कि ख़ाला मां के बराबर होती है।"[2]

ग़ज़वए मौता

सलातीन और रुअसा को दावते इस्लाम के जो खुतूत भेजे गए थे उनमें एक ख़त शुरहबील बिन अ़म्र के नाम था जो बसरा (हूरान) का बादशाह और क़ैसर का मातहत था, यह अरबी ख़ानदान एक मुद्दत से ईसाई था और शाम के सरहदी मक़ामात में हुक्मरां था, यह ख़त हारिस बिन उमैर रज़ि0 लेकर गए थे, शुरहबील ने उनको क़त्ल कर दिया, इसके क़िसास के लिये आंहज़रत सल्ल0 ने तीन हज़ार फ़ौज

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा